मार्च - 2016
वर्ष - 14 अंक - 2

सुगन्ध

सृष्टि के निर्माण का
यत्न ना हो कम
चर-अचर सबके लिए
सुरक्षा है प्रथम

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका

संपादकीय

सृजित हो नया वितान

दुनिया का वर्तमान बहुत संघर्षों और त्याग के पश्चात बना है। समाज को सत्ता और वर्चस्व की बहुलता से खींचकर निकालने और सार्वभौमिक अवधारणाओं के अनुरूप इसके इस स्वरूप को तैयार करने में बहुत त्याग और बलिदान देना पड़ा है। आज हम जिस युग में जी रहे हैं, वह युग एक ऐसा मध्य युग है, जो बीत चुके पूरे इतिहास और आने वाले भविष्य के बीच एक बहुत बड़ी विभाजक रेखा खींचने जा रहा है। अब तक हम जंगलीपन से बाहर आने की लड़ाई लड़ रहे थे। लेकिन लोकतांत्रिक अथवा जनवादी संकल्पनाओं या यूँ कहें कि मानवतावादी भावनाओं ने सामंतवाद और साम्राज्यवाद की अवधारणाओं अथवा शक्तियों को परास्त कर चिंतन व वैज्ञानिकता आधारित युग की ओर अग्रसर हो लिया है।

अब पत्थर, तीर, तलवार और बंदूक के युग को हम पीछे छोड़ते हुए परमाणु और हाइड्रोजन बम के युग में प्रवेश कर चुके हैं। अब दुश्मन को रक्तपात से नहीं, बल्कि भयाक्रांत करके हराया जाता है। संक्षेप में कहें तो यह सारी मानवता के लिए मनुष्य होने के संघर्ष का युग है। समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों व वर्गों के सारे संघर्ष, समता और न्याय की सभी लड़ाइयाँ, इस संघर्ष की अहम हिस्सा हैं।

इस अस्तित्व की लड़ाई में हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक विरासतें भी अपने स्तर पर संघर्ष करती हैं। जिन सामाजिक विरासतों और सांस्कृतियों में बहुत दम नहीं होता, वे अक्सर टूटकर विलुप्त हो जाती हैं या फिर किसी महान विरासत या संस्कृति का हिस्सा बन जाती हैं। लेकिन महान संस्कृतियाँ न केवल विकसित होती रहती हैं, बल्कि अन्य संस्कृतियों को अपनाते हुए आगे भी बढ़ती हैं। भारतीय संस्कृति की गिनती भी दुनिया की महान संस्कृतियों में होती है। आज भारत की जो संस्कृति स्थापित हुई है, वह संयम और मानवीयता के आधार पर स्थापित हुई है। इसमें प्राचीन की जगह अर्वाचीन को स्वीकारने की क्षमता है। इसीलिए इसे महानता का द्योतक माना गया है। लेकिन साथ-साथ यह भी बताना जरूरी है कि हमारे संघर्षों को भटकाने वाली शक्तियाँ भी सक्रिय रहती हैं तथा हमारे संघर्षों की दिशा को निरंतर सीमित और अलग दिशा में मोड़ने का प्रयास करती हैं। फिर भी यह बात स्वीकार करने योग्य है कि जीवन सत्य की लौ को हमेशा ऊँचा कर देता है।

जैसाकि हम जानते हैं प्रेम, सौंदर्य, समता, मानवता और इनके लिए संघर्ष लगभग एक ही ढर्रे के शब्द हैं और समाज के व्यापक निर्माण की निरंतर आधारशिला रखते रहते हैं। यही कारण है कि नस्लवाद, रंगभेद, लिंगभेद, असमानता आदि जैसे चिंतनों को दुनिया ने हतोत्साहित करके वसुधैव कुटुंबकम, समतामूलक समाज की स्थापना, विश्व कल्याण जैसी अवधारणाओं को आगे बढ़ाया है। इसी जद्दोजेहद में ब्रिटेन से फ्रेंच और भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि देशों में अंग्रेजी की जगह उनकी प्रचलित भाषाएँ स्थापित हुई। इससे यह प्रमाणित हो गया कि जो जनसामान्य की भाषा हो, वह राष्ट्र की भाषा बने।

यह जानकर आश्चर्य होता है कि फ्रेंच की जगह अंग्रेजी में दस्तावेजों की माँग सबसे पहले ब्रिटेन की सरकार (फ्रेंच सरकार) के समक्ष मजदूरों ने रखी। भारत में भी अपनी भाषाई और सांस्कृतिक विरासत को बरकरार रखने के लिए हिंदी को चुना गया।

तब से लेकर आज तक हिंदी ने प्रेम, सौहार्द्र और भारतीय संविधान की अवधारणाओं से अनुप्राणित होकर बहुत विकास किया है। इसकी विकास यात्रा में समाज के हर तबके, सभी भाषाओं एवं उनके बोलने वालों का योगदान रहा है। योगदान तो उनका भी है, जिन्होंने इसका विरोध किया, क्योंकि आगे चलकर उनके विरोध के प्रश्नों का जवाब समाज ने दे दिया।

आज वैश्विक स्तर पर हिंदी की पहचान है तो इसके लिए देश-विदेश में फैले हुए भारत के निवासियों, हिंदी लेखकों, कवियों, पाठकों, भाषाप्रेमियों, पत्र-पत्रिकाओं, सिनेमा, संचार के अन्य साधनों, रेल और आवागमन के अन्य साधनों एवं भारत सरकार के विभिन्न विभागों का सहयोग है। जब इतने तरह के लोग और इतने संगठनों और सरकार के विभागों का इस काम में सहयोग मिल रहा हो तो निश्चित ही इसमें जन-सहभागिता बढ़ेगी और हिंदी देश की शान बनेगी।

ऐसा इसलिए भी है कि इक्कीसवीं सदी में बहुत सी रूढ़ियाँ चटक रही हैं और उनके ऊपर सर्वमान्य मान्यताएँ हावी हो रही हैं। यह सदी एक सामाजिक और सांस्कृतिक वितान के अवतरित होने की पीड़ा को झेल रही है।

इसी आशा और विश्वास के साथ मैं आपके समक्ष मार्च, 2016 का अंक प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है आप 'सुगंध' के साथ अपनी सहृदयता बनाए रखेंगे और हिंदी के नए वितान को सजाने-सँवारने में अनवरत संलिप्त रहेंगे।

संपादक

विषय सूची

'सुगन्ध'

वी एस पी की त्रैमासिक गृह-पत्रिका

वर्ष-14 अंक-2 मार्च, 2016

संपादक

ललन कुमार

उप-संपादक

वी सुगुणा

गोपाल

संपादकीय कार्यालय

राजभाषा विभाग

कमरा सं.245, पहला तल

मुख्य प्रशासनिक भवन

विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र

विशाखपट्टणम-530 031

दूरभाष व फैक्स: 0891-2518471

मोबाइल: 9989317329 & 9989888457

ई-मेल: vspsugandh@rediffmail.com

vspsugandh@gmail.com

'सुगन्ध' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और उनके प्रति 'विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र प्रबंधन' जिम्मेदार नहीं है।

'सुगंध' पत्रिका हमारे संगठन के वेबसाइट 'www.vizagsteel.com' के 'Publications' लिंक में भी उपलब्ध है।

सृजनात्मक स्तंभ

कहानी

पूर्वाग्रह	डॉ रमेश शर्मा	9
सीढ़ी	डॉ अमिता दुबे	16
तोता, कैंची और मैं	श्रीमती सुधा गोयल	32
अधूरी जिंदगी	श्री हरि गोविंद सिंह	40

बाल-सुगन्ध

क्योंकि पृथ्वी गोल है ...	सुश्री वी नंदिता	37
प्यारी माँ	सुश्री जीनत पटेल	37
शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति	सुश्री आकांक्षा मिश्र	38
मेरी अविस्मरणीय पर्वतीय यात्रा	सुश्री प्रिया गोगोई	39

कविता

श्री सुवेश यादव की रचनाएँ		22-23
श्री शिव डोयले की कविताएँ		24-25

लेख

चिंतन से जुड़ती औद्योगिक सुरक्षा	श्री गोपाल	5
बढ़ता इस्पात उद्योग: बदलता भारत	श्री मनोज कुमार सिन्हा	13
आर आई एन एल में सुरक्षा प्रबंधन ...	श्री ए ए गिरिनाथन व अन्य	19
सामाजिक सौहार्द्र व सांप्रदायिक सौमनस्य ...	डॉ दादू राम शर्मा	29
बेटे के ब्याह का नेह-निमंत्रण (व्यंग्य)	श्री ओम प्रकाश मंजुल	34
महात्मा गांधी एवं आधी धोती का प्रण	श्री पी के महापात्रा	45

मानक स्तंभ

अध्यात्म

दु:ख	40
संगीत सरिता	28
वी एस पी के बढ़ते कदम - विशेष बार मिल	35-36
आओ भाषा सीखें	47

कार्य-कलाप

राजभाषा	26-27
विशेष	50

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 123वीं बैठक का आयोजन

संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 25 फरवरी, 2016 को आयोजित हुई। बैठक की शुरुआत राजभाषा विभाग द्वारा विस्तृत प्रस्तुतीकरण से हुई। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने पिछली तिमाही के दौरान संगठन में हिंदी कार्यान्वयन की समीक्षा की और बेहतर निष्पादन के प्रति संतोष जताया। विपणन विभाग में प्रयुक्त ऑनलाइन प्रपत्र का सैप प्रणाली में द्विभाषीकरण से हिंदी पत्राचार में बढ़ोत्तरी को समिति ने सराहा। राजभाषा विभाग को यह भी निर्देश दिया गया कि इस्पात मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित होनेवाली अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी में अधिक से अधिक संगठनों को जोड़ने का प्रयास किया जाय। वरिष्ठ कार्यपालकों के लिए राजभाषा नियम, अधिनियम एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेशों से संबंधित कार्यशाला के आयोजन हेतु विशेष वक्ता को आमंत्रित किया जाय। बैठक में निदेशक (परियोजना) श्री पी के महापात्रा, निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद, निदेशक (प्रचालन) श्री डी एन राव, निदेशक (वित्त) श्री टी वी एस कृष्णकुमार एवं कार्यपालक निदेशक गण तथा महाप्रबंधक गण उपस्थित थे। बैठक का संचालन समिति के सदस्य-सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने किया।

संपादक महोदय,

यूँ तो 'सुगंध' के सभी अंक पठनीय और रोचक होते हैं, किंतु सितंबर, 2015 अंक ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया, 'संपादकीय राष्ट्रीय बोध' अति प्रेरक और ज्ञानप्रद लगा। सीताराम गुप्ता जी की लघुकथाएँ सदा की तरह दिल को छूनेवाली थीं। सुरेश उजाला की गजलें और कमलेश द्विवेदी की गजलें तथा कविताएँ अंक की श्री बढ़ाने के साथ-साथ इसे नये आयाम देती हैं। सुगुणा जी का स्वतंत्रता सेनानियों पर लिखा विस्तृत लेख भी उल्लेखनीय है। इसमें अनेक अल्पज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के संबंध में दुर्लभ जानकारी दी गई है। व्यंग्य लेख 'साहित्यकार की करुण कथा' भी प्रभावित करता है। ललन कुमार जी की संपादक के रूप में वापसी का स्वागत है। इतना सुंदर अंक निकालने के लिए संपादकीय टीम को बधाई।

- श्री सुभाष सेतिया, नई दिल्ली

सुगंध बिखेरती रचनाओं ने वातावरण में अपना प्रभाव छोड़ा। 'मेक इन इंडिया' का मुखपृष्ठ पर लोगो प्रभावी था। श्री ललन कुमार जी का संपादकीय 'राष्ट्रीय बोध' निश्चय ही रंग लाएगा। गीत, गजल, दोहे, मुक्तक, हाइकु, लघुकथा, कहानी, शोधपरक आलेख क्या-क्या नहीं समेटे हुए सुगंध हस्तगत हुई। किसे सराहूँ, किसे नहीं। संपादकीय विभाग को बहुत-बहुत बधाई। रचनाएँ प्रेरणा के साथ मन में उत्साह जगाती हैं। ऊर्जा का संचार करती कविताएँ, चुनौतियों से जूझता इस्पात उद्योग की भी जानकारी मिली। दक्षिण क्षेत्र में आपकी पत्रिका हिंदी का परचम लहरा रही है। इसके लिए संपादक, उप-संपादक, राजभाषा विभाग बधाई के पात्र हैं। 'सुगंध' भारत में अपनी पहचान बनाये, शुभकामना के साथ ...

- श्री चक्रधर शुक्ल, कानपुर

'सुगंध' अपनी मनभावन महक बिखेरते हुए प्राप्त हुई। पत्रिकाओं की समस्त सामग्री का चयन परिश्रम के साथ किया गया है। 'सुगंध' के सभी अंक उपयोगी लेख, कहानी, कविता, एवं अन्य अनेकों रचनाओं से परिपूर्ण अपना अमिट प्रभाव छोड़ते हैं। बच्चों के लिए उपयोगी सामग्री देकर वर्तमान की नींव पर भविष्य को सँवारने का महत् कार्य किया गया है। कहानी 'चलो न पापा!' और 'पड़ोसी' पढ़नेवालों पर अपना गहरा प्रभाव डालती हैं। लघुकथाएँ 'नुकसान' और 'प्रयास' हमें अंदर तक झकझोर देती हैं। स्तंभ 'आओ भाषा सीखें' भाषा का दरवाजा खोलनेवाला स्तंभ है।

पत्रिका के कुशल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई। अगले अंक की प्रतीक्षा में ...

- श्री विष्णु वर्मा, फैजाबाद

निदेशक महोदय डॉ जी बी एस प्रसाद जी,

'मेक इन इंडिया' की संकल्पना के अवबोधन और भारत में उसकी जरूरत को समझने में 'निर्माण' पत्रिका एक स्रोत सामग्री है। इस्पात और कोयला हमारे देश के महत्वपूर्ण खनिज हैं, जिसका सीधा संबंध समृद्धि और विकास से है। आलेखों के संकलन की यह कोशिश सराहनीय और सफल है।

यह अंक मेरे लिए पठनीय और संग्रहणीय है। आपके माध्यम से मैं श्री ललन कुमार एवं उनके समस्त सहयोगियों को बधाई देना चाहता हूँ। सामग्री संकलन और प्रकाशन में सावधानी के प्रयास बोलते हुए प्रतीत होते हैं।

- श्री ईश्वर चंद्र मिश्र, बेंगलुरु

प्रतिष्ठित, सुपरिचित पत्रिका 'सुगंध' देखने, पढ़ने का सौभाग्य 'सुसाहित्य पुस्तकालय' में हुआ। प्रत्येक अंक बेहतर से बेहतरीन है। प्रत्येक अंक रुचिकर, ज्ञानवर्धक, पठनीय है। आपके इस सुप्रयास के लिए संपादक मंडल बधाई व साधुवाद के पात्र है।

- श्री संतोष बी गुप्ता, विदर्भ

'सुगंध' के सितंबर और दिसंबर, 2015 के दोनों अंक मिले। दोनों ही सामग्री की दृष्टि से श्रेष्ठ अंक हैं। पत्रिका के कथा-साहित्य की सुगंध अच्छे-अच्छों को मदमस्त करने के लिए प्रसिद्ध हैं। दोनों ही अंकों की लगभग सभी कहानियाँ सशक्त हैं। डॉ अमिता दुबे की कहानी 'महायज्ञ' में मानवता की सेवा के लिए मार्मिक प्रेरणा है। डॉ रश्मि शील की 'मन की पीर' में जिंदगी की कठोर सच्चाई के साथ एक ओर पति-मरण की विडंबना है, तो दूसरी ओर गार्ड के आदमी की कमजोरी की सच्चाईपूर्ण विडंबना या विडंबनापूर्ण सच्चाई है। ताजी-टोटकी रचना है यह। श्रीमती सुधा गोयल की कहानी 'पायजेब' भी आज के जेबकतरे डॉक्टरों पर साइड वार करती हुई पति-पत्नी के दिली प्रेम को व्यक्त करनेवाली सशक्त व मर्मस्पर्शी भावनात्मक कहानी है। कहानी के अंत में पति के द्वारा पायजेब लाने की अप्रत्याशित योजना द्वारा लेखिका ने कहानी के नामकरण को तो सार्थक कर ही दिया, कहानी भी इतनी खूबसूरत बन गयी जैसे पायजेब पहनने पर पैर खूबसूरत हो जाते हैं। श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव की कहानी 'वह आदमी' संयंत्र जैसे संस्थानों में कार्य करनेवाले अधिकारी और कर्मचारियों के बीच संबंधों को मधुर बनाने की प्रेरणा देती है। इसी प्रकार दिसंबर अंक की चारों ही कहानियाँ यथार्थ के धरातल पर लिखी गई सशक्त कहानियाँ हैं। डॉ राम प्यारे प्रजापति की 'विजया नर्सिंग होम' में डॉक्टरों की इन दो पीढ़ियों की व्यावसायिकता या व्यवसाय-बुद्धि का सफल तुलनात्मक चित्रण करने के साथ ही मानव-अंगों की तस्करी, अरब-अमीरात आदि के अमीरों द्वारा भारतीय लड़कियों को बीवी बनाने के लिए ले जाना तथा सांप्रदायिक सद्भाव जैसे तथ्यों को स्पर्श किया गया है। इसमें साहित्यिक न्याय की योजना अति तर्कसंगत है। श्रीमती लक्ष्मी रानी लाल की कहानी 'चलो न पापा!' में सामयिकता है। श्री शैलेंद्र तिवारी की 'पड़ोसी' भी आज की शब्दावली में एक 'समावेशी कहानी' है। अस्तु, अच्छी कहानी है। अलबत्ता श्री चित्रेश की कहानी 'श्मशान ज्ञान' अंक की सर्वश्रेष्ठ कहानी कही जा सकती है। इसमें कहानीकार ने 'हनुमंत' के माध्यम से मानव की लोभ-लालच जन्य मानसिकता का सफल चित्रण किया है। रचना सार्वजनीन तो है ही, प्राथमिक शिक्षकों पर यत्किंचित चुटकी लिए जाने के कारण युगीन भी है।

दोनों ही अंकों के संपादकीय येन-केन, चाहे नदियों के द्वारा, चाहे 'मानीगाँव' के द्वारा खींचकर हिंदी की ओर ही ले जाते हैं। मान गये आपकी लक्ष्य-बुद्धि को। 'चोर चोरी से जा सकता है, पर हेरा-फेरी से नहीं जा सकता।' मैंने सुगंध के प्राय: हर संपादकीय में पाया है कि बात शुरू कहीं से भी की जाय, पर वह पूर्ण हिंदी की वकालत पर ही होती है। दोनों में ही व्यंग्य गुदगुदे हैं। अलबत्ता श्री पूरन सरमा जी के भुक्तभोग के प्रति पूर्ण सहानुभूति है। श्री सीताराम गुप्ता की तीनों लघुकथाएँ अच्छी हैं। 'अध्यात्म' में भी अच्छे विचार संगृहित हैं। 'बाल-सुगंध' का विषय प्रेरक है और सारी सामग्री भी श्रेष्ठ है। श्रीमती वी सुगुणा ने भूले-बिसरे शहीदों को खोजने का स्तुत्य कार्य किया है 'जरा याद कुर्बानी...' में। 'एनी वेसेंट' पर श्री सुभाष सेतिया ने भी अच्छा लिखा है। अलबत्ता कविता के मामले में सितंबर में जहाँ डॉ कमलेश द्विवेदी एवं श्री सुरेश उजाला की विविध विषयों पर सफल और सशक्त कविताएँ हैं, वहीं दिसंबर में नितांत अज्ञेयवादी शिथिल तुकबंदियाँ। दोनों ही अंक बाहर से भीतर तक हरियाली ही हरियाली वाले हैं। होली संपूर्ण सुगंध परिवार को हर रंग की खुशियाँ लेकर आये।

- श्री ओम प्रकाश मंजुल, पूरनपुर

चिंतन से जुड़ती औद्योगिक सुरक्षा

- श्री गोपाल -

औद्योगिक संगठनों के लिए सुरक्षा का मुद्दा हमेशा एक चिंतनीय विषय रहा है। बदलती सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों में यह और भी महत्वपूर्ण होता जा रहा है। हालांकि सुरक्षा केवल मनुष्य के लिए ही नहीं, सभी प्राणियों के लिए आवश्यक है या यूँ कहें कि सुरक्षा के प्रति सजग रहना मनुष्य ही नहीं, बल्कि पेड़-पौधे और लताओं को भी प्रकृति ने सहजता से सिखाया है। क्रमिक विकास के फलस्वरूप आज भले ही मनुष्य अपने लिए छतों का निर्माण कर ले रहा है। पहले तो हमारे पूर्वज गुफाओं और कंदराओं में ही शरण लेते थे। इसी प्रकार अन्य जीवधारी भी गुफा, कोटर, बिल और घोंसला बनाकर अपने आप को सुरक्षित रखते हैं। जलचर प्राणी भी जल के भीतर ही अपनी सुरक्षा का इंतजाम कर लेते हैं। ऐसा देखा जाता है कि प्राय: लताएँ व्यवधानों से बचने के लिए अपने विस्तार के मार्ग को बदल लेती हैं और पौधे अपनी जड़ों और फुनगियों को बचाते हुए जीवित रहने के लिए संघर्ष करते हैं। इस प्रकार हम सुरक्षा को दुर्घटनाओं से संघर्ष की एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। यह परिभाषा जब तक सभी प्राणियों के जेहन में घर नहीं कर जाता, हमें बड़ी दुर्घटनाएँ कष्ट देती रहेंगी। सुरक्षा और दुर्घटनाओं में यह संघर्ष तब तक चलेगा, जब तक प्रत्येक व्यक्ति दुर्घटनाओं के प्रति सचेत नहीं हो जाता।

कृषि प्रधान देश भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद उद्योग-धंधे का मशीनीकरण होने लगा। उससे पहले पूरी सामाजिक व्यवस्था कुटीर उद्योगों और पेशागत समुदायों द्वारा उत्पादित उत्पादों पर ही टिकी हुई थी, अर्थात समाज की पूरी अर्थव्यवस्था परस्पर जुड़ी हुई थी। इसका एक फायदा यह भी था कि सबको सबकी आवश्यकता थी, लेकिन व्यावसायिक सुरक्षा के मामले में व्यक्ति खुद ही जिम्मेदार था, क्योंकि उसकी सुरक्षा के लिए कोई स्पष्ट सरकारी नीति नहीं थी। लेकिन कालांतर में जब लोग इस बात से वाकिफ हुए कि किसी भी दुर्घटना में मात्र व्यक्ति को ही नुकसान नहीं होता, बल्कि उससे समाज का ताना-बाना भी चोटिल होता है, तब सुरक्षा को एक सामाजिक मुद्दे के रूप में देखा जाने लगा।

इसी बात को प्रबंध गुरुओं ने मूर्त और अमूर्त लागत के रूप में परिभाषित करते हुए बताया कि यदि संगठन का कोई कर्मचारी दुर्घटना का शिकार होता है, तो संगठन को लागत के हिसाब से दोहरा नुकसान होता है। पहला यह कि संगठन को उसकी चिकित्सा आदि पर धन व्यय करना होता है, जिसे मूर्त लागत कहा जाता है। दूसरा यह कि कर्मचारी के दुर्घटनाग्रस्त होने से संगठन की उत्पादकता प्रभावित होती है, इसे अमूर्त लागत कहा जाता है।

ब्रिटिश शासन के दौरान ही भारत में जब संगठनात्मक तरीके से उद्योगों का विकास शुरु हुआ और व्यवसायों में मशीनीकरण का उपयोग होना आरंभ हुआ तो संगठनात्मक तरीके से सुरक्षा के मुद्दे को परिभाषित करने की आवश्यकता हुई और सुरक्षा के मुद्दे को **1948** में बने फैक्टरी एक्ट में शामिल किया गया। सन् **1976** में उसमें संशोधन किया गया और तत्पश्चात **1984** में भोपाल गैस त्रासदी के बाद **1987** में उसे और व्यापक एवं कारगर बनाया गया। **1987** के संशोधनों में विश्व श्रम संघ (आई एल ओ) के **155**वें सम्मेलन (**1981**) की संकल्पनाओं का असर भी दीखता है। इसमें सबसे उल्लेखनीय बात यह रही कि **1987** के पश्चात इसमें व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा को जोड़ा गया और इसके कार्यान्वयन की पूरी जिम्मेदारी संगठन के प्रबंधन के ऊपर डाल दिया गया।

> आज यदि हम मंगल ग्रह और सूर्य पर कुछ तलाशने की कोशिश कर रहे हैं तो हमें उनके राह की दुष्कर परिस्थितियों को या तो सहना होगा या फिर उनसे बचने का कोई उपाय करना होगा। सुरक्षा और दुर्घटनाएँ कोई बाह्य तत्व नहीं, बल्कि ये दोनों हमारे मन द्वारा सृजित रचनाएँ हैं। क्योंकि हमारा मन हमें आनंद और सुख के अन्वेषण हेतु अभिप्रेरित करता है। इसीलिए हम सुरक्षा की सराहना करते हैं और दुर्घटनाओं से घृणा। अनवरत दुर्घटनाओं को परास्त करने के लिए चलाया जा रहा संगठनों का यह संघर्ष तब तक चलता रहेगा, जब तक प्रत्येक व्यक्ति, मशीन, परिवेश में पूर्ण सुरक्षा हेतु चेतना न भर जाए।

हालांकि औद्योगिक प्रतिष्ठानों में सुरक्षा की जिम्मेदारी संगठनात्मक ही नहीं, बल्कि व्यक्तिश: भी होती है। फिर भी यदि कोई कर्मचारी दुर्घटनाग्रस्त होता है, तो इसके लिए जिम्मेदार अधिकांश कारक प्रबंधन के नियंत्रण के अधीन होते हैं और श्रमिक की गलती को लगभग मानवीय भूल तक ही सीमित किया गया है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि दुर्घटनाओं से सर्वाधिक क्षति दुर्घटना के शिकार व्यक्ति को ही होती है। वर्तमान में सुरक्षा का प्रश्न औद्योगिक संगठनों की उत्पादकता से जुड़ गया है और कानूनन उनका दायित्व तो बनता ही है, इसीलिए इस मुद्दे पर सरकारी व निजी कंपनियाँ अब गंभीर व मुस्तैद हो चुकी हैं और शनै: शनै: यह मुद्दा कामगार व प्रबंधन के बीच परस्पर

भागीदारी का मुद्दा बन चुका है।

दुनिया में बढ़ते औद्योगिकीकरण के कारण सुरक्षा के ऊपर बहुत ध्यान दिया जाने लगा है। इस मामले में अन्य देशों के साथ सुरक्षा संबंधी जानकारियों को साझा किया जाता है और दुर्घटनाओं की जानकारी व विश्लेषणों का आदान-प्रदान किया जाता है। विश्व में इस विषय पर बहुत से वैज्ञानिक शोध होने लगे हैं। लेकिन सबसे पहले एक सुरक्षा अभियंता 'हरबर्ट विलियम हेनरिच' ने लगभग **5000** से अधिक दुर्घटनाओं के गहन अध्ययन के बाद एक सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इस सिद्धांत को कार्य -कारण संबंध के सिद्धांत के रूप में देखा जाता है। हेनरिच के अनुसार 'दुर्घटनाओं के कारण व्यक्ति चोटिल होता है, जो किसी असुरक्षित परिस्थिति अथवा असुरक्षित व्यवहार के कारण होती हैं और असुरक्षित व्यवहार किसी गलती अथवा व्यक्ति के कारण होते हैं। गलतियाँ व्यक्ति के परिवेश, अर्थात सामाजिक और परंपरागत परिवेश के कारण होती हैं।' उस समय अधिकतर लोग दुर्घटनाओं को दैवी आपदा अथवा भाग्य का खेल मानकर छोड़ देते थे।

सुरक्षा को समर्पित कुछ और सिद्धांतों के अनुसार 'औद्योगिक आपदाएँ मात्र सुरक्षा से जुड़ी समस्याएँ नहीं हैं कि जिनका निराकरण किया जा सकता है। इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि दुर्घटनाएँ विशिष्टताओं से भरी हुई होती हैं, क्योंकि उनसे समाज, तकनीक और परिवेश से सचेत रहने की सीख मिलती है।'

इस सिद्धांत से यह पता चलता है कि दुर्घटनाओं की रोकथाम निरंतर सचेत रहने से ही हो सकती है। दुर्घटनाएँ होतीं नहीं, बल्कि हम उन्हें होने का मौका देते हैं। जैसाकि **2-3** दिसंबर **1984** की रात को भोपाल के यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड में हुआ और पूरी दुनिया उससे दहल गई। इस दुर्घटना में **3787** (मध्य प्रदेश सरकार द्वारा घोषित) लोगों की जान चली गई और लगभग **5,58,125** लोग इससे बुरी तरह से प्रभावित हुए।

पूरे भारत में अफरा-तफरी मच गई। अस्पतालों में इतने लोगों का इलाज करना मुश्किल हो गया। सरकार की सारी व्यवस्था चरमरा गई और ऐसा होना स्वाभाविक भी था। क्योंकि इतनी बड़ी आकस्मिक दुर्घटना के लिए पुख्ता इंतजाम करना किसी भी देश या संगठन के लिए आसान नहीं था। आज भी भोपालवासी उस दुर्घटना की दंश को झेल रहे हैं। जब इस दुर्घटना के कारणों का विश्लेषण हुआ तो पता चला कि सुरक्षा के लिए लगाई गई अधिकांश प्रणालियाँ काम नहीं कर रही थीं और बहुत से वाल्व एवं पाइप लाइनों की हालत ठीक नहीं थी। इतना ही नहीं, जिस टैंक (टैंक संख्या **610**) से मिथेन आइसोसाइनाइड गैस का रिसाव हुआ था, उसमें उसकी क्षमता से अधिक गैस थी। टैंक संख्या **610** की स्लिप ब्लाइंड प्लेट निकली होने के कारण उसमें पानी घुस गया और टैंक में रसायनिक अभिक्रिया शुरू हो गई। तत्पश्चात रोने, बिलखने और पश्चात्ताप के सिवा कुछ न बचा था।

इस दुर्घटना को पूर्व में उल्लिखित सिद्धांतों के आलोक में देखा जाए तो इसे मानवीय लापरवाही, कर्तव्य के प्रति घोर अवहेलना और विध्वंसक भूल मानी जाएगी। इसी प्रकार की लापरवाही और भूल के परिणामस्वरूप सन् **1975** में वर्तमान झारखंड राज्य के धनबाद शहर के समीप चासनाला कोयला खदान में भी दुर्घटना हुई थी, जिसमें **372** खनिकों की मृत्यु हो गई और न जाने कितनों का तो अब तक पता नहीं चला। इस दुर्घटना की वजह मात्र एक चिनगारी थी। किसी उपस्कर में स्पार्क से एक चिनगारी निकली और वहाँ पहले से मौजूद मिथेन गैस के कारण आग लग गई। फिर विस्फोट हुआ। कोयला खदान ध्वस्त हो गई। खदान धँसने से बगल में बने पानी के रिजर्वेयर का तटबंध टूट गया और रिजर्वेयर का पानी तेजी से खदान में घुस गया। खदान के भीतर फँसे लोगों को निकलने का मौका भी नहीं मिला।

उपरोक्त दोनों उदाहरणों में सुरक्षा के मानकों की अवहेलना की गई थी और उसे संचालित करने वाले लोगों के द्वारा ही लापरवाही बरती गई थी। लेकिन उनकी लापरवाही अथवा भूल से वे स्वयं तो प्रभावित हुए ही, साथ ही उससे देश और समाज के निर्दोष लोगों या परिवारों को भी दुष्परिणाम झेलना पड़ा। ऐसी बात नहीं है कि ऐसी भूल और लापरवाही केवल भारत में ही होती हैं, ऐसी घटनाएँ तथाकथित विकसित देशों में भी हो जाती हैं। बल्कि यह कहना ज्यादा उचित होगा कि जहाँ लोग अधिक सतर्क रहते हैं और मानकों का अनुपालन करते हैं, वहाँ ऐसी घटनाएँ नहीं होती हैं।

संगठन में दुर्घटनाओं का होना और उनसे निबटना एक बात है और दुर्घटनाएँ न हों, इसके लिए चाक-चौबंद इंतजाम करना दूसरी बात। इसके अतिरिक्त एक तीसरी बात भी होती है और वह है, आकस्मिक आपदाओं से उत्पन्न स्थितियों से निबटना। वर्तमान में वैश्विक स्तर पर उद्योगों में सुरक्षा की स्थिति को मजबूत करने के लिए बहुत से अनुसंधान व विकास कार्य हो रहे हैं, जिनके फलस्वरूप उद्योगों के साथ-साथ समाज को बहुत लाभ हो रहा है और औद्योगिक संगठन भी अपनी आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने हेतु तर्कसंगत ढंग से उन अनुसंधानों एवं शोधों को आत्मसात कर रहे हैं। उदाहरण के लिए आगे का आँकड़ा देखें:

अंतराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार

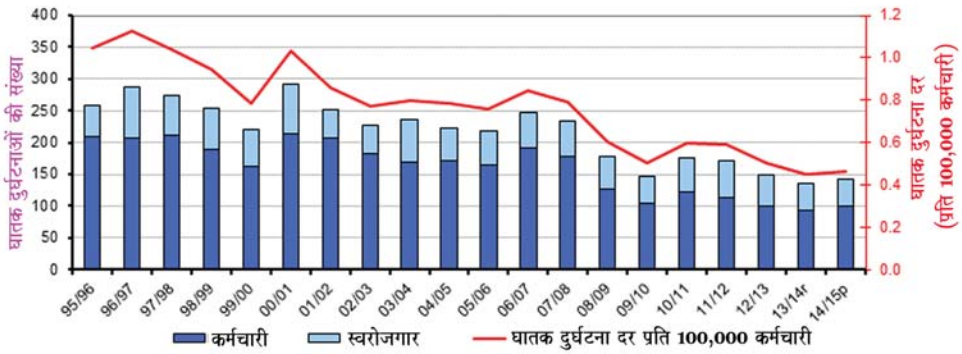

आज से लगभग तीन-चार दशक पहले तक सभी संगठनों में विशेष सुरक्षा विभाग का होना अनिवार्य नहीं था और कानून होने के बावजूद भी उनकी लेखापरीक्षा नहीं होती थी। लेकिन अब सुरक्षा के लिए लेखापरीक्षा अनिवार्य है और उसके अनुश्रवण के लिए आंतरिक व बाह्य पर्यवेक्षण के साथ-साथ गैर-सरकारी पर्यवेक्षण अभिकरण भी मौजूद हैं।

इसी प्रकार पूर्व में सुरक्षा अधिकारी का काम खानापूर्ति जैसा ही होता था (भारत में)। लेकिन भोपाल त्रासदी ने औद्योगिक संगठन के प्रबंधनों को सुरक्षा के प्रति गंभीर होने के लिए मजबूर कर दिया और साथ ही इस दिशा में सरकार द्वारा विशेष सख्ती बरतने और कई तरह के प्रतिवेदनों में इसकी जानकारी देने को अनिवार्य बना देने से सुरक्षा अधिकारी एवं प्रबंधन का कर्तव्य बहुत जवाबदेहपूर्ण हो गया।

सरकार की सख्ती की वजह से प्रबंधन को 'सुरक्षा प्रथम' के नारे के साथ अपनी गतिविधियाँ चलाना अनिवार्य है। इससे प्रबंधन की मानसिकता में काफी बदलाव आया है। अब उनकी प्राथमिकता में मात्र उत्पादन और उत्पादकता ही नहीं, बल्कि उससे ऊपर कर्मचारियों का स्वास्थ्य व सुरक्षा और उपस्करों एवं पर्यावरण की सुरक्षा भी शामिल हो चुके हैं। अब श्रेष्ठ संगठन 'जीरो एक्सीडेंट' के लक्ष्य हेतु सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षण व सुरक्षा व्यवस्था के उपायों को निम्नप्रकार से लागू कर रहे हैं।

प्रशिक्षण:

औद्योगिक संगठन प्रशिक्षण के माध्यम से अपने परिसर में सुरक्षा मानकों का कार्यान्वयन करते हैं। इन प्रशिक्षणों की रूपरेखा संगठन की प्रवृत्ति और उसमें उपयोग होनेवाले उपस्करों एवं पदार्थों की प्रकृति के मद्देनजर तैयार की जाती है। श्रेष्ठ संगठन सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए बदलती परिस्थितियों के अनुकूल प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाते हैं और अपने कर्मचारियों को निम्नप्रकार के प्रशिक्षण से अधिगमवान बनाते हैं।

- फैक्टरी अधिनियम 1948
- रखरखाव एवं सुरक्षा
- मशीन सुरक्षा एवं सुरक्षित प्रचालन विधि
- विद्युत, विद्युत मापक यंत्र, विद्युत चालित औजार सुरक्षा
- गैस एवं गैस सिलिंडर रखरखाव व भंडारण सुरक्षा
- घातक पदार्थों का प्रहस्तन एवं सामग्री भंडारण
- जीवन रक्षी उपकरणों की उपयोगिता एवं उपयोग प्रविधि
- परमिट या प्रोटोकाल पद्धति का अनुपालन
- वेल्डिंग व कटिंग
- उँचाई पर काम करने के तरीके और सुरक्षा नियम
- अग्नि सुरक्षा
- सड़क सुरक्षा
- कार्यस्थल की सुरक्षा का विश्लेषण
- काम आरंभ पूर्व सुरक्षा आकलन एवं जाँच, आदि।

उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों को उपयुक्त वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुकूल बनाया जाता है। जैसा कि बहुत से उद्योगों में कोबाल्ट, प्लूटोनियम, रेडियम, यूरेनियम आदि विषैली गैसों का उपयोग होता है, तो ऐसे उद्योगों में इन गैसों से होनेवाले खतरों से अवगत कराया जाना आवश्यक होता है। इसीप्रकार इस्पात संयंत्रों में प्रक्रिया के दौरान बहुतायत मात्रा में कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस का उत्सर्जन होता है। इसीलिए इस्पात संयंत्रों में कर्मचारियों को इन गैसों से संबधित सुरक्षा के उपाय बताए जाते हैं।

सुरक्षा लेखापरीक्षा:

लेखापरीक्षा से किसी कार्यप्रणाली अथवा पद्धति की कार्यकुशलता और प्रभाव का पता चलता है। यह लेखापरीक्षा सरकारी दिशानिर्देशों अथवा संगठन की संकल्पनाओं के अनुरूप की जा सकती है। संगठनों में सुरक्षा पद्धति की लेखापरीक्षा एक नई पद्धति है। अब संगठन आंतरिक रूप से प्रशिक्षित अपने लेखापरीक्षकों से अपनी स्वयं की लेखापरीक्षा कराने लगे हैं। समय-समय पर सरकारी लेखापरीक्षक भी संगठनों की लेखापरीक्षा करते हैं। सुरक्षा की लेखापरीक्षा करने वाले कुछ निजी संगठन भी मौजूद हैं, जो स्वतंत्र और निष्पक्ष रूप से संगठनों का लेखापरीक्षा करते हैं। इन लेखापरीक्षाओं में संगठन में मौजूद कार्यस्थलों का निरीक्षण, कार्यों का पर्यवेक्षण, कर्मचारियों के विचार और सरकारी नियामकों के दिशानिर्देशों के अनुपालन की जाँच की जाती है।

अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ एवं प्रमाणीकरण:

सुरक्षा से जुड़ी समस्याएँ समूचे विश्व की समस्याएँ हैं। इन समस्याओं से जूझ रहे औद्योगिक संगठन सुरक्षा के मामले में अपनी जानकारियों को वैश्विक स्तर पर परस्पर साझा करते हैं,

ताकि उनकी जानकारियों से समूचा मानव समाज लाभान्वित हो सके। ऐसे ही कुछ प्रमुख संस्थाओं के विवरण आगे प्रस्तुत हैं।

♦ **विश्व सुरक्षा संघ (World Safety Organisation):**

विश्व सुरक्षा संघ एक वैश्विक संस्था है, जो अपने सदस्य देशों को प्रभावी जानकारियों एवं विशेषज्ञताओं को परस्पर साझा करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह आपसी लाभ के लिए अन्य संस्थाओं के साथ भी अपने संग्रहित ज्ञान व अनुभवों को साझा करता है। साथ ही यह सुरक्षा को बढ़ावा और दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए तकनीकों के विकास पर बल देता है। यह अपने सदस्यों में वैश्विक स्तर की दक्षता और सामर्थ्य को बढ़ाने का प्रयास करता है।

♦ **स्वास्थ्य और सुरक्षा कार्यकारी (HSE):**

यह अमेरीकी संस्था श्रमिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण के लिए काम करती है। यह संस्था पूरे विश्व के लगभग 55 श्रमिक संघों के साथ मिलकर वैश्विक स्तर पर अपने कार्यक्रमों को चलाती है और श्रमिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा से जुड़े अधिकारों के लिए व्यापक अभियान चलाती है।

♦ **सुरक्षा और स्वास्थ्य संस्थान (ISHM):**

इस संस्था का मुख्य उद्देश्य सभी उद्योगों को मान्यताप्राप्त प्रमाण पत्र से सम्मानित करना है, ताकि वे अपने कर्मचारियों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दें और अपने कर्मचारियों की महत्ता को तरजीह दें। यह एकमात्र ऐसी संस्था है, जो सुरक्षा प्रबंधन से जुड़ी सभी पहलुओं पर विशेष ध्यान देकर उन्हें क्रियान्वित कराता है।

♦ **अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य व सुरक्षा मानक 18001:**

यह एक अंतर्राष्ट्रीय मानक है, जो औद्योगिक प्रतिष्ठानों को व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के खतरों से आगाह कराता है एवं उन्हें एक निर्धारित मानक को अपनाने हेतु अभिप्रेरित करता है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों द्वारा मानकों के अपनाए जाने पर उनकी लेखापरीक्षा करके उन्हें प्रमाण-पत्र प्रदान करता है, जिससे औद्योगिक प्रतिष्ठानों की ब्रांड इमेज में इजाफा होती है।

अपने ब्रांड इमेज को बढ़ाने के लिए संगठन अपने यहाँ अंतर्राष्ट्रीय मानक अपनाने लगे हैं। इस तरह से कई ऐसी संस्थाएँ हैं, जो औद्योगिक प्रतिष्ठानों के व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा का ध्यान रखती हैं।

सुरक्षा समितियों का गठन:

सुरक्षा की प्राथमिकता बनाए रखने के उद्देश्य से अब संगठन अपने सभी स्तर के कर्मचारियों को मिलाकर सुरक्षा समितियाँ गठित कर रहे हैं, ताकि सुरक्षा के भाव से सभी कर्मचारी पूर्णत: अभिप्रेरित हो सकें। इन समितियों में श्रमिक संगठनों के सदस्य भी शामिल होते हैं। शॉप स्तरीय सुरक्षा समिति इन समितियों की सबसे छोटी इकाई होती है। विभाग स्तरीय सुरक्षा समिति और संभाग स्तरीय सुरक्षा समिति मध्यम दर्जे की समिति होती है और संयंत्र स्तरीय सुरक्षा समिति उच्चस्थ स्तर की समिति होती है। ये समितियाँ विभिन्न स्तरों पर सुरक्षा मानकों के अनुपालन, संभावित दुर्घटना के बिंदुओं को चिन्हित करती हैं। साथ ही सुरक्षा के मुद्दों का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करती हैं।

सरकारी तंत्र:

भारत सरकार एवं अन्य राज्यों की सरकारों ने भी हर संभव प्रयास किया है कि देश के श्रम संगठनों में सुरक्षा और स्वास्थ्य के मुद्दे को प्राथमिकता के आधार पर देखा जाए। इसीलिए सरकारों ने कई तरह के विभागों, बोर्डों एवं नियामकों का गठन किया है। इनमें से बहुत से विभागों, बोर्डों एवं नियामकों को कानूनी अधिकार देकर सशक्त किया गया है। इनमें से इंस्पेक्टर ऑफ फैक्टरी, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पर्यावरण संरक्षण और वन मंत्रालय, जल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, खदान सुरक्षा विभाग, आदि शामिल हैं।

अंतत: यह कहना आवश्यक है कि मनुष्य जब-जब जीवन को बेहतर बनाने की लालसा में अपने ज्ञान एवं आकांक्षाओं के बदौलत विकास की सीढ़ियाँ चढ़ने की कोशिश करता है, उसका सामना चुनौतियों के पहाड़ से होना स्वाभाविक है। आज यदि हम मंगल ग्रह और सूर्य पर कुछ तलाशने की कोशिश कर रहे हैं तो हमें उनके राह की दुष्कर परिस्थितियों को या तो सहना होगा या फिर उनसे बचने का कोई उपाय करना होगा।

यदि हम बेहतर समाज का सृजन करना चाहते हैं तो हमें विश्वास आधारित समाज की अवधारणा को त्यागना होगा और वैज्ञानिक चिंतन की अवधारणा को अपनाना होगा। हमें समझना होगा कि सुरक्षा और दुर्घटनाएँ कोई बाह्य तत्व नहीं, बल्कि ये दोनों हमारे मन द्वारा सृजित रचनाएँ हैं। क्योंकि हमारा मन हमें आनंद और सुख के अन्वेषण हेतु अभिप्रेरित करता है। इसीलिए हम सुरक्षा की सराहना करते हैं और दुर्घटनाओं से घृणा। यदि हम दुर्घटनाओं को नापसंद करते हैं? तो हमें उनके खिलाफ अनवरत प्रयास करते रहना होगा।

दुर्घटनाओं को परास्त और सुरक्षा को बढ़ावा देने के क्रम में शामिल दुनिया की सभी ताकतें अब वैज्ञानिक आधार पर काम कर रही हैं और परिणामस्वरूप औद्योगिक दुर्घटनाओं का ग्राफ नीचे गिरा है और औद्योगिक संस्थाओं में काम करने वाले लोगों का मनोबल बढ़ा है। दुर्घटनाओं को परास्त करने के लिए चलाया जा रहा संगठनों का यह वैश्विक संघर्ष तब तक चलते रहना चाहिए, जब तक कि प्रत्येक व्यक्ति, मशीन और हमारा परिवेश पूर्णरूप से सुरक्षा की चेतना से आप्लावित न हो जाए।

- वरिष्ठ सहायक (राजभाषा)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम - 530031
मोबाइल: +91 9989888457

पूर्वाग्रह

- डॉ रमेश शर्मा -

उसके पावों में हल्के चोट के निशान अब भी साफ दीख रहे थे। उसके एड़ी के ऊपर की साफ दीखने वाली चमकीली त्वचा का खुरदुरापन रह-रह कर मुझे पिछली घटना की याद दिलाता रहा। समय किस तरह तेजी से बीत जाता है, यह मैं पहले भी कई बार महसूस कर चुका था और आज फिर से दोबारा महसूस हो रहा था।

'तुम माउथ आर्गन अच्छा बजा लेते हो', कहते हुए उसने बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ाना चाहा। मैंने सिर हिलाकर हामी भरी, पर ऐसा करते हुए मुझे बड़ा अजीब सा लग रहा था, क्योंकि माउथ आर्गन बजाना तो मैंने कब का छोड़ दिया था। मुझे आश्चर्य हुआ और खुशी भी हुई कि संगीत से उसका नाता अब भी खत्म नहीं हुआ है। इसका मतलब पिछली घटनाएँ उसे अब भी याद होंगी, मैं मन ही मन सोचने लगा। यदि वह पूछ बैठे कि 'तुम्हारा माउथ आर्गन कहाँ है..., चलो सुनाओ कोई अच्छा सा धुन...', तो क्या जवाब दूँगा? कैसे कह सकूँगा कि संगीत से मेरा नाता कब का टूट चुका है।

'इस बार यहाँ खूब बर्फ पड़ रही है', बातचीत के सिलसिले को मैंने दूसरी ओर मोड़ना चाहा। 'हाँ', कह कर वह सिर्फ हामी भरी। मैं सोच रहा था कि इस बात से वह उछल पड़ेगी, पर मेरा अंदाजा गलत निकला। तो क्या यहाँ की सुंदर और खूबसूरत वादियों से उसने भी अपने को अलग सा कर लिया है? मेरे मन में सवाल उठने लगे। समय के साथ चीजें बदल जाती हैं..., परिस्थितियाँ चीजों को किस तरह गड्ड-मड्ड कर देती हैं..., मन के भीतर इस तरह की बातें आने-जाने लगीं और मैं सावधान हो गया। ऐसी सावधानी, जो मुझे उसके साथ बरतनी थी, जिसका उसे अंदाजा नहीं था।

'कितने दिन रुकोगे यहाँ?' - उसने फर्श को दाएँ पैर की अंगुलियों से कुरेदते हुए आँखें नीची कर इस तरह पूछा, जैसे मेरे आने-जाने से उसे कुछ फर्क पड़ने वाला हो। 'कह नहीं सकता शायद कुछ दिन लगे या हो सकता है, कल ही जाना पड़े।' 'कल ही मतलब?' मेरे जवाब से जैसे वह चौंक पड़ी, फिर अपने को संभालते हुए कहने लगी - 'लोगों का आना-जाना तो लगा रहता है यहाँ। तुम भी आए हो तो जाओगे ही। क्या फर्क पड़ता है लोगों के आने-जाने से?' कहते-कहते वह थोड़ा रुक सी गई। लगा, जैसे उसके चेहरे पर दर्द की आड़ी तिरछी रेखाएँ बनने-बिगड़ने लगी हैं, जिसे वह छुपाने की नाकाम कोशिश कर रही हो। 'खैर! तुम इतने दिनों बाद इस शहर में आए हो, और मैं तुमसे वापस जाने की बात पूछने लगी। मुझे तुमसे इस तरह नहीं पूछना चाहिए। चलो, अपनी सुनाओ इतने सालों में तुमने क्या किया। इतने दिन कहाँ रहे। तुम्हारा घर परिवार।' एक ही साँस में जैसे वह सब कुछ पूछ लेना चाहती थी।

मुझे अच्छा लगा कि वह मुझे सिर्फ अपने होटल का ग्राहक मात्र ही नहीं समझ रही। कालेज के दिनों की दोस्ती के लिए अब भी उसके मन में मेरे लिए थोड़ा स्पेस बचा है। वह आज एक खूबसूरत और आलीशान होटल की मालकिन है। देखकर ही मैं जान गया था। इतने सालों बाद कालेज के दिनों की दोस्ती की धुंधली सी यादों के सहारे मेरे जैसे एक साधारण आदमी की जिंदगी के बारे में जानने की इच्छा रखने के उसके पास कोई कारण था भी या नहीं, यह मुझे नहीं मालूम। पर मुझे लेकर सवाल उसके पास बहुत थे। सवाल तो मेरे पास भी थे उसे लेकर, जो उससे मिलने के बाद मेरे मन में पैदा हो रहे थे। वह अपने हिस्से के सवाल पूछ रही थी और मैं अपने हिस्से के सवालों को लेकर चुप था। उसकी मुखरता और मेरी चुप्पी के बीच उसके पास कुछ तो ऐसा था, जो मेरे पास नहीं था। वर्षों पहले अपने-अपने हिस्से की चीजें छोड़कर हम दूर हो गए थे। वे चीजें अपनी जगह अंकुरित होने के पहले ही जमींदोज हो गई थीं।

'तुम बिल्कुल नहीं बदले', वह अचानक कह उठी। कहते हुए उसके चेहरे पर एक तरलता थी, एक ऐसी तरलता, जो पहाड़ों के पिघलते हुए बर्फ में होती है। यूँ तो मेरी चुप्पी उसे कभी पसंद नहीं आई। मेरा चुप रहना आज भी उसे अखर रहा था। ये बासी घटनाएँ जैसे हमें पुराने दिनों की ओर घसीटने की कोशिश में लगी हुई थीं।

उसके इतने सारे सवालों के जवाब देना मेरे लिए नामुमकिन ना सही, पर आसान नहीं था। रिश्तों का भूगोल कई बार हमें इस लायक नहीं छोड़ता कि इनको लेकर आपस में कोई खुलकर बातचीत संभव हो। अभी मैं उसके सवालों के जवाब देने की हालत में भी नहीं था। इसलिए नींद आने और

> चिट्ठी पढ़ते मैं बिस्तर पर निढ़ाल होकर गिर पड़ा। ये कविता का दर्द था या उसकी नसीहत, इसे जानने-समझने की इच्छा अब मेरे भीतर खत्म हो रही थी। अचानक उस वक्त मुझे महसूस होने लगा कि हम अपने-अपने पूर्वाग्रहों को ढोते आ रहे हैं और उसका एक बड़ा खामियाजा हमें जीवन में उठाना पड़ा है। हम दोनों ही जीवन के अजीब मोड़ पर आकर आज खड़े थे, जहाँ से कोई रास्ता निकलता हुआ नहीं दीख रहा था। फिर भी जीवन में एक नयी सुरीली धुन की तलाश में मुझे अब निकल जाना था, कम से कम कविता की बातों का ख्याल रखते हुए ही सही।

कल इत्मीनान से बातें करने का बहाना बनाते हुए मैं अपने कमरे में चला गया। मुझे आते-आते न जाने क्यों ऐसा लग रहा था कि वह पीछे से एकटक मुझे ही देख रही है। जैसे उसकी नजरें मेरी पीठ को छू रही हैं..., मेरी पीठ को थपकियाँ दे रही हैं।

एक बार जब कालेज की छुट्टियाँ थीं, मैं गाँव चला गया। उन दिनों पिता जी की तबीयत को लेकर माँ अक्सर परेशान रहा करती थी। आए-दिन उनकी बी पी और शुगर हाई हो जाने की शिकायतें आती थीं। उनका इलाज चल रहा था, पर घर की माली हालत ठीक नहीं थी। एक दिन माँ ने सहसा कहा था कि 'बेटा तू शादी कर ले।' मैं उसे सुनकर भौंचक रह गया था। 'माँ! पिताजी इस हालत में हैं और तू मेरी शादी की बात कर रही है? तेरा दिमाग तो ठीक है न।' माँ ने कहा, 'मैं ठीक कह रही हूँ बेटा! मेरी बात मान जा, तू शादी कर ले। मैं तेरे लिए लड़की भी देख चुकी हूँ। पास के गाँव की मालगुजार की बेटी है। सुंदर है..., पढ़ी लिखी है..., और क्या चाहिए तुझे।'

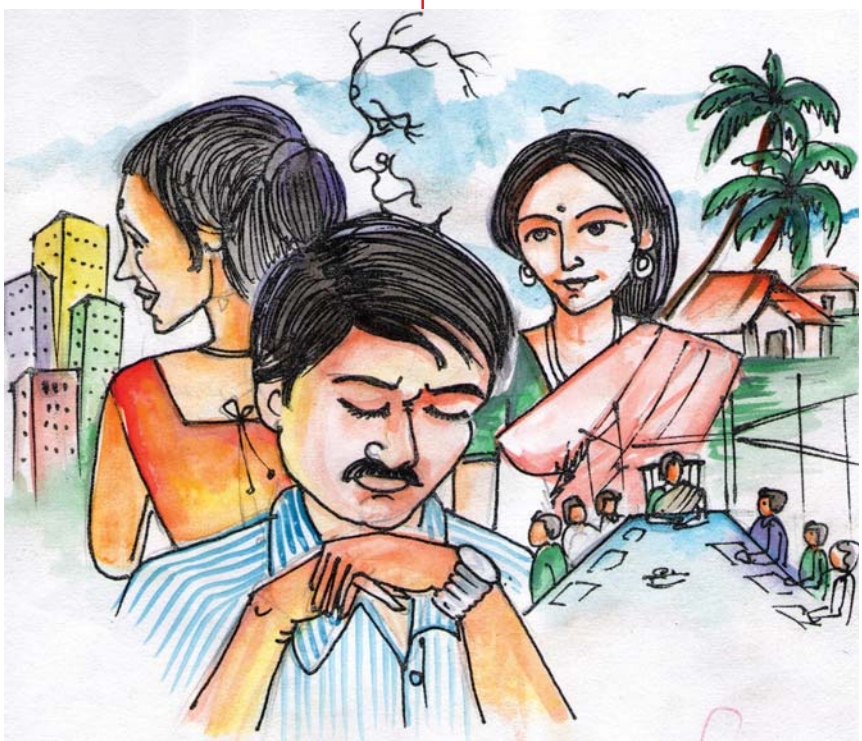

'क्या...? क्या कह रही है तू? शादियाँ इस तरह होती हैं क्या? मैंने इस बारे में अभी तक सोचा ही नहीं है। मैं यह शादी नहीं कर सकता माँ...।' हम दोनों के बीच शादी को लेकर लंबा तर्क-वितर्क चलता रहा। माँ ने बहुत कोशिश की कि मैं इस शादी के लिए तैयार हो जाऊँ, पर मैं तैयार नहीं हुआ। मेरी लाख कोशिशों के बावजूद माँ यह बताने को कभी तैयार नहीं हुई कि आखिर वह ऐसा क्यों चाहती है। गाँव से शहर लौटने का मेरा समय भी आ गया। विदा लेते वक्त माँ ने मुझसे इतना भर कहा कि 'इस बार तेरा पैसा पहुँचने में शायद थोड़ी देर हो जाय, पर चिंता मत करना, मैं किसी तरह माहवारी खर्च की व्यवस्था कर ही दूँगी।'

शहर लौटने के तीन महीने बाद एक दिन खबर आई कि पिताजी की तबीयत अचानक बिगड़ गई थी और उनका इंतकाल हो गया। मैं भागा-भागा घर पहुँचा। किसी तरह पिताजी के क्रियाकर्म का निपटारा हुआ। माँ, अब और गुमसुम रहने लगी थी। माँ ने फिर कभी मेरी शादी को लेकर मुझसे कोई बात नहीं की। लोगों से मुझे पता चला कि पैसे के अभाव में पिताजी का ठीक से इलाज न हो सका और वे चल बसे। आखिरी समय में पास के गाँव के मालगुजार ने माँ को पैसे देने से मना कर दिया था। उल्टे कर्ज लौटाने की बात कहकर उसने माँ की चिंता और बढ़ा दी थी। उस दिन मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि आखिर मालगुजार की बेटी से माँ, मेरी शादी क्यों करवाना चाहती थी। यह जानकर मुझे बहुत दुख पहुँचा था। मेरे मन में सवाल उठने लगे थे। आखिर एक बार उस लड़की को देख लेने में हर्ज ही क्या था? संभव है वह पसंद आ जाती और मैं उस लड़की से शादी के लिए हामी भर देता। फिर मालगुजार जी, जो कि आड़े वक्त में माँ के काम आ ही रहे थे, उस वक्त पूरी सहायता करते और पिताजी की जान शायद बच जाती।

दरअसल उन दिनों गाँव की लड़कियों को लेकर एक अजीब से पूर्वाग्रह से मैं घिरा हुआ था। गाँव की लड़कियाँ दब्बू होती हैं। गाँव की लड़कियाँ प्रेक्टिकल नहीं होतीं और धीरे-धीरे मेरी धारणा बन गई कि मैं शादी करूँगा तो किसी शहर की लड़की से ही करूँगा।

अतीत से बाहर निकल मैंने झरोखे से देखा कि पूरा शहर रोशनी में नहाए हुए है। मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैंने सिगरेट जला ली। धुएँ का छल्ला उड़ाता रहा। दूर पहाड़ों पर बर्फबारी शुरू हो चुकी थी। दिन के धूप में पिघलने वाला बर्फ पहाड़ के चेहरे को तरल बना देता है। आधी रात को जमने वाले बर्फ के साथ मुझे उसका चेहरा बेहद कठोर होता हुआ दिखाई देने लगा।

उन दिनों हम बी.एस.सी. अंतिम वर्ष में थे। परीक्षाओं के पहले हमारा पिकनिक का प्रोग्राम था। यही शहर, पहाड़ियाँ भी यहीं, हमारी टोली टुकड़ों में बंट गई थी। हम दोनों साथ हो लिए थे। पहाड़ी चढ़ते-चढ़ते हम दूर निकल लिए थे। एक जगह देर तक बैठ हमने जी भरकर बातें की। मैं चाहता था कि मेरी शादी एक शहरी लड़की से हो। मेरी नजर में उससे बेहतर शहरी

लड़की और कौन हो सकती थी। मैं उस दिन चाहता था कि अपने मन की बात हिम्मत से उसके सामने रख दूँ, पर उसकी एक बात ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया था। मेरी हिम्मत जवाब दे गई। 'गाँव के लड़के बड़े दब्बू किस्म के होते हैं। मैं चाहती हूँ कि मेरी शादी किसी शहरी लड़के से हो,' कहते-कहते वह ठहाके लगाकर हँस पड़ी थी। उसका इस तरह हँसना मुझे कुछ समझ में नहीं आया।

शाम को पहाड़ी पर बर्फबारी शुरू हो चुकी थी। मुझे उस दिन पहाड़ बेहद शुष्क और कठोर लगा था। हम धीरे-धीरे नीचे उतर रहे थे। उतरते-उतरते एक जगह वह फिसल गई। उसकी वजह से उसकी एड़ी के ऊपर खरोच आ गई। उसकी वजह से हमें कुछ देर और रुकना पड़ा।

'यह चोट का निशान हमेशा तुम्हें इस पिकनिक की याद दिलाता रहेगा,' मैंने मजाक में कहा। मेरी बातें सुनकर उसके चेहरे पर एक हल्की मुस्कान तैर गई। मैं अपेक्षा कर रहा था कि वह ज्यादा कुछ रिएक्ट करेगी, पर शायद पाँव में हल्के दर्द की वजह से वह चुप ही रही। उसने आगे कुछ नहीं कहा, जबकि मेरी इच्छा बनी रही कि हम थोड़ी देर और बात करें।

नीचे सभी लोग हमारा इंतजार कर रहे थे। उस दिन खूब गाना-बजाना हुआ था। मैंने माउथ आर्गन पर मुकेश के गाने का धुन बजाया, खूब तालियाँ बजीं। माउथ आर्गन पर बजाया वह मेरा आखिरी धुन था। उसके बाद आज तक मैंने माउथ आर्गन को छुआ तक नहीं। पिकनिक के बाद जब हम विदा हो रहे थे तो एक तरह से यह हमारी अंतिम विदाई थी, पर हमने एक दूसरे को अलविदा नहीं कहा, जैसे कि हमें मालूम हो कि हम दस-बीस सालों के बाद फिर दोबारा मिल सकते हैं और सचमुच में बीस सालों के बाद हम दोबारा मिले थे।

उसकी बातें आज मुझे फिर से परेशान कर रही थीं। क्या इसने सीरियस होकर वैसा कहा था या मैंने उसकी बातों को सीरियसली ले लिया था। ये ऐसे सवाल थे जो मेरे हिस्से आए थे, जो मुझे उससे पूछने थे। क्या इन सवालों के जवाब उससे कभी मैं ले सकूँगा? आज बीस साल बाद मुझे यकीन हो रहा था कि उसने सारी बातें उस दिन सीरियसली ही कह रही थी। जब गाँव की लड़कियों को लेकर मेरे अपने पूर्वाग्रह थे, तो गाँव के लड़कों को लेकर उसके भी अपने पूर्वाग्रह क्यों नहीं हो सकते?

सड़कों पर अब इक्की-दुक्की गाड़ियाँ ही नजर आ रही थीं। लगभग पूरा शहर नींद में था। कल क्या कहूँगा उससे? अपने बारे में क्या बताऊँगा उसे? यही चिंता मुझे खाए जा रही थी। मैंने अब तक शादी नहीं की, इसका कारण यदि वह पूछ दे तो मैं क्या जवाब दूँगा? और अगर जवाब दूँगा भी तो क्या वह यकीन कर पाएगी? इसी उधेड़बुन में पूरी रात बीत गई।

सुबह मैं जल्दी तैयार हो गया। आज दोपहर बारह बजे पास के एक होटल में कंपनी के डीलरों की एक मीटिंग थी। नीचे उतरा तो अपने चेंबर में वह नहीं दिखी। उसकी जगह एक 17-18 साल की लड़की को उस चेंबर में बैठा देख मेरे मन में जिज्ञासा पैदा हुई कि कहीं यह उसकी बेटी तो नहीं है। उसके नैन-नक्श देखकर फिलहाल मुझे तो यही लग रहा था। मुझे सामने देखकर वह आवाज दी - 'अंकल आप रोहित ठाकुर हैं न? आप रूम नंबर 103 में ही ठहरे हैं न?'

'हाँ! बेटा ठीक पहचाना तुमने। बताओ... क्या बात है।'

'जी मम्मी ने आपके लिए एक लिफाफा भेजा है,' कहते हुए उसने मुझे एक बंद लिफाफा थमा दिया। 'और तुम्हारी मम्मी?' अनायास एक प्रश्न मेरी जुबान से फिसल गया। 'उनकी तबीयत ठीक नहीं है, क्या?' 'जी! रात में अचानक उनकी तबीयत बिगड़ गई। डॉक्टर ने एक हफ्ते आराम करने के लिए कहा है।' मैंने अगला प्रश्न किया, 'और तुम्हारे पापा?' जो प्रश्न मैं कविता से करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था, वहीं उसकी बेटी से कर गया।

'जी! पापा हमारे साथ नहीं रहते। वे दस साल पहले हमें छोड़कर दिल्ली चले गए। तभी से उनका यहाँ आना-जाना नहीं है। उन्होंने दूसरी शादी भी कर ली है। मैं और मम्मी नाना-नानी के साथ रहते हैं।' कभी-कभी कई कठिन प्रश्नों के जवाब हमें आसानी से भी मिल जाते हैं।

कविता के जीवन की पूरी कहानी उसकी बेटी के उत्तर में ही थे। मेरी जिज्ञासा के सभी प्रश्नों के जवाब मुझे मिल गए।

मुझे खुशी हो रही थी अथवा दुख, मैं तय नहीं कर पा रहा था। खुशी आखिर क्यों होनी चाहिए मुझे? शायद ऐसी किसी संभावना के चलते कि कविता के जीवन की टूटी हुई डोर को मैं अपने जीवन से जोड़ सकूँ। पर अब यह संभव ही नहीं था। फिर खुशी आखिर क्यों होनी चाहिए मुझे? इसलिए कि कविता के जीवन की डोर मंझधार में टूट गई थी। मैं अपने आप से ही सवाल करने लगा। कई बार जीवन में नाकाम हुआ आदमी दूसरे की नाकामयाबी पर भी खुश हो लेता है। ऐसे सोचते हुए मुझे अपने आप पर ही हँसी आ गई। क्रोध भी आया। अंततः मुझे दिल से लगा कि कविता के जीवन की इस घटना से मुझे खुशी नहीं, बल्कि तकलीफ पहुँची है। कई घटनाएँ हमें अपने भीतर की संवेदना को टटोलने का अवसर दे जाती हैं। आज अपने भीतर की संवेदना को जिंदा पाकर मुझे जो खुशी हुई, शायद उस खुशी को पाने के लिए हम अपने जीवन को ही एक रेस में तब्दील कर देते हैं, और फिर भी वह कई बार नहीं मिलती।

लिफाफे को सूटकेस में रखते हुए मैं मीटिंग के लिए निकल पड़ा। सारे लोग आ चुके थे। मीटिंग में सबने अपनी बातें रखीं। अब एक महिला की बारी थी। उम्र लगभग चालीस के आसपास, दीखने में अत्यंत खूबसूरत और आकर्षक व्यक्तित्व की धनी, उसने सबका अभिवादन करते हुए कहना आरंभ किया। 'सर! आजकल लोगों में परफ्यूम और डियोडरेंट का चलन और डिमांड खूब है। कई बार तो समय पर माल उपलब्ध न हो पाने की वजह से हमें परेशानी हो जाती है। कंपनी को इस पर ध्यान देने की जरूरत है। कंपनी को लेडी और जेंट्स सीरीज के कुछ नए परफ्यूम और डियोडरेंट के निर्माण की दिशा में भी सोचने की आवश्यकता है। क्योंकि बाजार में प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है। कुछ लुभावने ऑफर देने की दिशा में भी हमें सोचना चाहिए।'

महिला ने जिस अंदाज में अपने विचारों को रखा, वह बेहद आकर्षक होने के साथ-साथ विचारणीय भी था। उसे मैंने अपनी डायरी में नोट भी किया। अंत में मुझे लगा कि सारी बातें तो हो गईं, लेकिन परस्पर आत्मीय परिचय नहीं हुआ। इसलिए मैंने सबसे अपना परिचय देने का आग्रह कर दिया। लोगों ने मेरा आग्रह स्वीकार करते हुए विस्तार से अपना परिचय देना शुरू किया। परिचय का अंत भी उसी महिला से हुआ। उसने कहा, 'मेरा नाम स्वाती राजपूत है। वैसे तो मेरे पति का रियल इस्टेट का बिजनेस है, पर मैं खुद अपना कुछ बिजनेस करना चाहती थी। इसलिए कंपनी के सारे प्रोडक्ट की एजेंसी मैंने अपने नाम पर ले लिया है। मुझे इसमें पूरी कामयाबी भी मिली है। वैसे मेरा मायका एक गाँव में है और सभी जानते हैं कि गाँव की लड़कियों के बारे में हमारी धारणा आज तक बदली नहीं हैं। मैं चाहती थी कि अपने जीवन में खुद कुछ करके दिखाऊँ, इसलिए इस क्षेत्र में आई हूँ।' उसकी बातों में दम थी। उसने अपनी बातों से मुझे जमीन पर पटक दिया। गाँव की लड़की के बारे में वर्षों पहले जो मेरे मन में धारणा थी, वह ध्वस्त हो गई। अब उसके बारे में आगे जानने की इच्छा मेरे मन में प्रबल हो उठी। मैंने सवाल किया, 'मैडम! आप रहनेवाली कहाँ की हैं?' उसने जवाब दिया, 'जी, सुलतानगढ़ जिले के एक गाँव से हूँ।' सुल्तानगढ़ का नाम सुनकर मैं और उत्साहित हो उठा और गाँव का नाम पूछा। उस महिला ने कहा, 'सर मैं अंतापुर गाँव के मालगुजार ठाकुर पूरनचंद की इकलौती बेटी हूँ।'

यह सुनकर मेरे होश फाख्ता हो गए। लगा जैसे किसी ने मुझे करारा तमाचा जड़ दिया हो। यह तो वही लड़की निकली, जिसके साथ बीस साल पहले माँ ने शादी करने का मुझसे आग्रह किया था और उसे देखे-सुने बिना मैंने मना कर दिया था। आज उससे मिलकर लगा, जैसे मुझसे भारी गलती हो गई। माँ अगर आज जिंदा होती तो इस भूल के लिए मैं उससे क्षमा माँग लेता। पर अब तो उस अवसर से भी मैं महरूम हो चुका हूँ।

जल्दी से मीटिंग समाप्त घोषित करके मैं ने सबसे विदा ली और भारी मन के साथ अपने होटल लौट आया। मुझे मालूम था कि कविता अपने चेंबर में नहीं होगी। इसलिए उस तरफ देखे बिना ही सीढ़ियाँ चढ़ते हुए मैं अपने कमरे में पहुँच गया। फिर याद आया कि सुबह निकलते समय कविता की बेटी ने एक बंद लिफाफा दिया था, जिसे मैंने अभी तक खोला ही नहीं था। दिन भर मीटिंग और वहाँ स्वाती राजपूत से हुई मुलाकात के बाद कविता वाले प्रसंग से मेरा ध्यान हट गया था। लिफाफे को खोलते हुए सोचता रहा कि आखिर कविता ने लिखा क्या होगा? जल्दी से मैंने लिफाफा खोला। भीतर एक चिट्ठी थी, जिस पर लिखा था... 'रोहित! हमारे पूर्वाग्रहों ने हमारे जीवन से सारी मीठी धुनों को हमसे छीन लिया है। बीस साल पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो अपनी गलतियों का एहसास मुझे होता है। मुझे उस वक्त पता था कि तुम मेरी तरफ आकर्षित हो, पर मैंने ही तुम्हें ऐसा करने से रोका था। मेरे पूर्वाग्रह ने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया। पर आज जब सोचती हूँ तो लगता है कि मैं कितनी गलत थी। एक शहरी लड़के के साथ मुझे आखिर जिल्लत की जिंदगी के सिवा क्या मिला। खैर! वक्त चला गया रोहित...! बीता हुआ समय लौटकर फिर नहीं आता। तुम माउथ आर्गन तो अच्छा बजा लेते हो? पर मुझे तुमसे मिलकर न जाने क्यों ऐसा लगा कि तुम भी सब कुछ जैसे छोड़ चुके हो। आखिर ऐसा क्यों रोहित? जब तक साँसें चलती रहे, सुरीली धुनों के साथ तुम जीना प्लीज...। इसे कभी जीवन से अलग मत होने देना...।' चिट्ठी पढ़ते मैं बिस्तर पर निढ़ाल होकर गिर पड़ा। ये कविता का दर्द था या उसकी नसीहत, इसे जानने-समझने की इच्छा अब मेरे भीतर खत्म हो रही थी। अचानक उस वक्त मुझे महसूस होने लगा कि हम अपने-अपने पूर्वाग्रहों को ढोते आ रहे हैं और उसका एक बड़ा खामियाजा हमें जीवन में उठाना पड़ा है। हम दोनों ही जीवन के अजीब मोड़ पर आकर आज खड़े थे, जहाँ से कोई रास्ता निकलता हुआ नहीं दीख रहा था। फिर भी जीवन में एक नयी सुरीली धुन की तलाश में मुझे अब निकल जाना था, कम से कम कविता की बातों का ख्याल रखते हुए ही सही। सो रात की फ्लाइट से घर लौट जाने का फैसला करते हुए मैंने अपना सामान पैक करना शुरू कर दिया।

- गायत्री मंदिर के पीछे
बोईरदादर, रायगढ़-496001
छत्तीसगढ़
मोबाइल: +91 9752685148

बढ़ता इस्पात उद्योग: बदलता भारत

- श्री मनोज कुमार सिन्हा -

हाल ही में भारत सरकार ने देश में निवेश, नवाचार, कौशल विकास व उत्तम विनिर्माण बुनियादी ढांचों के विकास आदि के लिए 'भारत में निर्माण' अभियान की विधिवत घोषणा की है। इस अभियान के माध्यम से भारत को दुनिया के अग्रणी औद्योगिक देशों की श्रेणी में खड़ा किया जा सकता है। भारत सरकार द्वारा इसके अनुकूल वातावरण बनाने हेतु अपनी नीतियों में कुछ सुधार भी किया जा रहा है।

अभियान और इस्पात उद्योग:

'मेक इन इंडिया' अभियान पर टिप्पणी करते हुए किसी ने ठीक ही कहा है कि अगर भारत पर्याप्त इस्पात नहीं बना सकता तो यहाँ 'मेक इन इंडिया' अभियान सफल नहीं हो सकता। जिस तरह इस्पात मानव जीवन की रोजमर्रा की आवश्यकताओं का एक अभिन्न हिस्सा है, उसी प्रकार उद्योग की स्थापना से लेकर उसके लिए आवश्यक यंत्रों, उपस्करों एवं उसके कलपुर्जों में इस्पात का उपयोग बहुत आवश्यक है। इन परिस्थितियों में इस्पात के उपयोगिता की कल्पना आसानी से की जा सकती है। इसके लिए वर्तमान परिस्थितियों के साथ आगे बढ़ना होगा।

यह सच है कि भारत इस्पात निर्यात की प्रतिस्पर्द्धा में पिछड़ रहा है और अब एक आयातक देश बन गया है। आँकड़े बताते हैं कि भारत ने **2003-04** में **1.5** मिलियन टन इस्पात का आयात एवं **4.5** मिलियन टन निर्यात किया था, जो **2014-2015** में क्रमश: **9.5** मिलियन टन व **5.5** मिलियन टन हो गया। वैश्विक स्तर पर भी इस्पात उत्पादन क्षमता में गिरावट आई है। इसमें इस वर्ष दिसंबर तक **29.7%** की गिरावट दर्ज की गई है।

भारत में इमारत निर्माण के लिए उपयोग होने वाले इस्पात की लागत चीन की तुलना में **15000** रुपए प्रति टन अधिक है। हालांकि देश में इस्पात आयात को नियंत्रित रखने के लिए सीमा शुल्क को **25%** तक बढ़ा दिया गया है और उस पर एंटी डंपिंग ड्यूटी भी लगायी गयी है। इसी प्रकार लौह व इस्पात से बने उत्पादों पर भी आयात कर **10%** से बढ़ाकर **15%** किया गया है। लांग व फ्लैट उत्पादों की अप्लाइड दर में **2.5%** की वृद्धि की गई है। सरकार ने कुछ खास हॉट रोल्ड फ्लैट उत्पादों पर **200** दिनों के लिए **20** फीसदी यथा मूल्य रक्षा शुल्क भी लगाया है। लेकिन सरकार के मेक इन इंडिया, स्मार्ट सिटी और सबके लिए पक्के मकान जैसे कार्यक्रमों के मद्देनजर आगामी वर्षों में भारतीय इस्पात बाजार बहुत आकर्षक होगा।

जैसाकि आप जानते हैं, 'मेक इन इंडिया' अभियान अर्थव्यवस्था के कुल **25** क्षेत्रों तक सीमित है। इस अभियान में इस्पात उद्योग की भूमिका को समझने के लिए इन **25** क्षेत्रों का अगले चार-पाँच वर्षों में क्या स्वरूप होगा, यह जानना आवश्यक है। नमूने के तौर पर कुछ क्षेत्रों के आँकड़ों का जायजा लेना आवश्यक है। इससे शेष उद्योगों की स्थिति और इस्पात उद्योग की भूमिका को समझना आसान होगा। हम पहले ऑटोमोबाइल व उसके कलपुर्जे, विमानन, रसायन और पेट्रो रसायन एवं निर्माण उद्योग से जुड़े आँकड़ों पर विचार करेंगे।

ऑटोमोबाइल उद्योग:

भारत दुनिया का सातवाँ सबसे बड़ा वाहन उत्पादक देश है। यहाँ औसतन प्रतिवर्ष **23.36** लाख वाहनों का उत्पादन होता है। एक अनुमान के अनुसार वर्ष **2016** के अंत तक भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा मोटर वाहन बाजार बनने वाला है, जो देश के सकल घरेलू उत्पाद का **7.1%** होगा। इसी प्रकार **2020** तक भारत द्वारा प्रतिवर्ष **6** लाख से अधिक वाहन बेचे जाएंगे। अगले पाँच वर्षों के दौरान ट्रैक्टरों की बिक्री में कुल वार्षिक वृद्धि दर **8-9%** होने के कारण अब ऐसी उम्मीद है कि अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड के ट्रैक्टर भी भारतीय बाजार में आएँगे, जिससे भारत का ट्रैक्टर बाजार और सुदृढ़ होगा। भारत में सबसे अधिक मोटर साइकिलें बनती हैं और यह दुपहिया वाहनों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। वाणिज्यिक वाहन निर्माण में भारत का विश्व में पाँचवाँ स्थान है।

भारत में दुपहिया वाहनों का उत्पादन पिछले सात साल में सालाना **8.5** लाख यूनिट से बढ़कर **15.9** लाख यूनिट हो गया है, हालांकि भारत का ग्रामीण बाजार अभी बहुत हद तक अछूता है। देश में बड़े वाहनों के उत्पादन क्षेत्र समूहों के उद्भव जैसे उत्तर में दिल्ली-गुड़गाँव-फरीदाबाद, पश्चिम में मुंबई -पूणे-नासिक-औरंगाबाद, दक्षिण में चेन्नई-बेंगलुरु-होसुर और पूर्व में जमशेदपुर-कोलकाता आदि से मोटर वाहन उत्पादन में भारी इजाफा होने की संभावना है। वैश्विक स्तर की बड़ी कार निर्माता कंपनियाँ भारत की बढ़ती घरेलू माँग के मद्देनजर देश में पूँजीनिवेश के लिए उद्यत हैं। इस क्षेत्र के लिए निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सरकार अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं की स्थापना पर बहुत जोर दे रही है। ऐसे में हुंडई, सुजकी व जीएम जैसी कई निजी कंपनियाँ भारत में अनुसंधान एवं विकास केंद्र स्थापित करने हेतु उत्सुक हैं। भारत की टाटा नैनो भारतीय मितव्ययी इंजीनियरिंग का एक मिसाल और युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत है। संभावना है कि अगले दशक में इलेक्ट्रिक कार के आ जाने से भारत का वाहन और भी विशाल हो जाएगा।

वाहन कलपुर्जा उद्योग:

भारत ने वर्ष **2014-15** के दौरान वाहनों के कलपुर्जों में **38.5** अरब डालर का कारोबार किया है। वित्त वर्ष **2009-2014** के दौरान देश से वाहनों के कलपुर्जों का निर्यात बाजार **15%** की वृद्धि के साथ **10.2** अरब अमेरीकी डालर तक था, जो वर्ष **2014-15** के दौरान **11.2** अरब डालर का हो गया। क्योंकि;

- अपेक्षाकृत भारत में इस्पात उत्पादन लागत कम है।
- अंतराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत से इस्पात खरीदना चाहती हैं।
- वर्ष **2014-15** में **38.5** अरब डालर का कारोबार हुआ है।
- **2020-21** तक **115** अरब डालर तक पहुँचने की उम्मीद।
- **2016** तक दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा बाजार बनने हेतु वैश्विक वाहन बिक्री **5%** से अधिक होने का अनुमान है।
- **2009** में सकल घरेलू उत्पाद में ऑटोमोबाइल कलपुर्जों की हिस्सेदारी को **2020** तक **3.6%** तक करने की योजना है।
- ऑटोमोबाइल कलपुर्जा उद्योग वर्ष **2010-15** के दौरान **11%** का कुल वार्षिक विकास दर दर्ज किया।
- वर्ष **2020** तक चीन, अमेरीका और जापान के बाद भारत विश्व का चौथा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल निर्माता बनेगा।
- ऑटोमोबाइल के कलपुर्जों का निर्यात वर्ष **2010-15** के बीच **21.6%** की वार्षिक विकास वृद्धि दर से बढ़ा है और **2014-15** में यह **11.2** अरब डालर का हो चुका है।

निर्माण उद्योग:

100 शहरों को 'स्मार्ट सिटी' के रूप में विकसित करने के लिए भरत सरकार ने महत्वपूर्ण योजना की घोषणा की है। वैसे तो इसके प्रथम चरण के **20** शहरों के नाम भी घोषित हो चुके हैं। हालांकि 'स्मार्ट सिटी' बनने के लिए शहरों को कुछ निर्धारित मानकों पर खरा उतरना होता है, जिसमें बिजली, पानी, सड़क, स्कूल-कॉलेज, अस्पताल जैसी आम नागरिक सुविधाओं की स्थिति के साथ-साथ अन्य आधुनिक मूलसंरचनाओं की स्थिति का स्तर भी शामिल होता है। सरकार की इस योजना से भारतीय इस्पात उद्योग को बहुत लाभ मिलेगा और इस योजना की सफलता पर भारतीय इस्पात उद्योग का सहयोग भी आवश्यक होगा।

निर्माण:

देश में आज भी परिवहन सुविधाएँ वैश्विक स्तर की नहीं हैं। हालांकि कुछ वर्षों से इस क्षेत्र में बहुत निवेश हुआ है और स्थिति बदली है। 'मेक इन इंडिया' अभियान के अनुरूप जब भारत में निर्माण शुरु हो जाएगा, तब लोगों व सामानों को गंतव्य पर शीघ्र और सुरक्षित पहुँचाने के लिए व्यवस्था होनी चाहिए। इसमें इस्पात उद्योग को बहुत बढ़ावा मिलेगा।

विमानन उद्योग:

भारत विश्व का नौवाँ सबसे बड़ा नागरिक उड्डयन बाजार है। वर्ष **2013** के दौरान देश में **163** लाख यात्रियों ने विमान से सफर किया। इसमें इतनी तेजी से विकास हो रहा है कि वर्ष **2017** तक अंतर्राष्ट्रीय यात्रियों की संख्या लगभग **60** लाख तक हो जाएगी। इसी गति से यदि विकास होता रहा तो वर्ष **2020** तक भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा विमानन बाजार बन जाएगा। इसीलिए भारतीय विमानन विभाग अपने बेड़े के आकार को **2020** तक **800** विमान तक बढ़ाने जा रहा है। देश के विमानन क्षेत्र में **2012-17** के दौरान **12.1** अरब डालर के निवेश की संभावना है, जिसमें **9.3** अरब डालर निजी क्षेत्र का योगदान होगा। माँग के अनुरूप भारत को अगले पाँच वर्षों के दौरान **300** बिजिनेस जेट, **300** छोटे विमान और **250** हेलीकाप्टर सेवा में लगाने होंगे। इसे देखते हुए भारतीय विमान प्राधिकरण, नए हवाई अड्डों के विकास का काम तेज किया है और वर्ष **2020** तक देश में लगभग **250** हवाई अड्डों को विकसित करने की योजना बनायी गई है। भारतीय विमानन प्राधिकरण ने वर्ष **2013-2017** के बीच रुपए **1.3** अरब डालर खर्च करके हवाई अड्डों का आधुनिकीकरण व उन्नयन करने की योजना बनाई है। यहाँ भी हम इस्पात उद्योग का भविष्य उज्ज्वल देख रहे हैं।

रसायन और पेट्रो रसायन:

रसायन और पेट्रो रसायन के क्षेत्र में भी भारत एशिया का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और दुनिया का आठवाँ सबसे बड़ा निर्यातक है और साथ ही कृषि रसायनों का चौथा सबसे बड़ा वैश्विक उत्पादक है। हमारे देश का रसायन और पेट्रो रसायन उत्पादों का अनुमानित बाजार लगभग **140** अरब डालर का है। वर्ष **2014-15** के दौरान भारतीय रसायन उद्योग का कुल उत्पादन **21.1** करोड़ टन था। उस दौरान पॉलिमर का उत्पादन **6.53** लाख टन और आयात लगभग **3.73** मिलियन टन था। पेट्रो रसायन उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक है और देश के सकल घरेलू उत्पाद का **1.38%** है। सरकार इस क्षेत्र को और मजबूती देने के लिए अनुसंधान एवं विकास पर बहुत जोर दे रही है, क्योंकि पॉलिमर और कृषि-रसायन उद्योग के लिए भारत में अपार संभावनाएँ हैं। यह क्षेत्र कुछ खतरनाक रसायनों को छोड़कर लगभग लाइसेंस मुक्त है। आशा है आगामी वर्षों के दौरान पॉलिमर की माँग में **8-10%** की वृद्धि होगी और इस क्षेत्र में इस्पात की खपत बढ़ेगी, जिससे उद्योग और देश को लाभ मिलेगा।

'मेक इन इंडिया' अभियान व स्टेनलेस इस्पात उद्योग:

इस अभियान से सामान्य इस्पात की माँग तो बढ़ेगी ही, आशा है इससे जंगरोधी इस्पात (स्टेनलेस स्टील) की माँग भी बहुत बढ़ेगी। फिलहाल भारत में स्टेनलेस इस्पात का उत्पादन कुल इस्पात उत्पादन का 4% है, जो वैश्विक स्तर के 2.5% की तुलना में काफी बेहतर है। आज स्टेनलेस इस्पात के लगभग 400 ग्रेड विभिन्न उत्पादों के उत्पादन के लिए उपयोग में लाए जा रहे हैं। भारत में प्रतिव्यक्ति जंगरोधी इस्पात खपत 2.5 किलोग्राम से भी कम है, जबकि यह चीन में 10 किलोग्राम प्रतिव्यक्ति है। लेकिन 'मेक इन इंडिया' अभियान के कारण जो नए कारखाने स्थापित होंगे, उनके लिए जंगरोधी इस्पात की माँग में कई गुना बढ़ोत्तरी होगी। आशा है, भारत में अगले दशक तक जंगरोधी इस्पात की खपत लगभग 6 किलोग्राम तक बढ़ेगी। इसके मद्देनजर नि:संदेह जंगरोधी इस्पात की उत्पादन क्षमता बढ़ानी पड़ेगी। साथ ही इसके लिए देश में अनुसंधान व विकास को बढ़ावा देना होगा और जंगरोधी इस्पात उत्पादन करने वाले कारखानों को क्षमता विस्तार हेतु प्रोत्साहित करना होगा।

'मेक इन इंडिया' अभियान के व्यवधान:

मोदी सरकार के 'मेक इन इंडिया' अभियान का उद्देश्य देश को एक अंतर्राष्ट्रीय मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में विकसित करना और इसके माध्यम से लाखों लोगों को रोजगार मुहैय्या कराना एवं विनिर्माण क्षेत्र में देश के सम्मान में इजाफा करना भी है। किंतु महंगा घरेलू इस्पात इसके लिए बड़ी चुनौती है। इस अभियान के लिए अर्थव्यवस्था के 25 क्षेत्रों का चयन किया गया है। उनके लिए सस्ते दर पर इस्पात उपलब्ध कराना बहुत कठिन है। इसके लिए उन्नत तकनीक और कौशलपूर्ण कामगार वाले संयंत्र ही सक्षम हो सकेंगे। अत: सस्ते दर पर इस्पात उपलब्ध कराने के लिए भारत के पुराने संयंत्रों को अत्याधुनिक बनाना होगा, जिसके लिए बहुत पूँजी निवेश की जरूरत होगी और समय भी लगेगा।

मुक्त व्यापार समझौते के बाद जापान व कोरिया से इस्पात का आयात सस्ता हो गया है। चीनी इस्पात उत्पादक भारत में अपने निर्यात को बढ़ाने में कामयाब होते दिख रहे हैं। वर्ष 2013-14 के दौरान चीन से इस्पात का आयात 1.7 मिलियन टन से बढ़कर वर्ष 2014-15 तक 3.5 मिलियन टन तक पहुँच चुका था। लेकिन अपनी घटती प्रतिस्पर्द्धी क्षमता के बावजूद भारतीय इस्पात उद्योग में क्षमता विस्तार का कार्य हो रहा है और अब भारत अमेरीका को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक बन चुका है।

एक बात का यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है कि भारतीय इस्पात उद्योग को अपनी भलाई के साथ-साथ उपभोक्ताओं की भलाई का ध्यान भी रखना चाहिए। जब हम सस्ते आयात पर संरक्षण का गुहार लगाते हैं, तब हमें अपने उपभोक्ताओं की भलाई पर भी ध्यान देना चाहिए। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि जिस मूल्य और गुणवत्ता के इस्पात का हम आपूर्ति कर रहे हैं, क्या उन्हें उस मूल्य से नीचे और बेहतर गुणवत्ता का इस्पात बनाने व आपूर्ति करने में कोई और देश अथवा प्रतिस्पर्द्धी संगठन सक्षम तो नहीं है?

अन्यथा उपभोक्ताओं के साथ यह अन्याय होगा। इस्पात कंपनियों को संरक्षण प्रदान करने के लिए उपभोक्ताओं की बलि कहाँ तक उचित है? दूसरी बात यह है कि यदि हम किसी देश से सस्ते आयात को रोकते हैं, तो वह देश भी हमारे साथ अन्य उत्पादों के हमारे निर्यातों पर ऐसी ही कार्रवाई कर सकता है। इससे देश के द्विपक्षीय व्यापार पर बुरा असर पड़ता है।

इसी क्रम में एक और चर्चा को विमर्श में लाना आवश्यक है। वह यह है कि सरकार की नई राष्ट्रीय इस्पात नीति के तहत वर्ष 2025-26 तक देश में इस्पात उत्पादन क्षमता को 300 मिलियन टन तक की योजना है। इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए हमें 8 लाख करोड़ रुपए खर्च करने होंगे। लेकिन हालात ऐसे हैं कि बैंक पहले से ही इस्पात क्षेत्र को दिए कर्ज के बोझ से परेशान हैं। मेरी राय यह है कि जब तक भारतीय इस्पात उद्योग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्द्धी न हो जाए, तब तक के लिए ऐसे क्षमता विस्तारण को लंबित रखा जाए।

निष्कर्ष :

उपरेक्त विश्लेषणों को देखते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि बड़ी-बड़ी बाधाओं के बावजूद इस्पात उद्योग 'मेक इन इंडिया' अभियान को सहयोग करने का पूरा हौसला रखता है और विगत कुछ वर्षों से इस क्षेत्र में किए जा रहे क्षमता विस्तार कार्य का लाभ इस अभियान को जरूर मिलेगा। लेकिन इसके लिए सरकार को प्रतिबद्ध रहना होगा और विपक्ष को सहयोग करना पड़ेगा। साथ ही आम जनता एवं रोजगार के इच्छुक युवाओं एवं युवतियों को अपने कौशल में बहुत विकास लाना होगा। साथ ही सरकार एवं उसकी पूरी मशीनरी को ईमानदारी के साथ अपनी जिम्मेदारियों को निभाना होगा। हालांकि कुछ देश विरोधी ताकतों और कुछ नकारात्मक सोच वाले लोगों की वजह से देश के विकास का एजेंडा प्रभावित होता है, फिर भी हमारी सरकारें उन्हें पस्त करने में सक्षम हैं।

- सहायक महाप्रबंधक (डी एण्ड ई)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम - 530031
मोबाइल:+91 9000727251

सीढ़ी

- डॉ अमिता दुबे -

'माँ! तुम उस इंसान से प्रेम करती हो, जिसके साथ पिछले **25** वर्षों से तुम्हारे तलाक का मुकदमा चल रहा है।' बेटी अंशुला का प्रश्न सुनकर अचकचा गयी वसुधा। आज की पीढ़ी कितनी मुँहफट और हिम्मती है। हमारी पीढ़ी में तो माँ से पति के बारे में बात करते हुए भी शर्म आती थी। अम्मा कहती थीं, 'पति-पत्नी के बीच में प्रेम है या नहीं, यह भी कोई पूछने की बात है। यह तो पत्नी के चेहरे पर आया नूर और पति की सेहत ही बता देती है।' चलते फिरते 'आई लव यू' और 'लव यू टू' कहने वाले बच्चे अम्मा के प्रेम की परिभाषा को क्या समझेंगे। अंशुला ने प्रश्न किया है तो उत्तर तो देना ही होगा। एक तो शादीशुदा बेटी का प्रश्न, ऊपर से जब बेटी का घर माँ की शरणस्थली हो, तो ऐसे में बेटी के प्रश्न को टाला नहीं जा सकता।

वसुधा ने गला खंखारा और अंशुला की आतुर दृष्टि से बचते हुए कहा, 'अंशु! वो शख्स जिससे पिछले **25** वर्षों से तलाक का मुकदमा चल रहा है, वह मेरी जिंदगी में उस समय आया, जब मुझे किसी सहारे की बहुत जरूरत थी। तुम्हारे पिता से मेरा विवाह मात्र अठारह बरस की उम्र में हो गया था। एक पारिवारिक शादी में हम मिले थे। तुम्हारे पापा बैंक में नौकरी करते थे। पाँच बरस बहुत अच्छे बीते। वे मेरी जिंदगी के स्वर्णिम वर्ष कहे जा सकते हैं। उसी वर्ष तुम्हारे नन्हे कदम हमारे आँगन में पड़े।

उस वर्ष जब हम तुम्हारे जन्मदिन को यादगार बनाने की योजना बना रहे थे कि तुम्हारी दादी चल बसीं। उनका जाना मानो हमारे घर में मुसीबत का आना था। तुम्हारे पापा अपनी माँ को बहुत प्यार करते थे। उन्हें सँभलने में बहुत दिन लगे। लेकिन समय हर घाव को भर देता है। एक वर्ष और सरक गया। तुम्हारा पहला जन्मदिन हम नहीं मना पाये।

दूसरे जन्मदिन को लेकर अभी योजना बना ही रहे थे कि तुम्हारे पापा का ट्रांसफर हो गया। तुम्हारे पापा के जाने के दिन पास आ रहे थे। मैं बहुत उदास हो रही थी। हालांकि वह आश्वासन दे रहे थे कि रहने की व्यवस्था करके हमें भी शीघ्र वहाँ ले जायेंगे। लेकिन न जाने क्यों मेरा मन अंदर से डर रहा था। बार-बार लग रहा था, कुछ अनहोनी होने वाली है। पापा के जाने के दो दिन पहले, दादा जी किसी से मिलने बाहर गये थे। रात हो गयी नहीं लौटे। अगले दिन भी कुछ पता नहीं चला। तुम्हारे पापा बुझे मन से चंडीगढ़ चले गये। उन्हें नौकरी ज्वाइन करनी थी। दादा जी का कोई पता नहीं चला। कोई कहता, उन्हें संन्यासियों की टोली के साथ देखा गया। कोई कहता, किसी रिश्तेदार के यहाँ गये होंगे। मैं बिल्कुल अकेली, तुम नन्हीं सी। मैं किसी रिश्तेदार को नहीं जानती। जिन्हें जानती थी, उनके यहाँ पता करवा लिया। तुम्हारे पापा से भी कोई संपर्क नहीं था। उनके बैंक का नंबर लगता ही नहीं था। घर के पास के पी.सी.ओ. का नंबर वे ले गये थे, लेकिन कोई फोन नहीं आ रहा था।

इस ऊहापोह में पंद्रह दिन निकल गये। तुम्हारा दूसरा जन्मदिन भी बीत गया। तुम्हारे जन्मदिन के दिन तुम्हारे पापा का फोन आया। तुमसे बात की, मुझसे बात की, जल्दी ही हमें ले जाने की बात कह रहे थे। तुम्हारे दादा जी के बारे में पूछा और फोन कट गया। फिर दोबारा फोन नहीं आया। मुझे कुछ तसल्ली मिली, लेकिन यह तसल्ली क्षणिक थी। दो दिन बाद पापा के बैंक से फोन आया कि उन्होंने आत्महत्या की कोशिश की है। वे अस्पताल में जीवन-मृत्यु के बीच झूल रहे थे।

तुम्हें नानी के पास छोड़ मैं अपने भाई के साथ चंडीगढ़ पहुँची। अस्पताल के जिस वार्ड में भर्ती थे, वहाँ अंधेरा था। रात का समय होने के कारण लगभग सभी मरीज सो रहे थे। उस सन्नाटे को मेरी चीख और सिसकी ने तोड़ा। हमारे पहुँचने से पहले उनकी आँखें पथरा गयी थीं। वसुधा की आँखें बरसने लगीं। अंशुल की भी सिसकी निकल आई। अपने अनदेखे पिता के प्रति सम्मान उमड़ आया। 'फिर क्या हुआ माँ!' अंशुल ने बात आगे बढ़ाने के उद्देश्य से कहा।

'होना क्या था, सब कुछ मानो अपने आप होता चला गया। तुम्हारे पापा का पोस्टमार्टम, अंतिम संस्कार, उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र आदि की कार्यवाहियाँ और बैंक की नौकरी का मिल जाना, फिर अपने शहर जौनपुर में स्थानांतरण। यह सब आगे के **6-8** महीनों में घटता चला गया। कोई कितना किसका साथ देता। तेरी नानी मेरे साथ वर्ष भर रहीं। तुम्हारे तीसरे जन्मदिन के आते-आते मैं फिर अकेली हो गई। अकेला होना मेरी नियति में था और होकर रहा। नीति से कौन लड़ सकता है?

'माँ आप सुधीर अंकल से कब और कहाँ मिलीं?' अंशुला उतावली थी। 'बताती हूँ अंशु! वह भी बताती हूँ, तुम्हारे प्रश्न का पूरा उत्तर दिये बिना मैं मौन नहीं हो सकूँगी। तुम्हारी देखभाल के लिए मैंने दिनभर के लिए एक नौकरानी रख ली थी। मेरे बैंक जाने के बाद वह तुम्हारी देखभाल करती थी। तुम्हें स्कूल भेजती, लेकर आती, खाना बनाती, बरतन आदि भी साफ करती थी। मेरे आने पर चाय पिला कर अपने घर चली जाती।

सुधीर को वही मंगला लेकर आयी थी। उसके गाँव पड़ोस का था। बी.ए. करके प्रशासनिक सेवा में जाना चाहता

था। उसे रहने की जगह की तलाश थी। काम की खोज थी। मंगला ने सुझाया कि वह तुम्हें ट्यूशन पढ़ायेगा। बदले में दादाजी के कमरे में रह लिया करेगा। खाना वह खुद बना लेगा। तेल-घी, गल्ला घर से ले आयेगा और घर के छोटे-मोटे काम भी कर लेगा। 'बहू जी आप मेरे जाने के बाद अकेली हो जाती हो। घर में एक इंसान रहेगा, वक्त जरूरत काम आयेगा। आपके लिए भी सब्जी-भाजी ला दिया करेगा।'

मुझे भी लगा मंगला सही कह रही है। सुधीर आगे के कमरे में रहने लगा, तुम्हें पढ़ाने लगा और धीरे-धीरे घर में समाने लगा। वह मुझसे पाँच साल छोटा था। मेधावी, मेहनती और कवि। बहुत सुंदर कविताएँ लिखा करता था। एक दिन उसकी डायरी मेरे हाथ लग गई। तुम्हें पढ़ाने के बाद वह मेज पर छोड़ गया। शायद जानबूझ कर। डायरी के पहले पन्ने पर लिखा था, वसुधा के लिए। मैं पन्ने पलटती चली गयी उसकी सुंदर लिखावट में लिखी कविताओं में खोती गयी। होश तब आया, जब सुधीर को अपने सामने पाया। वह बहुत प्रेम, समर्पण और आत्मीयता से मेरी ओर देख रहा था। मैं कुछ कहना चाहती थी, इससे पहले उसने मेरे होंठ बंद कर दिये। मैं भी पिघल गयी और पिघलती चली गयी।

बाद में हमने आर्य समाज मंदिर में विवाह कर लिया। मंगला हमारी अभिभावक बनी, कुछ मित्र सुधीर के भी थे। बस इस तरह हमने गृहस्थी की शुरुआत की। तेरी नानी और मामा ने मुझसे रिश्ता तोड़ लिया, जो आज तक नहीं जुड़ सका। जब सुधीर मेरे जीवन में था, तब वे नाराज थे। सुधीर के जिंदगी से निकल जाने के बाद भी उनकी नाराजगी कम नहीं हुई।

तुम्हें याद होगा तुम्हारी शादी में मैंने मामा को बुलाया, वे नहीं आए। उन्होंने तो नानी के मरने की सूचना भी मुझे नहीं दी। जब स्थानांतरण होकर अपने मायके के शहर आई, तो घर जाने का मोह संवरण नहीं कर सकी। माँ से मिलने की उत्कंठा जागी और अपना घर देखने की लालसा हुई, तो बैंक के गेस्ट हाउस में सामान छोड़कर रिक्शा पकड़कर घर गयी। गली के मोड़ पर ही हमारे पुराने नौकर अपने पोते का हाथ पकड़े मिल गए। वे मुझे क्या पहचानते? मैंने उन्हें पहचाना। नाम बताने पर सिर पर हाथ फेरकर सिसकने लगे। 'बिटिया! ऐसी भी क्या नाराजगी? माँ के मरने पर भी नहीं आयी।'

मैं आवाक्! 'क्या माँ अब नहीं रही काका?' 'हाँ बिटिया तेरी माँ को गये तो चार- पाँच बरस बीत गये। अब तो इस घर में कोई नहीं रहता। भइया दिल्ली चले गये। मकान का एक कमरा बंद है। बाकी में किरायेदार हैं। साफ-सफाई करने के लिए चाबी मुझे दे रखी है। वही कराकर लौट रहा था। चलो बिटिया कमरा खोल देता हूँ। कोई व्यवस्था यहाँ नहीं है, तुम्हें परेशानी तो होगी। लेकिन मैं हूँ न और यह रवि सब निपटा देगा।' उन्होंने पोते की ओर देखते हुए कहा और गली की ओर मुड़ गये। वसुधा का गला रुँध गया। 'माँ' अंशुला ने टोका।

'मैं तो गली से ही लौट आई। काका के बहुत रोकने पर भी नहीं रुकी। जिस घर में माँ नहीं, भाई नहीं उनसे कोई वास्ता नहीं, उस घर की दीवारें देखने क्या जाना। तुम्हें याद होगा कक्षा आठ के बाद तुम वनस्थली चली गयी थी, आगे की पढ़ाई करने। मैं हर तीन वर्ष के बाद एक शहर से दूसरे शहर भटकती रही और बाद में अब तुम्हारे साथ हूँ।' वसुधा ने थूक निगला और बात को आगे बढ़ाया।

सुधीर से विवाह कर मुझे वह सब मिला, जो एक पत्नी को मिलता है। तुम्हें वह पिता से बढ़कर प्यार करता था। उसी ने शर्त रखी थी, 'वसु! हम दूसरे बच्चे को जन्म नहीं देंगे, कहीं हमारी अंशुला के साथ अन्याय न हो जाये। मैं उसका सपना जानती थी, उसे मैं ने पूरा सहयोग दिया लखनऊ भेजा आई.ए.एस. की कोचिंग करने के लिए। घर की सारी चिंताओं से मुक्त होकर वह पढ़ाई में लग गया। महीना पन्द्रह दिन में एक दिन के लिए चक्कर लगाता। मुझसे शादी करने के बाद उसने अपने घर जाना बंद कर दिया था। क्योंकि वहाँ उसे एक विधवा, वह भी एक बच्चे की माँ से शादी करने के लिए ताने मिलते थे। और जब मेरी मायके की देहरी मेरे लिए बगानी हो गयी थी तो सुधीर के माता-पिता का नाराज होना स्वाभविक ही था।

तीसरे प्रयास में वह भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुन लिया गया। उसका सपना पूरा हो चला था। ट्रेनिंग फिर पोस्टिंग। समय तेजी से सरकने लगा था। जब वह अपनी पढ़ाई में संघर्ष

कर रहा था, उस समय कहता था - 'वसु! अगर मैं कुछ बन सका तो यह तुम्हारी तपस्या का प्रतिफल होगा। अगर तुम मेरी जिंदगी में न होती, तो मैं शायद छोटी-मोटी नौकरी भी नहीं कर पाता आदि-आदि।' वसुधा की आँखें सपाट थीं।

ट्रेनिंग पूरी करने और नियुक्ति पाने के बीच में वह एक बार घर आया। मैंने कहा तुम ज्वाइन कर लो, फिर मैं उसी शहर में ट्रांसफर ले लूँगी। अंशु की पढ़ाई के लिए भी सोचना है। उसने हाँ-हूँ भी नहीं की। मुझे कुछ खटका हुआ। मन का संदेह प्रकट करने की इच्छा हुई, फिर भी चुप रही।

वह तीसरे दिन लगा गया। कई महीने बीत गये, कोई सूचना नहीं। एक दिन मंगला चाची समाचार लेकर आयी सुधीर की शादी हो रही है। लड़की आई.ए.एस. है। उनका आग्रह था कुछ करो। वह उसका पता भी लेकर आयी थी। मात्र एक महीने का समय था। मैंने एक महिला वकील से बात की। पूरी बात सुनकर उसने सुझाव दिया कि पहले मुझे सुधीर से मिल लेना चाहिए। उसके सुझाव पर मैं उससे मिलने चली गयी। वैसे भी जिलाधिकारी आवास ढूँढ़ना कौन कठिन होता है? मैं गेट पर पहुँची तो वह तैयार होकर गाड़ी में बैठने जा रहा था। मुझे अचानक देखकर हड़बड़ा गया और ड्राइवर को कुछ इंतजार करने को कहकर मुझे लेकर अंदर कमरे में चला आया। छूटते ही पूछा - 'यहाँ कैसे? तुम्हें पता कैसे मिला? क्या काम है?'

मैं सतर्क थी, लेकिन निराश होने लगी थी, 'सुधीर! एक पत्नी को अपने पति के पास आने के लिए किसी काम की जरूरत होती है क्या?' 'पत्नी... कैसी पत्नी... किसकी पत्नी? यहाँ यह सब नहीं चलेगा, यह डी एम का बंगला है। यहाँ सब मुझे अविवाहित जानते हैं।' सुधीर के मुख पर हँसी नहीं थी।

'और यह भी कि डी एम साहब की शादी होने वाली है।' वसुधा का स्वर कुछ तीखा था।' 'हाँ होने वाली है। मेरी होने वाली पत्नी इलाहबाद की डी एम है। हम ट्रेनिंग में साथ-साथ थे। वहीं हमने जीवन भर साथ-साथ रहने का निश्चय किया।' सुधीर क्रूर हो रहा था।

'और मैं? मैं क्या हूँ।' वसुधा ने प्रश्न किया। 'तुम क्या हो, यह तुम जानो। तुम उस समय मेरी जरूरत थीं। आज नहीं हो। तुम्हें भी सहारे की जरूरत थी। अब तुम दूसरा सहारा ढूँढ़ लो। तुम्हारी जैसी दीनहीन महिला का हाथ थामने वाले बहुत मिल जायेंगे। मुझे राखी जैसी जीवन साथी की चाह है। तुम्हारी जैसी माता जी टाइप लड़की का मेरे जीवन में क्या स्थान है? जान लो, तुम मेरा क्या बिगाड़ पाओगी? मैंने अपने फार्म में वैवाहिक स्थिति 'अविवाहित' लिखा है। चलो अब निकलो, यहाँ से मुझे देर हो रही है।' मेरे आँसुओं की परवाह किये बिना वह मुझे बाहर का रास्ता दिखा रहा था।

मैं लुटी-पिटी सी लौट आई। उसने मुझे अपनी उन्नति के मार्ग में सीढ़ी बनाकर आगे बढ़ने का रास्ता खोजा और शिखर पर पहुँचकर सीढ़ी को पैर से ठेल दिया। लेकिन मैं सीढ़ी नहीं थी। मुझे बहुत शीघ्र कार्यवाही करनी थी। वकील से मिलकर उसे और नियुक्ति विभाग को नोटिस भेजा। साथ में विवाह प्रमाण पत्र की छायाप्रति भी संलग्न कर दी।

इस कार्यवाही से उसके विवाह की तिथि टल गयी, जो आज तक टलती चली जा रही है। नियुक्ति में 'फ्राड' या गलत बयानी का केस अलग से चला। बाद में उसने भूल सुधार कर विवाहित होना तो स्वीकार किया और तलाक की माँग की। मैंने जज साहब के सामने कहा, 'मुझे तलाक नहीं चाहिए। ये चाहें तो मेरे साथ रहें या मुझे अपने साथ रखें।'

तलाक नहीं हो सका। न तलाक हुआ, न सुधीर की दूसरी शादी हुई। सुना है, उसकी होने वाली पत्नी अब तक दो बच्चों की अम्मा बनकर किसी और जिले के जिलाधिकारी की बेगम बन चुकी है। वह मुझसे पूछता है कि मैं चाहती क्या हूँ? मैं कहती हूँ, 'कुछ भी नहीं जैसे चल रहा है वैसे क्या बुरा है।' वह कहता है, 'तलाक क्यों नहीं दे देती? जितने पैसे चाहिए ले लो।' मैं कहती, 'जितने पैसे मैंने तुम पर खर्च किये, उनका ब्याज अभी बढ़ रहा है।' तलाक का मुकदमा दर पेशी-दर-पेशी बढ़ता चला गया। समय सुधीर के हाथ से निकलता चला गया। मेरे पास खोने को था ही क्या?' वसुधा ने मानो कथा पूरी की।

माँ मेरा प्रश्न फिर वही है, 'आप सुधीर अंकल से प्रेम करती थीं या पापा से।' वसुधा ने निश्वास छोड़ी, 'बेटी! हम जब कोई साड़ी बाजार में खरीदने जाते हैं और एक ही निगाह में वह साड़ी पसंद आ जाती है और बाद में पता चलता है कि उस साड़ी में छेद है, तो वह साड़ी हमें छोड़नी पड़ती है। उसकी जगह खरीदी गयी दूसरी साड़ी जब पहनी जाती है तो वह दूसरी पसंद ही रहती है। जब जब उसे बरता जाता है, तब तब पहले के छूटने का दुःख होता है। वही हाल सुधीर से मेरे प्रेम का था। अगर उसे प्रेम कहा जाय तो मैं ने पूरी ईमानदारी से तुम्हारे पापा से प्रेम किया। वे मुझसे अलग कभी नहीं हुए। यह अलग बात है कि उन्होंने मुझे बीच मँझधार में छोड़ दिया। अपनी जीवन-लीला समाप्त करने से पहले मेरे बारे में, तुम्हारे बारे में नहीं सोचा। लेकिन वे मरे मन मंदिर के देवता थे और हैं।

रही सुधीर की बात जब तक वह मेरे साथ रहा, उसने मेरे अंदर की सुकुमार लड़की को जीवन्त किया। लेकिन यह सुकुमार लड़की सीढ़ी नहीं बन सकती थी। अब मैं दृढ़ता से खड़ी हूँ। प्रेम मेरी कमजोरी नहीं, मेरी ताकत है।

- 'नारायण आश्रम'
पिकप भवन के पीछे
विभूति खंड, गोमती नगर, लखनऊ
मोबाइल: +91 9415551878

आर आई एन एल में सुरक्षा प्रबंधन

- श्री ए ए गिरिनाथन* एवं श्रीमती वी सुगुणा** -

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में व्यावसायिक सुरक्षा व स्वास्थ्य, संगठन के प्रबंधन का महत्वपूर्ण अंग है। संगठन में हर स्तर पर सुरक्षा को अत्यधिक व उच्च प्राथमिकता दी जाती है। स्थापना के समय से ही संगठन में राष्ट्रीय इस्पात नीति के अनुरूप सुरक्षा व स्वास्थ्य से संबंधित परिकल्पित समग्र नीति का शत-प्रतिशत अनुपालन किया जा रहा है। साथ ही संगठन द्वारा **2002** से मेसर्स ब्यूरो वेरिटास सर्टिफिकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड (बी वी सी आई) द्वारा प्रमाणित उन्नत सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली, अर्थात ओ एच एस ए एस-**18001:2007** को अपनाया गया है। देश में आर आई एन एल ही एकमात्र ऐसा समग्र इस्पात संयंत्र है, जिसे व्यावसायिक स्वास्थ्य व सुरक्षा प्रबंधन पद्धतियों के लिए ओ एच एस ए एस **18001** का मानक प्रमाणपत्र प्राप्त है। साथ ही कंपनी द्वारा 'शून्य दुर्घटना' के लक्ष्य की प्राप्ति व सुरक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति के क्रम में विभिन्न सुरक्षा प्रबंधन पद्धतियों का अनुपालन किया जा रहा है।

संगठन द्वारा संयंत्र के सुरक्षा निष्पादन में लगातार सुधार हेतु विभिन्न उपाय किये जाते हैं। सुरक्षा मानकों के कार्यान्वयन, जोखिम नियंत्रण के अनुश्रवण से संबंधित निम्नलिखित प्रयासों व अन्य प्रगामी प्रयासों के परिणामस्वरूप संभावित जोखिमों का निवारण किया जाता है।

प्रणाली व पद्धति

ओ एच एस ए एस: **18001** के कार्यान्वयन से संगठन में सुरक्षित कार्य वातावरण सुनिश्चित हुआ है, और उससे सुरक्षा संस्कृति व सुरक्षा के सभी मानकों में महत्वपूर्ण परिवर्तन संभव हो पाया है। आर आई एन एल में ओ एच एस ए एस **18001** प्रणाली के अनुसरण से निम्न प्रकार की दुर्घटना निवारक सुरक्षा प्रबंधन पद्धतियाँ सुनिश्चित हो पाई हैं:

- आर आई एन एल में राष्ट्रीय इस्पात नीति के अनुरूप सुरक्षा व स्वास्थ्य नीति निर्धारण।
- जोखिम को पहचानकर उसके प्रभाव का आकलन करना (एच आई आर ए-हीरा) - जोखिम नियंत्रण उपायों को सुनिश्चित करने के अंतर्गत **5600** से अधिक जोखिमों को पहचानकर उनके प्रभाव का मूल्यांकन किया गया।
- आंतरिक व बाह्य लेखापरीक्षकों द्वारा आवधिक लेखापरीक्षा।
- उच्च प्रबंधन स्तर पर आवधिक बैठकों के माध्यम से सुरक्षा प्रणाली की नियमित समीक्षा।
- विधिक आवश्यकताओं का अनुपालन।
- ओ एच एस ए एस के अंतर्गत संयंत्र के बड़े व छोटे सभी विभागों के लिए मानक प्रचालन पद्धति (एस ओ पी), मानक अनुरक्षण पद्धति (एस एम पी) और सुरक्षित कार्य अनुदेशों (एस डब्ल्यू आई) को शामिल करते हुए मानक कार्य पद्धति बनायी गयी है और प्रत्येक विभाग में इसका प्रभावी कार्यान्वयन भी किया जा रहा है।

अनुश्रवण

- हर महीने उच्च प्रबंधन स्तर पर, अर्थात विभागाध्यक्ष संकर्म सहित अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, अन्य निदेशकों द्वारा सुरक्षा निष्पादन की नियमित समीक्षा की जाती है।
- विभागाध्यक्षों की साप्ताहिक संयोजन समिति में संकर्म विभाग के अध्यक्ष, कार्यपालक निदेशक (संकर्म)-प्रभारी, द्वारा सभी कार्यपालक निदेशकों व महाप्रबंधकों की उपस्थिति में सुरक्षा निष्पादन की समीक्षा की जाती है।
- सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग के प्रतिबद्ध कार्यपालक समूह द्वारा पूरे संयंत्र में सुरक्षा के मामलों का सतत अनुश्रवण किया जाता है और दुर्घटनाओं के निराकरण के क्रम में वरिष्ठ प्राधिकारियों व उच्च प्रबंधन के परामर्श से ठोस उपाय किये जाते हैं।
- संगठन के सभी प्रमुख विभागों में संबद्ध क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारियों द्वारा छः महीनों में एक बार सुरक्षा लेखापरीक्षा आयोजित की जाती है और विधिक आवश्यकताओं के अनुपालन के अंतर्गत किसी बाह्य अभिकरण द्वारा वर्ष में एक बार सुरक्षा लेखापरीक्षा आयोजित की जाती है।

उपयुक्त प्रशिक्षण से सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना

- आर आई एन एल में सुनियोजित प्रशिक्षण पद्धति का अनुसरण किया जाता है। संगठन के कर्मचारियों व संविदा कर्मचारियों में सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु नियमित सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रशिक्षण कार्यशाला जैसे कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।
- बाह्य सुरक्षा विशेषज्ञों द्वारा प्रबंधन विकास केंद्र व तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान के सहयोग से सुरक्षा संबंधी विभिन्न विषयों पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।
- हर संविदा कर्मचारी को गेट पास जारी करने से पहले एक दिवसीय सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होना अनिवार्य होता है। साथ ही कर्मचारी को कार्यस्थल पर नियुक्ति देने से पहले सुरक्षा अधिकारी एवं अभियंता प्रभारी द्वारा विशिष्ट कार्य व कार्यस्थल से संबंधित विशिष्ट प्रशिक्षण एवं सुरक्षा संबंधी जानकारी दी जाती है।

- सभी संविदा कर्मचारियों को पुनश्चर्या सुरक्षा प्रशिक्षण दिया जाता है और ऐसे प्रशिक्षण की पूर्ति के उपरांत ही उनके गेट पास नवीकृत किये जाते हैं। विशिष्ट कार्य व विशिष्ट कार्य स्थल प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारियों को ही कार्यस्थल पर कार्य की अनुमति दी जाती है।
- ऊँचाइयों पर कार्य हेतु नियुक्त संविदागत कर्मचारियों को कार्य आरंभ करने से पहले उपयुक्त प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्हें पेंटिंग व रूफ शीटिंग जैसे कार्य करते समय सुरक्षा पूर्वोपायों का यथासमय प्रशिक्षण दिया जाता है।

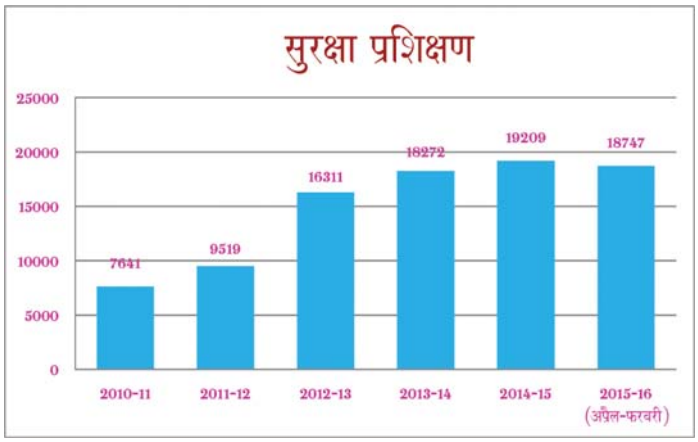

सुरक्षा समितियाँ

व्यावसायिक स्वास्थ्य व सुरक्षा प्रबंधन में कर्मचारियों की भागीदारी को बढ़ावा देने एवं शून्य दुर्घटना लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक केंद्रीय सुरक्षा समिति तथा मान्यता प्राप्त श्रमिक संघ के प्रतिनिधियों व प्रबंधन के प्रतिनिधियों की समान भागीदारी के साथ 30 विभागीय सुरक्षा समितियों का गठन किया गया है।

कार्मिक संरक्षा उपकरण (पी पी ई) व सुरक्षा उपकरण

- विभिन्न कार्यों के निर्वाह के समय प्रमाणित सुरक्षा उपकरणों का उपयोग सुनिश्चित किया जाता है।
- कार्यस्थल पर सभी कर्मचारियों को आवश्यकता के अनुरूप सुरक्षा हेल्मेट, सुरक्षा जूते, चश्मे, दस्ताने, एप्रन, सुरक्षा बेल्ट, नोज मॉस्क, इयर मॅफ आदि जैसे उपयुक्त कार्मिक संरक्षा उपकरण दिये जाते हैं।
- इन उपकरणों के प्रयोग व आवश्यकता की जानकारी कार्यशालाओं व कक्षा प्रशिक्षण के माध्यम से दी जाती है।
- समय-समय पर आवश्यकता के अनुरूप नये कार्मिक सुरक्षा उपकरणों की व्यवस्था की जाती है।
- मशीनों के डिजाइन से लेकर उनकी स्थापना एवं प्रचालन, सभी स्तरों पर सुरक्षा को सुनिश्चित करने के क्रम में पर्याप्त ध्यान दिया जाता है। संयंत्र में इंटर-लॉक, लिमिट स्विच, बैटरी बैकअप प्रणाली, आपातिक पुश बटन, सुरक्षा वॉल्व, रेलवे के यातायात की रूट रिले इंटर सुरक्षा, पुल कॉर्ड, एर्थ फॉल्ट संरक्षा, फ्लेम प्रूफ इलेक्ट्रिकल फिटिंग्स आदि की व्यवस्था की गई है और उनके प्रचालन का आवधिक परीक्षण किया जाता है और आवश्यक सुधारात्मक उपाय किये जाते हैं।

दुर्घटनाओं का विश्लेषण व जाँच

- सभी दुर्घटनाओं व दुर्घटना के संभावित मामलों की जाँच व बृहद विश्लेषण किया जाता है और सभी कर्मचारियों को सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग के पोर्टल के माध्यम से दुर्घटना विश्लेषण व इस संबंध में किये जानेवाले उपायों की जानकारी दी जाती है।
- सभी दुर्घटनाओं व दुर्घटना के संभावित मामलों का विश्लेषण करके आवश्यक निवारक उपायों हेतु विभागीय सुरक्षा समिति, केंद्रीय सुरक्षा समिति व विभागाध्यक्षों की बैठक में विचार-विमर्श किया जाता है।
- ऊँचाइयों, दुष्कर कार्यक्षेत्रों में काम करने वाले कर्मचारियों को संभावित दुर्घटना कारणों व विश्लेषणों के आधार पर विशेष सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से व्यावहारिक सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया जाता है।

विधिक अनुपालन

- ओ एच एस ए एस 18001 की आवश्यकता के अनुरूप सभी लागू विधिक व अन्य आवश्यकताओं, जैसे फैक्टरी अधिनियम, 1948 और आंध्र प्रदेश फैक्टरी नियम, 1950 का अनुपालन किया जाता है।
- कार्यस्थल पर आग की दुर्घटना, विद्युत आघात, गैस के रिसाव, ऊँचाइयों से गिरने, जलने आदि से बचाव की तैयारी के जायजा के क्रम में विभागों व संयंत्र स्तर पर आपातिक मॉक ड्रिल आयोजित किये जाते हैं। फैक्टरी विभाग के प्राधिकारियों की उपस्थिति में बचाव के उपायों की जाँच हेतु संयंत्र स्तर पर वर्ष में दो मॉक ड्रिल आयोजित किये जाते हैं। इन मॉक ड्रिलों के दौरान प्राप्त फीडबैक का विश्लेषण किया जाता है और विश्लेषण रिपोर्ट के आधार पर उन क्षेत्रों पर ध्यान दिया जाता है, जहाँ किसी तरह की कमियाँ पाई जाती हैं।

सुरक्षा हेतु हाल ही में किये गये नये उपाय

- अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक द्वारा निदेशकगण के साथ सुरक्षा निष्पादन की समीक्षा की पद्धति लागू की गई। सभी दुर्घटनाओं व संभावित दुर्घटनाओं बचने से संबंधित मामलों व उनके निवारण हेतु आवश्यक सुधारात्मक उपायों की समीक्षा की जाती है।
- प्रौद्योगिकी प्रदाता व आर आई एन एल द्वारा नई इकाइयों के प्रवर्तन से पूर्व संयुक्त रूप से प्री-स्टार्ट अप की तैयारी का जायजा लिया जाता है।
- सभी नई इकाइयों के लिए प्रवर्तन पूर्व सुरक्षा लेखापरीक्षा, सभी नई प्रवर्तित इकाइयों के लिए कर्मचारियों के विशेष दायित्वों सहित प्रोटोकॉल निर्धारित किये जाते हैं।

- सभी नई इकाइयों के प्रवर्तन हेतु अन्य पक्ष के विशेषज्ञों द्वारा जोखिम मूल्यांकन व निवारण योजना बनाई जाती है।
- सभी भारी मरम्मतों व पुनरोद्धार के दौरान चौबीसों घंटे सुरक्षा का अनुश्रवण किया जाता है और इस आशय के लिए विशेष रूप से सुरक्षा अधिकारियों को नियुक्त किया जाता है। ऑक्सीजन संयंत्र, धमन भट्ठी जैसी बहुत ही महत्वपूर्ण इकाइयों के लिए इस्पात संयंत्र की अन्य इकाइयों से विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाता है और उनके अनुभव से लाभ उठाया जाता है।
- प्रबंधन विकास केंद्र व तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान के सहयोग से ऊँचाई व दुष्कर कार्यक्षेत्रों में कार्य, रसायनिक सुरक्षा, विधिक पहलू और व्यवहार आधारित सुरक्षा प्रबंधन (बी बी एस एम) जैसे विभिन्न विषयों पर बाह्य विशेषज्ञों द्वारा विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।
- सभी घटनाओं व निवारक उपायों का विवरण एवं उनके फोटोग्राफ आदि सभी कर्मचारियों की जानकारी हेतु सुरक्षा पोर्टल में रखे जाते हैं।
- विषम कालावधि में आपातिक तैयारी के परीक्षण हेतु रात्रि समय मॉक ड्रिल की पद्धति लागू की गई है।
- संयंत्र में विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारियों के सुरक्षा ज्ञान का सर्वेक्षण किया जाता है। तदनुसार सभी कर्मचारियों के लिए ओ एच एस ए एस, एम एस डी एस, विधिक व अन्य आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।
- वी एस पी में 'औद्योगिक सुरक्षा की प्रभावकारिता को बढ़ाने के संबंध में फ्रंटलाइन प्रबंधकों/पर्यवेक्षकों की चुनौतियाँ' विषय पर पहली बार संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में लगभग **400** कर्मचारियों ने भाग लिया।
- संयंत्र के नीतिगत क्षेत्रों में सुरक्षा से संबंधित अनेक होर्डिंग लगाये गये हैं।
- खुले विज्ञापन व कैंपस में साक्षात्कार आयोजित करके योग्य व अनुभवी सुरक्षा अधिकारियों को नियुक्त किया गया है।
- वी एस पी में पहली बार प्रबंध प्रशिक्षणार्थी की सामान्य नियुक्ति की पद्धति के अलावा आवश्यक योग्यता मापदंड के अनुरूप उपयुक्त प्रबंध प्रशिक्षणार्थी (सुरक्षा) की खुले विज्ञापन के माध्यम से भर्ती की पद्धति लागू की गई है।
- सभी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं के नियंत्रण को मजबूती प्रदान करने के क्रम में हेजोप, हेजान, क्यू आर ए सहित व्यापक जोखिम मूल्यांकन और परिणाम विश्लेषण अध्ययन कार्य किये जाते हैं।
- सुरक्षा नियमों के उल्लंघन के संदर्भ में अर्थदंड लगाने की पद्धति भी लागू की गई है।
- इंट्रानेट के माध्यम से संभावित दुर्घटनाओं से बचने संबंधी सभी मामलों की ऑनलाइन में रिपोर्टिंग पद्धति बनाई गई।
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दिशानिर्देशों के अनुरूप आपदा/आपातकालीन प्रबंधन योजना (डी ई एम पी) में संशोधन किया गया है।
- संयंत्र के चिंतनीय क्षेत्रों में सुरक्षा से संबंधित 'करें व न करें' एवं 'क्षेत्र विशेष सुरक्षा पूर्वोपायों' के बोर्ड लगाये गये।
- सभी आगंतुकों की जानकारी के लिए आंतरिक सुरक्षा पर फिल्म बनाई गई है।
- फ्रंटलाइन अधिकारियों की जानकारी हेतु सुरक्षा पुस्तिका तैयार किया गया है और उसे सुरक्षा पोर्टल में अपलोड किया गया है।
- सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में रेट्रो रिफ्लेक्टिव साइनबोर्ड लगाये गये।
- संकर्म सुरक्षा, परियोजना सुरक्षा व खान सुरक्षा का समाकलन किया जाता है।
- अनुभवी प्राधिकारियों को नियुक्त करके सुरक्षा विभाग को सशक्त बनाया गया है।

आर आई एन एल में सुरक्षा निष्पादन संकेतक, अर्थात एल टी आई एफ आर (Lost Time Injury Frequency Rate) क्रियान्वित किया गया है। इसके अनुरूप दुर्घटना दर में **2011-12** के दौरान **1.20** की तुलना में **2015-16** (फरवरी तक) में **0.18** तक गिरावट आई, जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बेंचमार्क है। इससे संबंधित विवरण निम्नलिखित चित्र में देखा जा सकता है:

आर आई एन एल में दुर्घटना आवृत्ति दर

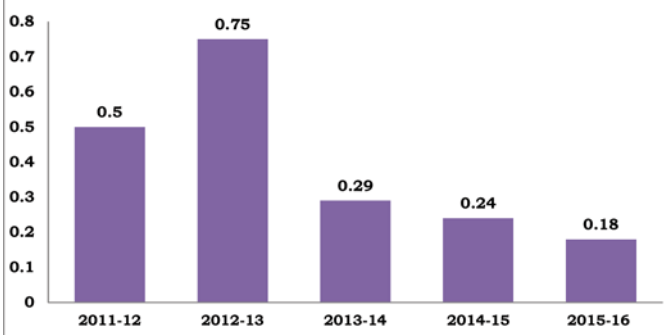

आर आई एन एल में सुरक्षा को हमेशा से प्राथमिकता दी जाती रही है। समय-समय पर निरीक्षण एवं लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों के अनुरूप उचित कार्रवाई की जाती है।

- उप महाप्रबंधक (सुरक्षा)*
उप प्रबंधक (राजभाषा)**
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
मोबाइल: +91 9866198747*
+91 9949844146**

श्री सुवेश यादव की रचनाएँ

दोहे

जीवन के पतझड़ में, जैसे हरित बसंत।
प्यार एक एहसास है, जो समझा वह संत।। (1)

दुनियादारी सीख ली, तो क्या सीखे यार।
प्यार निभाना सीखते, तो मिलता संसार।। (2)

राजमार्ग चाहे नहीं, चला पंथ गुमनाम।
प्रेम गली शूलों भरी, आयी उसके काम।। (3)

दीवाने का घर जला, जली न सांची प्रीत।
जग की उल्टी रीत में, उसकी पूरी जीत।। (4)

ना हमने चिट्ठी लिखी, ना भेजे पैगाम।
बिना बुलाए आ गयी, यादें कुछ गुमनाम।। (5)

तेरी सांची प्रीत को, अब तक रहा सहेज।
चाहत की सौगंध है, यादें यूँ ही भेज।। (6)

जल में उछली मीन तो, आयी तेरी याद।
जितनी ही खामोशियाँ, उतने ही संवाद।। (7)

कभी गजल की शक्ल दूँ, कभी लिखूँ नव गीत।
दोहों में साझा करूँ, अपनी सांची प्रीत।। (8)

बाहर से अनबूझ हूँ, यूँ ना मुझको देख।
बाँच सके तो बाँच ले, अंतस के आलेख।। (9)

सादा सा इंसान हूँ, ज्यादा नहीं शऊर।
दुनियादारी का नमक, मुझमें नहीं हुजूर।। (10)

शायद उनकी नजर में, सफल नहीं मैं आज।
लेकिन उनको कब दिखा, मेरे सिर का ताज।। (11)

नैतिकता बिकने लगी, गिरवी रखे उसूल।
आमों वाले पेड़ पर, लगने लगे बबूल।। (12)

धोखे और फरेब का, ऐसा फैला रोग।
संबंधों की पीठ पर, छुरा घोंपते लोग।। (13)

रिश्तों पर बाजार का, ऐसा चढ़ा खुमार।
विज्ञापन में देखिए, पति पत्नी का प्यार।। (14)

काश हमारी आँख में, होता ऐसा नीर।
उनकी होती वेदना, हमको होती पीर।। (15)

जनम लिया जिस कोख से, जिससे तेरा अर्थ।
वही लगे क्यों बोझ सी, वही लगे क्यों व्यर्थ।। (16)

कुछ तो सोचो सहचरी, कैसे तोड़ूँ नेह।
पायी जिससे जिंदगी, पायी जिससे देह।। (17)

बाबू जी जब तक रहे, घर में रहा उजास।
रहे लुटाते उम्र भर, मुट्ठी का आकाश।। (18)

याद आ रहे वे सभी, खट्टे मीठे बैन।
बाबूजी की याद में, बरस रहे हैं नैन।। (19)

उस आँगन की पीर को, कौन सकेगा माप।
जिस आँगन को लग गया, बँटवारे का शाप।। (20)

घर को कभी न बाँटना, हरदम रखना ध्यान।
बिखरे तिनके जोड़ना, नहीं बहुत आसान।। (21)

बेशक वो नादान है, या थोड़ा मजबूर।
समय संग बदला नहीं, उसका यही कसूर।। (22)

गजलें

(एक)

चलो अब मौन तोड़ो तुम नदी का शोर हो जाओ,
सफर में रात काली हो, तो उजली भोर हो जाओ।
क्षितिज के पार भी दरिया, गगन के पार भी धरती,
पतंगें खोलकर देखो तुम उनकी डोर हो जाओ।
अवामी रेत है प्यासी अमन की फसल सूखी है,
वतन की आन की खातिर घटा घनघोर हो जाओ।
जिगर में आग हो लेकिन नयन में नीर भी रखना,
निकलो तंग गलियों से शहर का छोर हो जाओ।
लिखो अब और लिखो तुम कि गजलों का फलक लिखो,
कभी मायूस ना होना अगर एग्नोर हो जाओ।

(दो)

जीवन तो है ख्वाब सरीखा क्या खोना क्या पाना जी,
जब तक साँसे प्यार किए जा अपना यही तराना जी।
आया था खाली का खाली हाथ पसारे चला गया,
आखिर क्यूँ दौलत के पीछे हर कोई दीवाना जी।
लाख मुकदमें झूठे जीतो दुनिया के न्यायालय में,
ऊपर वाले के कोरट में चलता नहीं बहाना जी।
जो आँखों से देख लिया है बस केवल वो ही सच है,
सुनी सुनाई बातों का तो झूठा तीर निशाना जी।
पाने की ही चाह ना कर तू खोने की परवाह न कर,
काँटे चुनना फूल खिलाना हँसना और हँसाना जी।

(तीन)

उम्मीदें हरियाने दे,
बीत गया जो जाने दे।
कुंदन बनकर दमकेगा,
तन को और तपाने दे।
माटी के शहजादे को,
फौलादी बन जाने दे।
तोड़ पुरानी दीवारें,
नयी रोशनी आने दे।
कब तक ऐसे मौन रहूँ,
मुझको खुलकर गाने दे।

(चार)

पतझड़ में मधुमास लिखेंगे,
सच की नई तलाश लिखेंगे।
युग के कोरे पन्नों पर हम,
वर्तमान इतिहास लिखेंगे।
बूढ़ा भारत रोग पुराने,
दवा दर्द की खास लिखेंगे।
नई हवा के मुक्त परिंदे,
जीने का एहसास लिखेंगे।
नयी सोच के कलमकार हैं,
गजलों का आकाश लिखेंगे।

(पाँच)

जितना जाना माना वो,
उतना ही अंजाना वो।।
सबकी खातिर भूल गया,
अपना सही ठिकाना वो।।
मक्कारी ऐय्यारी में,
चूका हुआ निशाना वो।
सागर जितना गहरा है,
बेशक नहीं सयाना वो।
उसे पहेली न समझे,
पूरा इक अफसाना वो।

(छ:)

जंगल राज सही है क्या,
बिगड़े साज सही है क्या।
अंधा औ लूला राजा,
सिर पे ताज सही है क्या।
रिश्वतखोरी मक्कारी,
खुजली खाज सही है क्या।
थाली है खाली खाली,
महँगा प्याज सही है क्या।
सरेआम चौराहों पे,
लुटती लाज सही है क्या।

(सात)

गिरकर जो उठ खड़ा हुआ,
आखिर में वो बड़ा हुआ।
कालजयी कहलाता है,
हालातों से लड़ा हुआ।
काली रातें आईं पर,
चाँद नगीना जड़ा हुआ।
गहरे खोजा तब पाया,
जल में मोती पड़ा हुआ।
कलम नहीं वो बेचेगा,
वो भी जिद पर अड़ा हुआ।

(आठ)

भटका था अब आया हूँ,
तेरा ही हमसाया हूँ।
एक नहीं सौ बार सहे,
मुश्किल से बच पाया हूँ।
काँटे बोये जाल बुने,
करनी पर पछताय हूँ।
जज्बातों के दरिया से,
सच्चे मोती लाया हूँ।
सारा जीवन बीत गया,
दिल की अब सुन पाया हूँ।

नवगीत

भरी दुपहरी सूरज डूबा
कैसे ये अंधियार हटे,
धरती का अंतस काँपा है
कैसे काली रैन कटे।
तरुओं के सिंहासन डोले
हिमशिखरों के आसन डोले
शापित मानवता थर्रायी
घोर कालिमा चहुँ दिश छायी।
लोहू से लथपथ जगती के
कैसे ताजे घाव मिटें।
गीली पलकों में अटका-सा
काला सपना दीख रहा है
पीड़ाओं का ज्वार उठा है
खड़ा हिमालय चीख रहा है।
आशाओं के दरपन टूटे
जीने के एहसास घटे।
मन की छत को तन की पुख्ता
दीवारों से जोड़े रखना
हृदय तंतुओं से जीवन के
संवेदन को जोड़े रखना।
संभव है रिश्तों की खाई
शायद अब की बार पटे।

हिंदी

एक घना जंगल है
जंगल में चिड़िया है
चिड़िया का कुनबा है।
बहुत सरीला गाती है चिड़िया
चिड़िया गाती है तो खिल उठता है जंगल
चिड़िया गाती है इसलिए जंगल हरा भरा है।
चिड़िया का सारा कुनबा
चिड़िया का ही दिया खाता है
किंतु बोली पराए जंगल की बोलता है
बहुत दु:खी है चिड़िया।
फिर भी न जाने क्यूँ
चिड़िया जंगल से बँधी हुई है
चिड़िया जंगल को छोड़ नहीं सकती
जंगल चिड़िया को छोड़ सकता है।

- ग्राम: शीशपुर
पोस्ट: करबिगवाँ
कानपुर-208001, उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 8874921985

श्री शिव डोयले की कविताएँ

फूल पलाश का

वह कर रही है इंतजार उस प्रेमी का
जो गया था वादा करके
जल्दी लौट आऊँगा पास तुम्हारे
पलाश के फूल आने पर
गया था कहकर
जूड़े में सजाकर रंग दूँगा
टेसू के रंग से तुम्हारे गाल
त्योहार की तरह होगा अपना
बसंत का उत्सव मनाएँगे हम
आ गया फागुन
खिल उठे फूल पलाश के
वह नहीं आया, कर रही है इंतजार
उसके लौट आने का
उस वादे के कारण नहीं चढ़ सका
देव प्रतिमा पर फूल पलाश का

बचपन की चीजें

सोचता हूँ बचपन की चीजें
संभाल कर क्यों नहीं रखी
वो बस्ता जिसे टांगकर स्कूल जाता था
बार-बार लीक होने वाला
फाउंटेन पेन
परीक्षा उत्तीर्ण करने में
शुभ समझता था जिसे
बिना चेन कवर की साइकिल
क्यों बेच दी पिताजी ने
कम से कम
आज बच्चों को दिखा तो देता
देखो! पिताजी ने बड़े अरमान से
मेरे लिए खरीदी थी उस समय
मात्र एक सौ पचास रुपए में
दसवीं पास करने पर दिलवाई थी
अलार्म घड़ी समय के साथ
चलने के लिए
थी एक टेबल-कुर्सी भी दोनों टूट गए
केवल टेबल का पटिया बाकी बचा है
जिसे पत्नी किचन में
डिब्बे रखने के काम में ला रही है
बचपन की सब चीजें नहीं हैं मेरे पास
परंतु माँ बाप का दिया हुआ आशीर्वाद
आज तक मेरे साथ है।

धूप का टुकड़ा

देखता रहा वह
जाते हुए दिन को
पेड़ों की पत्तियों में से
नाचता धूप का टुकड़ा
पेटभर लौटती गायों के बीच
भूख महसूस करते चरवाहे को
इस समय वंशी बजाना
अच्छा नहीं लगता
दूर पहाड़ से देखती
झोंपड़ी को जाते हुए सूरज में
दिखाई देती है रोटी की छवि
भाग्य को कोसती असहायता
छीन नहीं सकती
कितना अजीब होता है
कागज पर हाथ कटाकर
अपाहिज बन बैठना
बिना हाथ, रोजगार के
कविता रोटी नहीं हो सकती
आखिर कब तक चलेगा
नीड़ के तिनके-तिनके
तोड़ कर खाना
ऐसे में हाथ छीनने वाले
को याद तो आते होंगे हस्ताक्षर
नन्हीं धूप का टुकड़ा
जादूगर के इशारे से गायब हो
अंधेरा बन गया।

लड़की होने का दर्द

वह लड़की जिस पर फेंका गया तेजाब
लिख रही थी जिंदगी के कागज पर
अपना भविष्य
फैलते ही कालापन
दब गए वे सारे अक्षर
टूटकर दूर जा गिरे ख्वाब
आसमान से टूटता कोई तारा
टूट गई लड़की
अपना चेहरा
आँखें टटोलती हुई
काश! हाथ आ जाए कोई अक्षर
हथियार बनाकर लड़ सके इन दरिंदों से
लड़की हाथ में
दीपक लेकर नहीं चल सकती
उजाले को अंधेरों में
बदलने की कोशिश में रहेंगे
हवा के तेज झोंके
देखता रह जाएगा कानून
न्याय दबा हुआ है
ओहदे की वजन से
एक, दो दिन छाया रहेगा
अखबारों में समाचार
सामाजिक संस्थाएँ चिपकाएँगी
न्याय का पोस्टर अन्याय के खिलाफ
न्यूज चैनलों पर दिखाया जाएगा
ढका चेहरा
विपक्ष उठाता रहेगा प्रश्न
इससे ज्यादा क्या होना है
लोकतंत्र में लड़कियाँ झेल रही हैं
लड़की होने का दर्द।

उम्र भर के लिए

आओ! आज हम
दु:ख की पोटली बाँध
कहीं किसी वीराने में छोड़ आयें
सितारों से चुराकर खिलखिलाहट
रात की हथेली पर उम्र भर लिखते रहें
प्यार की नज्में
तुमने भेजा था कागज का चाँद
मैंने घर के पिछवाड़े
सबसे नजरें बचाकर
लंबा हाथ करके टांग दिया है
मौलसिरी के ऊपर
यदि तुम रूठ गई तो सच मानना
डालियाँ हिला हिलाकर
गिरा दूँगा मौलसिरी के सारे फूल
तुम्हें हँसते हुए देखने के लिए

बाँह पर पति का नाम

मेले में गुदवा कर आई है
अपने हाथ पर पति का नाम
सखियों के बीच बैठकर

गुदना गुदवाने का दर्द, दर्द नहीं लगा
खुशी में दबकर रह गई कसक
प्रसन्न हो जाती है वह
जब कोई पढ़कर बताता
उसके पति का नाम
चूड़ी पहनते वक्त
हाथ फैलाती है इस तरह
पढ़ सके हाथ पर लिखा पति का नाम
शादीशुदा हो गई है वह
प्रमाण पत्र की तरह दिखाती है
बाँह पर गुदा पति का नाम।

फसल की सुगंध

फसल बोने से पहले
सोच रखा है किसान ने
फसल पर होगा पक्षी जानवरों का हक
चोर, मवेशी से बचाने पर भी
कुछ तो होगा नुकसान
फसल कटने पर
मजदूरों के साथ जाएगी
मेहनताना बनकर
खुश हो जाएँगे गरीब के बच्चे
बहुत दिनों के बाद खाएँगे
पेट भर रोटी
निकलते ही खलिहान से फसल जाएगी
मंदिर में मत्था टेकने और
कुछ माँगने वालों की झोली में
इसी फसल में से लिखा है
पटवारी, तहसीलदार, थानेदार का नाम
बोरों की शक्ल में बंद हुई
बैठकर बैलगाड़ी में पहुँचना होगा
साहब लोगों के बँगले
बहुत सुगंधित है फसल की गंध
बनिये की नाक में समाते ही
ढूँढ़ने लगेंगी आँखें बहीखाते में अंगूठा
अंगूठे के सामने लिखे रुपये
उंगली पर लगाते हुए हिसाब
माँगने आ जाएगा बनिया उधारी
मंडी में फसल बेचने से पहले
देख रहा है किसान
समाप्त होती फिल्म का अंतिम दृश्य

बच्चों के सवाल

आँगन में बैठी माँ
बीन रही है मुट्ठी भर चावल
कल और बेटा सामने हैं उसके
माँ की पीठ पे लदा बालक देख रहा है
आसमान को
कितना विशाल है कौन छुएगा आसमान
की ऊँचाई
किस श्रम का परिणाम है ऊँचा होना
कौन समझाए बालक को
सिर्फ दिखाई भर देता
भीतर से तो खाली है
बालक का दर्द
बादल की गरज के साथ उठता
आँखों में से बहता मुल्क के उन बच्चों
में हो जाता शुमार
जो बेसहारा हो गये अनाथ
ये बच्चे न भरते किलकारी न गाते हैं
पानी बब्बा आया कांकड़ी भुट्टा लाया।
जमाने को समझा सकती है माँ
इन बच्चों के सवाल को कैसे समझाए
इनकी सवालों के उत्तर
किसी किताब में नहीं मिलते
कब लौटेगा वह मुखिया घर का
किससे पूछे गली चुप्पी साध गई
दिखाई देती है पुलिस की गस्त सड़क
पर सांय सांय करता सन्नाटा

इंद्रधनुषी दोपहर

कितनी अच्छी है तुम्हारे घर की छत
जिस पर इंद्रधनुषी
दोपहर हाथों में लेकर
सलाइयाँ और ऊन
भविष्य बुन रही हैं
एक मैं लंबी छाँव सा
उम्र की सलाइयों में
उलझ-पुलझ कर
समय काट रहा हूँ।

अकेले में

पढ़ रही थी पिछवाड़े बैठी
गुलमोहर के फूलों की कविता
लिखा था
वियोगनी के आँसू टपके
निकली आह
दे गई रक्ताब रंग गुलमोहर के फूलों को
आँचल में टूट कर आ गिरे
कुछ पीपल के पत्ते
ये पतझड़ का आना
पेड़ों के निसारे से हवा धीरे से कहती है
लो आ गया वसंत
सुनते ही चौंक उठी मैं
जानती हूँ स्त्री की ईर्ष्यालु प्रवृत्ति
उठा कर रख दी किताब
दृष्टि चली गयी दरवाजे के बाहर तक
वो नहीं आये जिन्हें आना था
इस मौसम में
प्रतीक्षा में पलाश के फूल रंग रंगी
दहकने लगी हूँ
श्रृंगार से सजा बैरागी पठार को
कल गेहूँ की बालियाँ बांधे
नाचते देखा था सरसों गा रही थी
पर्व के गीत...ऐ ऋतुराज उन्हें भी ले आते
जाग उठती कामनाएँ
सूने आंगन में थिरक उठती उमंग
इस अकेले पन्ने में कट कर रह गई हूँ
कटी फसल की तरह
बिखरा पड़ा है मेरा दर्द
आँगन पिछवाड़े पनघट में
कौन समेटेगा
कोरी उम्मीद टूटकर गिरने लगी
ज्यों गिरती हो सूखे पेड़ से टहनियाँ
वसंत तुम्हारा स्वागत है अतिथि हो ना!

- झूलेलाल कॉलोनी
हरीपुरा
विदिशा-464001, मध्यप्रदेश

संगठन में जनवरी-मार्च, 2016 तिमाही के दौरान राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के स

संसदीय समिति द्वारा कोच्चि कार्यालय का निरीक्षण

संसदीय आलेख व साक्ष्य उप समिति द्वारा दि.11.01.2016 को कोच्चि की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के प्रतिभागी सदस्य कार्यालयों में हिंदी कार्यान्वयन का जायजा लिया गया। समिति के उपाध्यक्ष माननीय डॉ सत्यनारायण जटिया ने संगठन के कोच्चि स्थित शाखा कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति अपनी संतुष्टि व्यक्त की। इस अवसर पर कोच्चि कार्यालय को उपयुक्त मार्गदर्शन एवं सहयोग पहुँचाने हेतु सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार उपरोक्त समारोह में उपस्थित थे।

माननीय श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी द्वारा 'सुगंध' का आत्मीयपूर्ण अवलोकन

संसदीय आलेख व साक्ष्य उप समिति द्वारा दि.11.01.2016 को कोच्चि की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के प्रतिभागी सदस्य कार्यालयों में निरीक्षण के दौरान संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति के संयोजक माननीय श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी ने संगठन की गृह-पत्रिका का अवलोकन किया और पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की गंभीरता के प्रति संतुष्टि व्यक्त की। इस अवसर पर वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री जी वी एन प्रसाद, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार उपस्थित थे।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा चेन्नई कार्यालय का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा संगठन के चेन्नई स्थित कार्यालय में निरीक्षण के दौरान समिति के संयोजक माननीय श्री हुकुमदेव नारायण सिंह यादव ने हिंदी में कार्य हेतु कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने का सुझाव दिया। संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने समिति को सभी सुझावों के अनुपालन का आश्वासन दिया। तत्पश्चात श्री यादव ने गृह-पत्रिका 'सुगंध' के दिसंबर अंक का विमोचन किया। कार्यक्रम में संगठन के निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद, मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री टी श्रीनिवास, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री शैलेश कुमार सिंह, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार एवं क्षेत्रीय प्रबंधक (दक्षिण) श्री सी एस तंपी उपस्थित थे।

संयुक्त सचिव (इस्पात) द्वारा 'सुगंध' का विमोचन

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा संगठन के चेन्नई स्थित क्षेत्रीय कार्यालय के निरीक्षण हेतु भरी हुई प्रश्नावली इस्पात मंत्रालय के समक्ष प्रस्तुत किया। इस अवसर पर संयुक्त सचिव (इस्पात) श्री टी श्रीनिवास ने 'सुगंध' के अद्यतन अंक का विमोचन किया। इस अवसर पर उन्होंने 'सुगंध' पत्रिका का स्तर बनाये रखने की अपील की।

ाथ-साथ विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया गया, जिनका विवरण नीचे प्रस्तुत है।

परिवर्तन जन कल्याण समिति द्वारा निदेशक (कार्मिक) का सम्मान

नई दिल्ली के संस्था परिवर्तन जन कल्याण समिति द्वारा 10 जनवरी, 2016 को नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में विश्व हिंदी दिवस एवं सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया गया। समारोह में संगठन में हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन एवं जनसंपर्क में हिंदी के विशेष प्रयोग हेतु निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद को 'हिंदी राजभाषा कार्यान्वयन रत्न सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ जी बी एस प्रसाद ने कहा कि राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में हिंदी कार्यान्वयन हेतु पर्याप्त ध्यान दिये जाने का आश्वासन दिया।

वरिष्ठ प्राधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला

संगठन में 11-12 मार्च, 2016 को वरिष्ठ प्राधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला के चार अर्द्ध-दिवसीय सत्र आयोजित किये गये। इसमें डॉ शंकर प्रसाद (बेंगलुरु) को वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का उद्घाटन निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद ने किया। चार सत्रों में संगठन के लगभग 65 वरिष्ठ प्राधिकारियों ने भाग लिया। कार्यपालक निदेशक (खान) श्री एस के गुप्ता ने कार्यशाला का समापन किया। सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कोलकाता, पटना व भुवनेश्वर कार्यालयों में हिंदी कार्यक्रम

3-4 फरवरी, 2016 को संगठन के कोलकाता, पटना एवं भुवनेश्वर कार्यालयों में हिंदी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कर्मचारियों के लिए कई हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ ही कोलकाता में यूनिकोड प्रशिक्षण एवं कार्यशाला भी आयोजित की गई। क्षेत्रीय प्रबंधक (पूर्व) श्री शिवानंद के नेतृत्व एवं श्री एस मंडल, श्री हीरक रॉय आदि प्राधिकारियों एवं हिंदी समन्वयक श्री सलिल कुमार सहाय के विशेष सहयोग से कार्यक्रम संपन्न हुआ। ऐसे ही पटना व भुवनेश्वर कार्यालयों में हिंदी दिवस वरिष्ठ शाखा प्रबंधकों एवं हिंदी समन्वयकों के सहयोग से संपन्न हुआ।

गृह मंत्रालय के सहयोग से हिंदी कार्यशाला का आयोजन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी श्री केवल कृष्ण द्वारा 9 मार्च को सूचना प्रौद्योगिकी विभाग में संगठन में ई.आर.पी. अप्लिकेशंस में यूनिकोड में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु एक कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यक्रम में महाप्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी व ई आर पी) श्री के वी एस एस राजेश्वर राव, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार, सूचना प्रौद्योगिकी, उद्यम संसाधन योजना व राजभाषा विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

संगीत सरिता

की बोर्ड सीखने की प्रविधि

इस अंक में 'दम लगाके हैशा' फिल्म के 'ये मोह मोह के धागे' गाने का नोटेशन नीचे प्रस्तुत है। यह राग 'यमन' पर आधारित गाना है। फिल्म 'टावर हाऊस' का 'ऐ दिले-नादान', सरस्वती चंद्रा का 'चंदन सा बदन', पाकीजा का 'इन्हीं लोगों ने ले लिया दुपट्टा मेरा', शोर का 'इक प्यार का नगमा' आदि इसी राग पर आधारित गाने हैं। इस गाने के अंतरा में 'ग' और 'नि' कोमल स्वर का भी प्रयोग हुआ है। यह गाना 'D-Major' में बजता है।

आरोह: स रे ग, म¹ प, ध, नि सं अवरोह: सं नि ध, प, म¹ ग, रे स पकड़: नि़ रे ग, ग म¹ प, म ग रे स

सा प मा ध प म ग रे रे ग प म ग ग नि़ रे प ग रे स नि़ ध नि़ स स
मोह मोह के धागे... मोह मोह के धागे

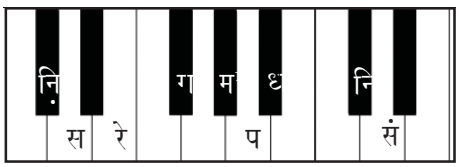

गा रे गा रे ग रे सा नि़ पा गा रे गा रे ग रि गा
ऊ..... ऊ.....
स रे गा ग गा ग म ग सा नि़ स रे प रे रे ग रे स नि़ सा स
ये मोह मोह के धागे तेरी उंगलियों से जा उलझे
स रे गा ग गा ग म ग सा नि़ स रे प रे रे ग रे स नि़ सा स स रे गा ग गा ग म ग सा नि़ स रे प रे रे ग रे स नि़ सा स
ये मोह मोह के धागे तेरी उंगलियों से जा उलझे कोई टोह टोह न लागे किस तरह गिरह ये सुलझे
प म ग ग म म ग ग ध धा प म प म ग प म ग ग म म ग ग ध धा नि नि ध ध ध रें नि ध ध प प प म प म ग
है रोम रोम एक तारा... है रोम रोम एक तारा जो बादलों में से गुजरे...
स रे गा ग गा ग म ग सा नि़ स रे प रे रे ग रे स नि़ सा स स रे गा ग गा ग म ग सा नि़ स रे प रे रे ग रे स नि़ सा स
ये मोह मोह के धागे तेरी उंगलियों से जा उलझे कोई टोह टोह न लागे किस तरह गिरह ये सुलझे
स रे ग प ध ध सं नि प प रे गा रे स स स रे ग प ध ध स नि प प रे गा रे स स स
तू होगा जरा पागल तू ने मुझको है चुना तू होगा जरा पागल तू ने मुझको है चुना
नि़ स नि़ प़ प़ प़ प़ नि़ स रे रे स स ग म प रे स स स रे ग प ध ध सं नि प प प प म प म ग रे गा
कैसे तू ने अनकहा तू ने अनकहा सब सुना तू होगा जरा पागल तू ने मुझको है चुना
प प म प म ग रे ग प म ग म ग ग म प ध प म प ग नि नि नि नि ध नि ध रें नि ध प म ग
तू दिन सा है मैं रात आना दोनों मिल जाए शामों की तरह
स रे गा ग गा ग म ग सा नि़ स रे प रे रे ग रे स नि़ सा स स रे गा ग गा ग म ग सा नि़ स रे प रे रे ग रे स नि़ सा स
ये मोह मोह के धागे तेरी उंगलियों से जा उलझे कोई टोह टोह न लागे किस तरह गिरह ये सुलझे
स रे ग प ध ध सं नि प प रे गा रे स स स रे ग प ध ध स नि प प रे गा रे स स स
ये तेरी झूठी बातें मैं सारी मान लूँ कि तेरी झूठी बातें मैं सारी मान लूँ
नि़ स नि़ प़ प़ प़ प़ नि़ स रे रे स स ग म प रे स स स रे ग प ध ध सं नि प प प प म प म ग रे गा
आँखों से तेरे सच सभी सब कुछ अभी जान लूँ कि तेरी झूठी बातें मैं सारी मान लूँ
प प म प म ग रे ग प म ग म ग ग म प ध प म प ग नि नि नि नि ध नि ध रें नि ध प म ग
तेज है धारा बहते से हम आवारा आ थम के साँसें ले यहाँ
स रे गा ग गा ग म ग सा नि़ स रे प रे रे ग रे स नि़ सा स स रे गा ग गा ग म ग सा नि़ स रे प रे रे ग रे स नि़ सा स
ये मोह मोह के धागे तेरी उंगलियों से जा उलझे कोई टोह टोह न लागे किस तरह गिरह ये सुलझे
गा रे गा रे ग रे सा नि़ पा गा रे गा रे ग रि सा गा रे गा रे ग रे सा नि़ पा गा रे गा रे ग रि सा
ऊ..... ऊ..... ऊ..... ऊ.....

इस गाने के राग व स्वरों की जानकारी सी आर जी (रीफ़ैक्टरी) के सहायक महाप्रबंधक श्री रविदास एस गोने और नोटेशन विज्ञान इंजीनियरिंग कालेज की छात्रा सुश्री वी नंदिता ने दिया है।

सामाजिक सौहार्द्र और साम्प्रदायिक सौमनस्य के पुरोधा 'रहीम'

- डॉ दादूराम शर्मा -

मुगल साम्राज्य को विस्तार और स्थायित्व प्रदान करने वाले शहंशाह अकबर के संरक्षक, शिक्षक और महत्वपूर्ण मागदर्शक सेनापति बैरमखाँ के यहाँ हिंदी के परम समादरणीय, सांप्रदायिक सौमनस्य, धार्मिक औदार्य और सामाजिक सौहार्द्र के पुरोधा अब्दुर्रहीम खानखाना का जन्म वर्ष **1556** में हुआ था। जब रहीम मात्र चार वर्ष के थे, तभी उनके पिता बैरमखाँ की हजयात्रा में जाते समय गुजरात की राजधानी पाटन में अफगान सरदार मुबारकखाँ लोहनी द्वारा धोखे से हत्या कर दी गई। अकबर ने उनकी माँ सुल्ताना बेगम से शादी करके बालक रहीम को अपने संरक्षण में लेकर उनकी शिक्षा का राजकुमार की तरह समुचित प्रबंध किया। रहीम ने अरबी, फारसी, संस्कृत और हिंदी भाषाओं में असाधारण ज्ञान प्राप्त करके सभी में लेखनी चलाकर अपनी विलक्षण काव्य प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस्लाम और हिन्दू धर्म का अगाध पाण्डित्य प्राप्त किया और अस्त्र-शस्त्र-संचालन-कौशल्य अर्जित करके अजेय योद्धा और कुशल सेनापति बने। सन् **1573** में मात्र सत्रह वर्ष की उम्र में उन्होंने अकबर के आदेश पर मुगल फौज के मध्यभाग की कमान संभाली और गुजरात में उठे विद्रोह को कुचल दिया। इस पर अकबर ने फतेहपुर सीकरी में उनका वीरोचित भव्य सम्मान किया तथा **1575** में उन्हें गुजरात का सूबेदार बनाया। सम्राट अकबर ने न केवल उन्हें 'मीर अर्ज' (जनता की शिकायतें सम्राट तक पहुँचाने और सम्राट के निर्णय से जनता को अवगत कराने वाला पदाधिकारी), 'अतावेग' (शाही घोड़ों की व्यवस्था और अस्तबल की देखरेख करने वाला उच्च अधिकारी), अजमेर के सूबेदार जैसे महत्वपूर्ण पद प्रदान किए, अपितु उन्हें शाहजादा सलीम के शिक्षक का गुरुतर उत्तरदायित्व भी सौंप दिया, जिसमें अपनी अदभुत योग्यता का परिचय देकर उन्होंने सम्राट का भरपूर स्नेह और सम्मान पाया।

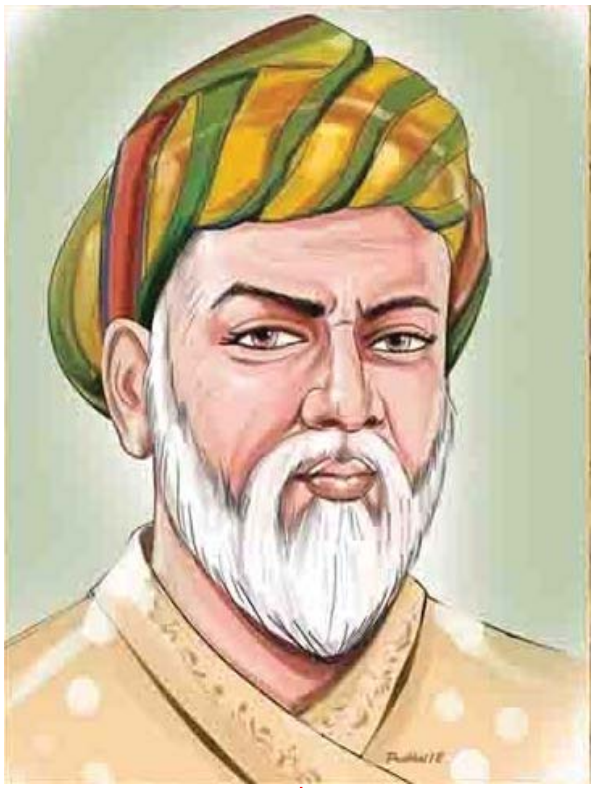

अप्रैल **1583** में भगोड़े कैदी और बागी मुजफ्फर ने गुजरात की राजधानी अहमदाबाद पर कब्जा कर लिया था। मात्र दस हजार सैनिकों के साथ सिपहसालार रहीम ने अहमदाबाद पर हमला करके मुजफ्फर को उसके चालीस हजार सैनिकों के साथ मार भगाया और अपनी इस फतह की यादगार में उन्होंने अहमदाबाद में 'फतह बाग' बनवाया। मुजफ्फर को दूसरी बार भारी शिकस्त देकर उन्होंने शाहंशाह अकबर से 'खानखाना' का खिताब पाया।

1597 में हुए आष्टी के युद्ध में उन्होंने पच्चीस हजार घुड़सवारों की सेना के साथ रणभूमि में आए सेनापति सुहेल खाँ को अपने मात्र सात हजार घुड़सवारों के साथ घमासान युद्ध करके धूल चखा दी थी। वे बिना खाए-पिए, बिना विश्राम किए **36** घंटे तक लगातार लड़ते रहे थे।

बाद में उनके सेनापतित्व में चांदबीवी शासित अहमदनगर पर मुगल सेना ने आक्रमण कर दिया। चार माह चार दिन तक लगातार युद्ध चलता रहा और चांदबीबी का कत्ल उन्हीं के सरदार द्वारा कर दिए जाने पर रहीम ने आसानी से अहमदनगर पर विजय पा ली। अकबर ने अपने बेटे दानियाल की शादी रहीम की बेटी जान बेगम से कर दी।

1605 में अकबर की मृत्यु हो गई और शाहजादा सलीम 'जहाँगीर' के नाम से दिल्ली के तख्त पर बैठा। तब रहीम राजनीतिक षडयंत्र के शिकार हो गए। उनका प्रिय दामाद दानियाल तो **1604** में ही शराब की भेंट चढ़ चुका था। सभी बेटे भी असमय ही कालकवलित हो गए। अहमदनगर मुगलों के हाथ से निकल गया। शहजादे खुर्रम (शाहजहाँ) ने शहंशाह जहाँगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और रहीम दोनों के बीच झूलते रहे। खुर्रम का साथ देने पर जहाँगीर ने उन्हें उनका छीना हुआ 'खानखाना' का खिताब वापस लौटा दिया और एक लाख रुपए और कन्नौज की जागीर भी पुरस्कार में दीं।

जहाँगीर के शासनकाल में उन पर विपत्तियों पर विपत्तियाँ आईं। किंतु उन्होंने अपना धैर्य, अल्लाह या खुदा पर अपना दृढ़ विश्वास नहीं खोया। सब कुछ बिना विचलित हुए चुपचाप झेलते रहे। यह दोहा ऐसी स्थिति में उनकी कलम से निकल पड़ा-

'रहिमन चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै देर।'

इकहत्तर वर्ष की उम्र में भी उनका युद्धोत्साह कम नहीं हुआ था। उनकी वीरता की धार कुंठित नहीं हुई थी। उन्हें **1627** में महाबतखाँ को कुचलने के लिए भेजा गया, किंतु मार्ग में अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हें दिल्ली लौटना पड़ा, जहाँ उन्होंने दुनिया से चिर विदा ले ली।

सूर्य की भाँति जिस कांति के साथ संसार के आकाश में उनका उदय हुआ था, अपनी दानवीरता, युद्धवीरता, धार्मिक औदार्य, सहृदयता और काव्य प्रतिभा का आलोक संसार को देकर, सुख-दु:ख को समान भाव से भोगते हुए वे उसी कांति के साथ अस्त भी हो गए। उनका यह दोहा उन पर ही पूरी तरह घटित होता है -

'ऊगत जाही किरन सों अथवत ताही कांति।
यों रहीम सुख-दुख सबै सहै एक ही भांति।।'

परमात्मा के प्रति अडिग आस्था और विश्वास विपत्ति के दिनों में सदैव उनके सुदृढ़ संबल रहे -

'रन वन व्याधि विपत्ति में रहिमन मरै न रोय।
जो रक्षक जननी जठर सो हरि गए कि सोय।।
रहिमन कोऊ का करै ज्वारी चोर लवार।
सो प्रभु राखनहार है माखन चाखन हार।।'

याचकता और दानशीलता:

दानी रहीम के द्वार से कभी कोई याचक खाली हाथ नहीं लौटा। यद्यपि उनकी दृष्टि में भी याचकता मनुष्य के सम्मान को घटाने वाला निंदनीय कर्म है -

'रहिमन वे नर मर चुके जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनसे पहले वे मुए जिन्ह मुख निकसत नाहिं।।'

माँगने से साधारण मनुष्य की कौन कहे, जगदाधार जगदीश्वर का भी मान घट जाता है। फिर बाद में चाहे जितने बड़े काम किये जायें, किंतु उसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। वामन (बौने) बन बलि से तीन पग पृथ्वी माँगने वाले विष्णु तीन पगों में त्रिलोक को नापकर 'विराट' होने के बावजूद 'वामन' ही कहलाए -

'मांगे घटत रहीम पद कितौ करौ बड़ काम,
तीन पैंग वसुधा करी तऊ वामनो नाम!'

परम दानी रहीम सर्वथा निरभिमानी और विनम्र थे। याचक को देते समय वे अपनी नजरें झुका लेते थे। किसी ने उनसे इसका कारण पूछा तो उस महापुरुष ने हृदयस्पर्शी उत्तर दिया -

'देनहार कोउ और है, भेजत जो दिन रैन।
लोग भरम हम पर करैं, यातैं नीचे नैन।।'

सचमुच, सब कुछ देने वाला तो परमात्मा ही है। अत: उसने जो दिया है, उसे हम समुद्र की तरह संग्रह करके इस तरह न रखें कि वह किसी के भी काम न आ सके, अपितु भले ही धन थोड़ा हो, हम उसे पोखरे की तरह दूसरों की प्यास बुझाने में, दूसरों की भलाई में लगाते रहें।

परगुणग्राहकता:

सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक संगीत सम्राट तानसेन की प्रशस्ति में इससे अधिक और क्या कहा जा सकता है :

'विधना अस जिय जानि के, सेषहि दियो न कान।
धरा मेरू सब डोलिहैं, तानसेन की तान।।'

कुसुमादपि कोमल और वज्रादपि कठोर:

रहीम का कवि कुसुमादपि कोमल है तो योद्धा वज्रादपि कठोर है। कवि रहीम की लेखनी जब उठती तो मानवीय संवेदना, धार्मिक सौमनस्य और नैतिक मूल्यों की सृष्टि करके काव्य मर्मज्ञों की हृत्तंत्री को झंकृत कर देती, समाज को सदाचार और मिलजुलकर रहने की प्रेरणा देती और भाषा का श्रृंगार बन जाती और रणभूमि में जब उनकी तलवार उठती तो दुश्मनों को धूल चटाकर उनकी अजेयता का इतिहास रच जाती! आश्चर्य है कि कहीं भी कभी भी उनके कवि को उनके रणोन्मत्त योद्धा ने आक्रांत नहीं किया और न ही उनके योद्धा को उनके कवि ने कमजोर बनाया। अपने दोनों रूपों में वे सर्वथा एक दूसरे से अछूते और अप्रभावित रहे।

परम वैष्णव भक्त भी और दीनदार मुसलमान भी:

रहीम ने हिंदू धर्म ग्रंथों और दर्शन का गहनता से अध्ययन किया था। पंचनमाजी दीनदार मुसलमान होते हुए भी वे परम वैष्णव भक्त हैं। हिंदू धर्म के प्रति उनकी आस्था और विश्वास उनके काव्य में पदे-पदे प्रकट होते हैं। अपने ग्रंथ 'बरवै' के मंगलाचरण में वे विघ्नविनाशन गणेश, वृषभानुकुअँरि के प्राण आधार नंदी कुमार, चराचर नायक सूर्यदेव, गिरिजा ईश (भवानी शंकर) और 'विपत्ति विदारण समीरसुवन' (हनुमान) सभी की वंदना करते हैं तो अपने संस्कृत ज्योतिष ग्रंथ 'खेट कौतुकजातकम्' की रचना वे खुदा का नाम लेकर उनकी इबादत के साथ करते हैं - 'करोम्यब्दुलरहीमोऽहं खुदातालाप्रसादत:'। कृष्ण तो उनके इष्ट हैं, मन चकोर के चन्द्र हैं, 'तैं रहीम मन आपुनो कीन्हो चारु चकोर निसिवासर लागो रहै कृष्णचंद्र की ओर।' अपने आराध्य श्रीकृष्ण के प्रति उनका यह अनन्य समर्पण भाव तो सर्वथा नव्य, भव्य और विलक्षण है।

अपने उद्धार के लिए राम से प्रार्थना करते समय वे कैसे विलक्षण तर्क देते हैं,

'अहल्या पाषाण: प्रकृति पशुरासीत् कपिचमूर्गुहो
भूच्चाण्डालस्त्रितयमपि नीतं निजपदम्।
अहं चित्तेनाश्मा पशुरपि तवार्चादिकरणे क्रियाभिश्चाण्डालो रघुवर!
न मामुद्धरसि किम्?'

दर्शन:

वेदांती भक्त कवि का यह अद्वैत दर्शन देखिए -

'मोहन छवि नैनन बसी पर छवि कहाँ समाय?
भरी राय रहीम लखि, पथिक आप फिरि जाय।
रहिमन गली है साँकरी दूजो ना ठहराहिं।
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपुन नाहिं।।"

भार (अहंकार का बोझ) जीव को मँझधार में डुबो देता है। जो इस संसार सागर से पार जाना चाहता है उसे तो अहंकार रूपी भार से मुक्त होना ही पड़ेगा,

'भार झोंक के भार में रहिमन उतरै पार।
ते बूड़े मँझधार में जिनके सिर पर भार।।'

रहीम के अनुसार माया से मुक्ति परमात्मा के चरण छूने (पूजोपासना, कर्मकांड) या मस्तक छूने (ब्रह्मज्ञान अर्जित करना) से नहीं हो सकती। प्रभु का हृदय छूने (उनसे प्रेम या उनकी भक्ति करने) से ही हम माया के बंधन से मुक्त हो सकते हैं -

'चरन छुए मस्तक छुए तऊ न छांड़ति पानि।
हिए छुवत प्रभु छोड़ि दे कह रहीम यह जानि।।'

बबूल पेड़ के संबंध में अन्य कवियों से रहीम का भाव साम्य इस प्रकार है:

'आपु न काहू काम के डार पात फल फूल।
औरन को रोकत फिरें रहिमन पेड़ बबूल।।'

- रहीम

'पत्र-पुष्प-फल-लक्ष्म्या कदाप्यदृष्टं, वृतं खलु शूकै:।
उपसर्पेम भवंतं बुर्बर! वद कस्य लोभेन।।'

- पंडितराज (भामिनी विलास)

'कांटे पैने, फल विरस, फूलों में न सुवास।
किस आशा से जायँ हम तरु बबूल के पास।।'

- डॉ दादूराम शर्मा (दोहावली)

संगति:

संगति के विषय में रहीम ने अपने जीवनानुभव और पौराणिक कथा संकेतों को अपने दोहों में बड़े ही प्रभावी ढंग से ढाला है। बेर (कुटिलमति दुर्जन) और केर (सरलचित्त सज्जन) का यह साथ देखिए -

'कहु रहीम कैसे निभै बेर केर को संग?
ये डोलत रस आपने उनके फाटत अंग।।'

जहाँगीर के शासकाल में चापलूसों के कुचक्र में फंसकर उन्हें जो अपमान का दंश झेलना पड़ा था, उसकी अंतर्वेदना ही जैसे इस दोहे में फूट पड़ी है -

'आदर घटै नरेस ढिग, बसे रहै कुछ नाहिं।
जो रहीम कोटिन मिले, धिग जीवन जग माहिं।।'

काव्य सौंदर्य :

रहीम ने 'दोहावली', 'नगरशोभा', 'बरवै नायिकाभेद', 'श्रृंगार सोरठा', 'बरवै' और 'मदनाष्टक' के अतिरिक्त फुटकर पदों, संस्कृत श्लोकों और मिश्रित भाषाओं के पद्यों की रचना की है, जिनमें काव्य अपने समग्र सौंदर्य के साथ प्रस्फुटित हुआ है। उनके काव्य का उक्ति वैचित्र्य या विलक्षण वचन-भंगिमा काव्य रसिकों को बलात् भावविभोर कर देती है।

नायिका के मुख की कांति के कभी फीकी न पड़ने की बात तो सभी कवियों ने कही है, किंतु मुख पर लहराकर उसे और भी आकर्षक और नयनाभिराम बना देने वाले कजरारे केशों के लिए उसके मुख रूपी दीपक से पड़ने वाले काजल की अनूठी उत्प्रेक्षा तो कवि की अपनी और सर्वथा मौलिक एवं अन्यत्र दुर्लभ है,

'रूप ज्योति मुख पै धरै छिनक मलीन न होत।
कच मानो काजर परे, मुख दीपक की जोत।।'

एक सर्वथा अभावग्रस्त निर्धन बाला कहाँ से इतना सुख लूट रही है, 'टूटी खाट छत टपकत टटियो टूट'। हाँ समझ में आया, सबसे बड़ा धन उसे मिल गया है और वह धन है उसका प्रियतम, जो उसके पास है। उसके बाहुपाश में बंधकर वह अपने समस्त अभावों एवं पीड़ाओं को भूलकर सुख सागर में गोते लगा रही है, 'पिय के संग उसिसवा सुख कै लूट'।

रहीम जितने बड़े इंसान थे, उतने ही बड़े कवि भी। उनकी कविता उनके उन्मुक्त, उदार और विराट् हृदय का द्योतक वे गुरुनानकदेव की तरह समाज के सचेतक और उपदेशक नहीं हैं, अपितु आम आदमी में घुल-मिलकर आत्मीय स्वर में उसकी ही भाषा में उसे व्यवहार की, चरित्र की, सामाजिक-धार्मिक सौमनस्य व सद्भाव एवं परस्पर मिल-जुल कर रहने की सीख देते हैं, क्योंकि इसी में सभी का, हिंदुओं और मुसलमानों और वर्तमान में बौद्धों, सिक्खों एवं ईसाइयों का भी हित है -

'रहिमन धागा प्रेम का मत तोरौ चटकाय।
टूटे तै फिर ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।।'

हमारा पारस्परिक प्रेम नि:स्वार्थ और निश्छल होना चाहिए, केवल बाहरी या दिखावे के लिए नहीं -

'रहिमन प्रीति न कीजिए जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँकें तीन।।'

आज भी साम्प्रदायिक हिंसा की आग में झुलस रहे राष्ट्र को ऐसे ही सच्चे राष्ट्र भक्त सपूत की प्रतीक्षा है, जो इस आग को बुझाकर सबको प्रेम और एकता के सूत्र में बांध दें।

- सेवानिवृत्त अध्यापक
महाराज बाग, भैरव गंज
जिला: सिवनी-480661, मध्यप्रदेश
मोबाइल: +91 8878980467

तोता, कैंची और मैं

- श्रीमती सुधा गोयल -

अभी-अभी सुदीप ने तोते के पंख कैंची से काटे हैं। आंगन के बीच हरे-पीले छोटे-छोटे तराशे पंख बिखरे पड़े हैं। पिंजरा अलग रखा है और तोता धीरे-धीरे आंगन में चहलकदमी कर रहा है। सुदीप अब तोते की ओर से निश्चिंत हैं। पंख कट जाने के बाद अब यह क्या उड़ेगा? उन्हें अपने इस तोते पर बड़ा नाज है। पहाड़ी है न। पिछले दिनों वे देहरादून गए थे, इसे वहाँ खरीदा था पिंजरे सहित।

खूब लाड़-प्यार करते हैं। मनुष्य की भाषा सिखाने का प्रयास करते हैं। हाँ, एकाध शब्द सीख भी गया है। शायद संगत का असर है। आदमियों के बीच रहकर कब तक अपने आप को पक्षी बनाए रखेगा। उसे क्या मालूम कि ये आदमी कितना जालिम होता है। पहले चुग्गा डालेगा, फिर प्यार से सहलाएगा और सोने के पिंजरे में कैद करके डाल देगा। फिर मनचाहे खेल खिलाएगा।

पिंजरा सोने का हो या लोहे का, क्या फर्क पड़ता है? पिंजरा-पिंजरा है और पिंजरे में बंद पक्षी का भाग्य भी पिंजरा है। एक निश्चित परिधि, खुलेपन का एक निश्चित दायरा, झाँकने को एक अदद रोशनीदान और इससे अधिक की चाह जगी तो पंख काटने के लिए हाथ में कैंची आ जाती है।

सोचते-सोचते मैं आकाश में उड़ते स्वच्छंद पंछियों को देख एक नि:श्वास खींच लेती हूँ। मेरे हाथ में कभी कैंची अपना अस्तित्व बोध कराती है। यह वही कैंची है, जिससे कुछ पल पहले सुदीप ने तोते के पंख तराशे थे और कैंची मुझे थमा स्वयं बाथरूम में घुस गए थे। मुझे कैंची से झाँकता सुदीप का प्रतिबिंब साफ झलकता है। मानो कह रहे हों, 'रेखा पुरुष के हाथ में थमी कैंची ऐसे ही पंख तराशती है। भूल मत जाना। तुम भी एक खूबसूरत पंछी हो। अपनी हदों से यदि आगे बढ़ी, तो फिर ये कैंची, जिसे तुमने अपने हाथों में थामा है - तुम्हारे पंख काटने में भी नहीं हिचकिचाएगी। जरा सूँघकर नजदीक से देखो। पंखों की बू और पंखों का एकाध तराशा गया रेशा तुम्हें नजर आ जाएगा।

मैं कैंची को गौर से देख पास पड़ी मेज पर रख देती हूँ। इतने सब में ही मेरे माथे पर पसीने की बूँदे छलछला आती हैं। सिर घूमने लगता है। टांगें बेदम हो जाती हैं। मैं वहीं दोनों हाथों से अपना सिर थामे बीस साल पुराने अतीत के फंदे उधेड़ने लगती हूँ। जाने कितनी बार मैंने अपने अतीत को बुना और उधेड़ा है। फिर भी अपने घोंसले के हर तिनके को आँधी और तूफान में अपनी चोंच से थामे रखने का प्रयास किया है।

इन बीस सालों में बीस दिन के लिए भी मैं अपना अतीत नहीं भूल पाई। सुदीप के हाथों में कैंची देखने की अब मेरी आदत हो गई है। तराशी जाकर भी उफ् नहीं करती, क्योंकि मुझे अपनी हदें अच्छी तरह याद हो गई हैं। मैं खिड़की से झाँककर उन्मुक्त नीले शुभ्र आकाश को नजर भर देख तो सकती हूँ, पर उड़ने का सपना नहीं पाल सकती। मैं जब भी स्वयं को देखती हूँ तो अपने पंख कटे पाती हूँ।

मुझे अच्छी तरह याद है, सबसे पहले खुद मेरे बाबूजी ने बड़ी बेरहमी से कैंची चलाई थी। मैं चीखी थी, छटपटाई थी, पर घर के सबसे बड़े शक्तिशाली पुरुष मेरे बाबूजी के हाथ में कैंची थी। मेरे पंख छांटे जाते रहे। मैं असहाय सुबकती रही। न माँ का ममता भरा स्पर्श मिल पाया, न भाई का आश्वासन। बड़ी तकलीफ हुई थी। उस समय नहीं समझ पाई थी। आज समझती हूँ। माँ भी तो कटे पंख पंछी थी, फिर भला उड़कर मुझे कैसे अपने अंक में समेट पाती?

शायद मेरी पीड़ा का उन्हें एहसास था। पर मैं उस समय उनके मौन को अपनी उपेक्षा समझ मन में घृणा पाल बैठी थी। इन बीस सालों में बाबूजी की मृत्यु के बाद भी उन्हें क्षमा नहीं कर पाई हूँ, बल्कि पुरुषों के प्रति मन में एक विद्रोह पाल बैठी हूँ। काश! पंख उग आएँ, मैं उड़ जाऊँ और इस निर्दयता का बदला ले सकूँ।

मन में बार-बार सवाल उठता है कि माँ से कहूँ, 'माँ उस दिन तुमने मुझे क्यों रोका था? मर जाने दिया होता। यों तिल-तिल कर पूरे जीवन तो न मरती। बाबूजी को तो मरना ही था। एक साल पहले या एक साल बाद, तो क्या तुम अपनी बेटी के लिए एक साल और अधिक या वैधव्य न झेल सकती थी? तुम भी जानती थी कि अपनी बात मनवाने की बाबूजी की ये गीदड़ भभकी थी। कोई उनकी बात का विरोध करे, वे यह कहाँ सहन कर सकते थे। क्या तुम्हारे पास अपनी बेटी के लिए इतनी भी ममता न थी? क्यों तुम उस कैंची को नहीं पकड़ पाई?' कहाँ कह पाई हूँ ये सब? अपने आक्रोश को अपने मन की परतों में दबा स्वयं ही घायल होती रहती हूँ।

बाबूजी के बाद कैंची भाई के हाथ में आ गई। पंख जैसे उगना ही भूल गए। माँ और भी सिमट गई। शायद पंखहीन हो गई थी।

उस दिन सुदीप देखने आए थे। व्यापारी पिता के व्यापारी बेटे। समाज में इज्जत, मान, मर्यादा। धन और धन से

संबंधित शौक भी। क्लब, ड्रिंक, जुआ, रेस वगैरह। शिक्षा के नाम पर महज हायर सेकेंडरी। ये क्या? सुना तो लगा आकाश की ऊँचाइयों से एकदम जमीन पर गिर पड़ी हूँ। सुदीप देखने में ठीक-ठाक थे, लेकिन सुदीप जैसे पति की कामना मैंने नहीं की थी। मैं चाहती थी एक ऐसा सुलझा और गंभीर व्यक्तित्व जो मेरी भावनाओं को समझ सम्मान दे सके।

पारिवारिक नियंत्रण की उस परिधि में जहाँ बेटी के हर क्रियाकलाप पर पहरे हों, घर घर न होकर कोतवाली हो, घर का हर पुरुष थानेदार से कम न हो, वहाँ बंजर भूमि पर प्रेम की कोपलें कहाँ फूट सकती हैं? प्रेम के ढाई अक्षर के बीज को रोपने की आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई।

बाबूजी ने मेरे लिए सरस्वती की जगह लक्ष्मी को चुना। उनका गणित शायद सही था। आज के जीवन में लक्ष्मी ही सब कुछ है। सरस्वती के पुजारी सदा अहमक तथा लक्ष्मी विहीन होते हैं। पुत्री का ऐश और आराम लक्ष्मी के बलबूते ही है। उनकी सोच अपनी जगह सही थी।

पर मेरे सामने तो महज एक ही लक्ष्य था सहज अध्ययन। कुछ पाने की चाह और बुद्धि विकास। अपना कमरा और कमरे में अपने चारों ओर फैला किताबों का ढेर। न खाने की परवाह, न सोने का वक्त, माँ मेरे इस खब्ती शौक से परेशान रहतीं। बाबूजी भी सोचने लगे थे कि उनकी बेटी सांसारिकता से नाता तोड़ रही है। अभी जीवन के मात्र अठारह बसंत ही देखी है वह और अभी वेद, उपनिषद, गीता, रामायण आदि सभी ग्रंथ पढ़ डाले। अरस्तू और प्लेटो का दर्शन जिजीविषा का मंथन करने लगा।

अपने मन में ढेरों सवाल उठते। समाधान का कोई रास्ता न था। मैं फिर अपनी जिज्ञासा के समाधान के लिए पुस्तकों में डूब जाती। शायद यही अतृप्त इच्छा मेरे मन में थी कि मुझे ऐसा साहचर्य मिले, जो मेरी शंकाओं का निवारण कर सके। मन के बंद दरवाजे खोल सके।

पर मुझे जबरदस्ती आध्यात्मिक जगत से भौतिक जगत में ला पटका। मेरी जिज्ञासाओं का समाधान रात-रात भर जागकर, भूखे रहकर पति के इंतजार में निकलने लगा। मैं छटपटाने लगी। अक्सर सुदीप खीझ उठते - 'तुम्हें और क्या चाहिए? सारी सुख-सुविधाएँ तुम्हारे पास हैं कोठी, कार, नौकर, जेवर, रुपया।'

वे पत्नी की आवश्यकता बस इतनी भर ही समझते हैं। मन होता है कहूँ, 'सुदीप तुम नहीं जानते कि तुम्हारी पत्नी को क्या चाहिए? जो उसे चाहिए वह तुम्हारे पास नहीं है।' कहाँ कह पाती? किताबों से सुदीप को बेहद चिढ़ है। मायके से अपनी किताबें ले आई थी। यहाँ आकर वे किसी शो पीस में सजे खिलौनों सी बंद हो गईं। मैं उन्हें दूर से देख सकती हूँ, सहला सकती हूँ, पर पढ़ नहीं सकती।

जब बाबूजी ने यहाँ भेजा था, तब भी हिम्मत नहीं हारी थी, बल्कि मन ही मन प्रण किया था कि सुदीप को भी अपनी राह पर डाल लूँगी। यहीं राह बनाने में क्या कम संघर्ष करना पड़ा है? एक-एक कक्षा के लिए भूखे रहकर संघर्ष किया है, वरना पाँचवी कक्षा के बाद बेटी को पढ़ाने का प्रश्न ही नहीं था। बेटी को अक्षर ज्ञान हो जाए, रामायण बाँच ले और दो आखर चिट्ठी पर लिख ले - यही शिक्षा का मापदंड था। शिक्षा के इस मापदंड को तोड़ने में अच्छी खासी मुश्किलें आईं।

बाबूजी ने तो कभी सिगरेट नहीं पी, पान नहीं खाया। शराब की तो बात बहुत बड़ी है। हमेशा एक आदर्श जीवन सामने रखा, फिर उनकी बेटी ये सब कैसे सह पाएगी?

बापूजी की आज्ञा को तो चुपचाप स्वीकार कर लिया। आँखों में आँसू सूख गए, पर दिल में हर पल एक अनुत्तरित प्रश्न घुमड़ा करता है, 'आखिर ये अन्याय क्यों हुआ। क्या इसे पुरुषत्व की जीत और नारीत्व की हार कहूँ या फिर अदृश्य का खेल या नारी उत्पीड़न का अनोखा अंदाज?'

नहीं जानती थी तब कि पुरुष दोहरा जीवन जीता है। बाहर कुछ, घर में कुछ। बेटी के सामने आदर्श पिता, पत्नी के लिए आदर्श पति और घर के बाहर महज एक मर्द। आदर्श का मुखौटा घर की किसी खूंटी पर टंगा रह जाता है। बहुत बाद में जान पाई कि बाबूजी भी...।

बाबूजी रहते तो शायद कभी पूछ पाती, पर वे मेरे भविष्य में अंधेरे भरकर स्वयं अंधकार में विलीन हो गए। मई का महीना मेरे लिए खास उत्तेजना का महीना होता है। मैं बौराई सी रहती हूँ। शादी का दिन सब उल्लासपूर्वक मनाते हैं, पर मैं उपवास रखती हूँ। शायद उड़ने की कोई राह मिल जाए। पर इन बीस सालों में सुदीप ने एक भी झरोखा सलाखों रहित नहीं छोड़ा। सोने के पिंजरे में कैद मैं और पंख कटा तोता, दोनों ही किसी पूर्व जन्म के संबंधी प्रतीत होते हैं।

सहसा तोता घूमता हुआ मेरे पैरों पर चोंच मारने लगता है। मैं प्यार से उसे सहलाने लगती हूँ। जाने कैसे रोकते हुए भी दो बूँदें कोरों से चू तोते के कोमल पंखों में गिरकर विलीन हो जाती हैं। मैं कभी कटे पंख, कभी तोता और कभी नई कैंची को देखने लगती हूँ। तोता मेरी हथेली पर बैठा है, बिल्कुल ऐसे ही जैसे मैं सुदीप के घर...।

- 290 - ए, कृष्णानगर, डॉ दत्ता लेन
बुलंदशहर - 203001, उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 9917819962
ई-मेल: sudhagoyal0404@gmail.com

बेटे के व्याह का नेह-निमंत्रण

- श्री ओम प्रकाश मंजुल -

'देता हूँ मैं नेह निमंत्रण, प्रियवर! आना भूल न जाना।
बेटे के विवाह में श्रीमन! है अवश्य तुमको पधारना।।'

हमारे स्नेहीजन! एक वर्ष पूर्व ही आपके इस जन ने आपको बेटी के विवाह का निमंत्रण भेजा था, भले ही उस पुनीत प्रोग्राम में अकिंचन आपके पवित्र दर्शन न हो सके। सृष्टि के मैनेजिंग डायरेक्टर की महान और डायरेक्ट अनुकंपा से एक वर्ष बाद ही मेरी दूसरी संतान की शादी होने जा रही है। खुशी की विशेष बात यह है कि यह लड़का है, लड़की नहीं। बेटी के व्याह में आपके न पधारने का औचित्य मैं मानता हूँ। उस दिन मौसम खराब था, बड़ी लगन-शगुन होने के कारण शहर में सैकड़ों शादियाँ थीं, आप लोगों में बहुत से बीमारी की चपेट में थे या बीमारी आने की लपेट में थे, बहुत से आत्मीय बाहर गये हुए थे और बहुत से बारात की तिथि-तारीख भूल गये थे। ऐसे हालातों में बेचारे बहुत से बढ़िया लोग, जिनने कई-कई बेटियों के विवाह में मुझे अनुगृहीत किया, मेरे यहाँ न आ सके। पर प्रेमीजन! इस बार पुत्र का पाणिग्रहण संस्कार है, बेटी का विवाह नहीं। सो, इस बार ऐसा कुछ न होगा। बारात वाली रात न आंधी-पानी आयेगा, न शहर में कई शादियाँ होंगी, न आप बीमारी की मार खा रहे होंगे, न आप बाहर गये हुए होंगे और न आप बारात का दिन-दिनांक भूलेंगे। सो, इस बार तो आपको आना ही आना है।

यदि बेटी के विवाह में सर्वस्व सामान्य रहा होता, तो नाना प्रकार के इतने घराती आते कि अपुन को उनके स्वागत-सत्कार करने में लोहे के चने चबाने पड़ते और नानी याद आ जाती। तब क्या प्रिंसिपल लायकराम, जो बाद को 'कमला देवी-विमला देवी मनी मेकिंग कालेज' के ईमानदार व आदर्श मैनेजर बनकर इंसान बन गये और जिनकी महानता के कारण मेरे जीवन के तीस सुनहरे साल पानी भरते रहे, मुझे धन्य करने हेतु न पधारते? उनकी तीन बेटियों के विवाह में व्योहार करना तो मेरा फर्ज था। वे सज्जनता की पराकाष्ठा हैं, सो अवश्य आते। इन्हें छोड़ें, हाल ही में अपने डिग्री कालेज के सदा सदस्य, चलतेराम की कन्या की शादी में मैं सौ मील दूर गया था, किसी के रोके रुकनेवाले नहीं थे। समझ रहे हैं न, समस्या माइलेज और मनी की नहीं थी, समस्या मौसमी थी। इसी प्रकार मेरे कई प्रकार के आत्मीयजन, जिनकी बेटियों के विवाह में जाते-जाते मेरे जूते घिस गये, न आ सके। न आ पाने के कारण सारे के सारे वही यूनिवर्सल रहे हैं। कुछ बारिश की वजह से, तो कुछ बीमारी की वजह से नहीं आ पाये, कुछ दूसरी बारातों में या बाहर चले गये और कुछ भूल के शिकार हो गये।

विवाह-शादी के मौके पर जब कोई आत्मीय आता है, दिल बासों उछल जाता है। हमारे मित्र प्रकाश चंद्र जो मेरे अधीनस्थ रहकर ही सेवानिवृत्त हुए और जिनकी सुकन्या की शादी में मैं 100 रुपये प्रति फेरा की दर से दान दे आया था, को ही लीजिए। यह आये भी और जबरदस्ती 200 रुपये का लिफाफा भी पकड़ा गये। अच्छा याद आया - दो का अंक मेरे लिए सर्वाधिक शुभ रहा है। आत्मीयों की आत्मजाओं की शादी में मुझे 200 रुपये का लिफाफा देने में विशेष खुशी होती है। इनमें से भी कुछ दूरदर्शी व महान आत्माएँ मुझे 100 रुपये का लिफाफा जबरदस्ती पकड़ा गयीं। (हालांकि मेरी एक ही बेटी ब्याहने को है, जबकि इन दूरदर्शियों की दो-दो, तीन-तीन बेटियाँ अभी भी क्वाँरी हैं। मुझे कितनी खुशी हुई थी तब। दरअसल बात पैसे की नहीं, प्रेम की है। जिन कुछ लोगों को 'आनरेबल' समझकर मैंने निमंत्रण भेजा था, उनमें से भी कुछ नहीं आये। या तो ये वास्तव में 'आनरेबल' नहीं थे या इनकी दृष्टि में मैं ही 'आनरेबल' नहीं था। इस प्रकार के अनेकों अच्छे उदाहरण हैं खैर ...

जिन महाजनों की बेटियों के ब्याह में मैंने 40-45 वर्ष पूर्व 21 रुपये का व्योहार किया था, उन्हें यह सोचकर बुलाया ही नहीं कि वे लिहाज के हिसाब से या हिसाब के लिहाज से एक हजार रुपये का लिफाफा तो देंगे ही। कल्पना करें, यदि ये सुजन भी आये होते, तो मेरी कितनी भज्जी पिटी होती।

सुहृद महानुभाव! एक बार पुन: निवेदन है कि इस बार सब कुछ सामान्य रहेगा, क्योंकि यह लड़के की शादी है। इसमें न आंधी आएगी, न पानी, न हारी होगी, न बीमारी, न नगर में कई बारातें आयेंगी, न कई लोग बाहर जायेंगे और नहीं कोई सज्जन ब्याहवार भूलेंगे। सबसे बड़ी बात जिसे आप जानते ही हैं बेटे का ब्याह है, सो कोई व्योहार भी नहीं करना है। (देना ही हो तो 'ऐटहोम' में दे दीजिएगा।) इस दैनिक के प्रतिष्ठित संपादक के साथ ही इस लेख को पढ़नेवाले सभी अखबारों के सभी विद्वान संपादक भी उत्सव में आने के लिए आमंत्रित हैं।

अस्तु, टेंशन-फ्री और फ्री-हैंड होकर खरामा-खरामा चले आइएगा। हमें आपके शुभागमन की प्रतीक्षा रहेगी-

'सात फरवरी भूल न जाना।
साथ में बच्चों को भी लाना।।'

- 'कामायनी' कायस्थान
पूरनपुर-पीलीभीत (उत्तर प्रदेश) 262122
मोबाइल: +91 9457822961

विशेष बार मिल

6.3 मिलियन टन विस्तारण योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में तीन नये मिल लगाये गये हैं, जिसके तहत एक विशेष बार मिल की स्थापना भी की गई है। 3 अप्रैल, 2015 को इस मिल का प्रवर्तन किया गया और वर्तमान में उत्पादन प्रक्रिया का स्थिरीकरण किया जा रहा है।

वर्ष में इस मिल के द्वारा 7,50,000 टन प्लेन रॉड का उत्पादन किया जाएगा। डिजाइन के अनुसार इस मिल से 20 एम.एम. से 45 एम.एम. आकार के प्लेन रॉड का उत्पादन होगा, जबकि मिल में 16 एम.एम. एवं 18 एम.एम. के लिए भी प्रावधान दिया गया है। बाजार में माँग में वृद्धि होने पर इस मिल द्वारा 9,00,000 टन प्रतिवर्ष विशेष बार का उत्पादन किया जा सकेगा।

इस मिल में मीडियम और हाई कार्बन इस्पात, केस हार्डेनिंग इस्पात, कोल्ड हेडिंग इस्पात, इलेक्ट्रोड इस्पात, स्प्रिंग इस्पात, बेयरिंग इस्पात, फ्री कटिंग इस्पात जैसे विशेष श्रेणी के इस्पात रोल किये जा सकेंगे।

12 मीटर लंबाई के 150 एम.एम. स्क्वेयर आकार के सतत ढलाई बिलेट इस मिल के लिए इनपुट होगा। 96% उत्पादन प्राप्ति के मद्देनजर 7,50,000 टन बार उत्पादन के लिए लगभग 7,81,000 टन बिलेट की आवश्यकता होगी।

री-हीटिंग फर्नेस:

200 टन प्रतिघंटे की क्षमता वाली एक वॉकिंग बीम फर्नेस लगाई गई है, जिससे बिलेट को वांछित ताप तक गर्म किया जा सकेगा। इस फर्नेस द्वारा ईंधन के रूप में मिक्स्ड गैस का प्रयोग किया जाता है। अत्याधुनिक नियंत्रण प्रणाली के माध्यम से इस फर्नेस द्वारा बिलेट को सभी ओर से समान रूप से गर्म किया जा सकता है। इससे रोलिंग में सुविधा मिलती है, साथ ही साथ परिसज्जित उत्पाद की गुणवत्ता भी सुनिश्चित होती है। फर्नेस के साथ तीन बिलेट चार्जिंग ग्रिड और एक रोलर टेबल की सुविधा प्रदान की गई।

मिल :

मिल में 6 स्टैंड रफिंग ट्रेन, 6 स्टैंड इंटरमीडियट ट्रेन, 6 स्टैंड प्री-फिनिशिंग ट्रेन एवं 3 स्टैंड फिनिशिंग ट्रेन की सुविधा है। 150 एम.एम. एवं 125 एम.एम. बिलेट को इस मिल के द्वारा 20 एम.एम. व्यास से 45 एम.एम. व्यास तक रोल किया जा सकता है। स्टैंड्स के बीच में लूपर लगाये गये हैं, जिससे तनावरहित रोलिंग सुनिश्चित होता है। प्रत्येक रोलिंग ट्रेन के पश्चात क्रॉप शियर का प्रावधान है, ताकि जरूरत पड़ने पर गर्म बार को काटा जा सके।

फिनिशिंग सुविधाएँ :

परिसज्जित बार नियंत्रित जल शीतलन क्षेत्र से गुजरते हुए सामान्य तापमान को प्राप्त करेगा, जिसे सीधी लंबाई या क्वॉयल का रूप दिया जा सके। सीधी लंबाई के बार कूलिंग बेड होते हुए कोल्ड शियर तक लाये जाते हैं, जिन्हें 12 मीटर की लंबाई में काटकर बंडल बनाया जाता है। दूसरी ओर गैरेट क्वॉयलर के माध्यम से प्रत्येक बिलेट को एक क्वॉयल का रूप दिया जाता है। ज्ञात हो कि आर आई एन एल-वी एस पी में 16 एम.एम. एवं उससे ऊपर के आकार को क्वॉयल रूप में उत्पादन की सुविधा इसी मिल में प्रदान की गई है।

प्रमुख उपकरण एवं सुविधाएँ :

- बिलेट चार्जिंग
  - बिलेट एलिवेटर एवं रोलर टेबल
  - बिलेट को निकालने के लिए बिलेट डिस्चार्ज स्किड
- री-हीटिंग फर्नेस
  - बिलेट री-हीटिंग के लिए 200 टन प्रतिघंटे वॉकिंग बीम फर्नेस
  - ईंधन के रूप में मिक्स्ड गैस
- मुख्य मिल
  - सिंगल स्ट्रैंड रोलिंग
  - हाइड्रॉलिक डीस्केलर
  - रफिंग स्टैंड्स (6 संख्या)
  - इंटरमीडियट स्टैंड्स (6 संख्या)
  - प्री-फिनिशिंग स्टैंड्स (6 संख्या)
  - फिनिशिंग स्टैंड्स (3 संख्या)
  - प्रत्येक रोलिंग ट्रेन के पश्चात क्रॉप शियर
  - ऑनलाइन आकार मापन
- फिनिशिंग सुविधाएँ
  - कम तापमान पर रोलिंग के लिए जल शीतलन बॉक्सेस
  - डिवाइडिंग एवं चॉपिंग शियर

- कूलिंग बेड
- कई आकार में तैयार करने के लिए कोल्ड शियर
- बार काउंटिंग एवं बंड्लिंग स्टेशन
- स्वचालित सैंपल कटिंग सुविधाएँ
- रोलर टेबल
- स्ट्रैपिंग मशीन
- मेटल टैग एम्बॉसिंग मशीन
- बंडल अनलोडिंग मशीन

जल प्रणाली :

सभी जल बॉक्सेस में ताप अनुश्रवण/नियंत्रण प्रणाली लगाई गई है, जिसके माध्यम से रोल किये गये बार को नियंत्रित रूप से शीतलित किया जाता है। डीस्केलर इकाई के लिए प्रत्यक्ष शीतलित जल भेजा जाता है। मिल के सभी स्टैंड समूह के लिए अलग-अलग जलापूर्ति की सुविधा प्रदान की गई है। दूषित जल को फिल्टर के माध्यम से साफ किया जाता है एवं उसे पुन: प्रयोग में लाया जाता है।

अन्य :

- विद्युतीय स्वचालन, यंत्रीकरण एवं संचार प्रणाली
- स्क्रेप डिस्पोसल प्रणाली
- हाइड्रॉलिक प्रणाली
- लूब्रिकेशन प्रणाली
- न्युमेटिक प्रणाली
- अग्निशमन प्रणाली
- वातानुकूलित प्रणाली
- प्रयोगशाला सुविधाएँ

विशेष सुविधाएँ :

- स्वचालित ऑनलाइन आकार मापन यंत्र
- सटीक आकार सहित फ्री-साइज रोलिंग
- त्वरित आकार परिवर्तन के लिए एकल समूह रोलिंग की परिकल्पना
- डी आई एन 10060 मानक के अनुरूप परिसज्जित उत्पाद
- कम तापमान (780 से 850^0 सेंटीग्रेड) पर रोलिंग
- सीधी लंबाई एवं क्वॉयल आकार की सुविधाएँ
- उत्पाद को रखने के लिए पर्याप्त जगह

प्रयोगशाला :

विशेष बार उत्पाद के परीक्षण एवं जाँच के लिए सभी आवश्यक सुविधाएँ प्रयोगशाला में लगाई गई। तैयार उत्पाद का ऑनलाइन परीक्षण किया जा सकता है। यांत्रिक एवं आंतरिक जाँच के लिए यू.टी.एम., टार्सन टेस्टिंग, मेटलर्जिकल माइक्रोस्कोप आदि सुविधाएँ इस प्रयोगशाला का हिस्सा है। सैंपल को सही आकार देने के लिए सैंपल प्रिपरेशन उपकरण भी स्थापित किये गये हैं।

रोल शॉप :

इस मिल के लिए अलग से सभी सुविधाएँ से लैस एक रोल शॉप स्थापित किया गया है। इस रोल शॉप में निम्नलिखित सुविधाएँ लगाई गई हैं :

1. टंगस्टन कार्बाइड रोल सहित सभी रोल का टर्निंग एवं ड्रेसिंग
2. बेयरिंग एवं चोक्स का अनुरक्षण
3. बेयरिंग के साथ रोल्स का असेंब्लिंग
4. गाइड और वेस्ट बार की मरम्मत
5. इनप्रॉसेस रोल्स को रखने के लिए रोल रैक
6. ट्रांसफर कार

विशेष श्रेणी के आयातित इस्पात उत्पाद पर निर्भरता को कम करने एवं बाजार में विशेष इस्पात की माँग को ध्यान में रखते हुए आर आई एन एल में इस मिल की स्थापना की गई। कम तापमान पर रोलिंग के माध्यम से इस मिल के उत्पाद की गुणवत्ता वास्तविक उपभोक्ताओं की आवश्यकता के अनुरूप होगी। पुरानी मिलों के उत्पादों के सतह की गुणवत्ता की तुलना में विशेष बार मिल के उत्पाद काफी बेहतर होंगे। इसके साथ अधिक व्यास के वॉयर रॉड के क्वॉयल के उत्पादन से भी बाजार में खास पहचान बनाने में कंपनी को लाभ होगा।

बाल-कविताएँ

क्योंकि पृथ्वी गोल है...

मैं दौड़ती हूँ
चाँद दौड़ता है
आकाश के तारे
दौड़ते हैं
पेड़-पौधे और निठल्ला पहाड़
भी दौड़ता है
खेत में चरती गाय
फुदकता बकरी का मेमना
और झुके हुए बिजली के खंभे
सब दौड़ते हैं मेरे साथ
क्योंकि पृथ्वी गोल है।
उम्मीदों के बबूल से
आम खाने की चाहत ने
कर्कश और कंटीली
झाड़ियों की बाड़
खड़ा कर दिया चारों ओर
मैंने अपने
और भुगत रही हूँ स्वयं
चुभन के दंश को
क्योंकि पृथ्वी गोल है।

पानी

पानी हलक से नीचे
उतरता है, तब
देता है असीम राहत
सुरसुरी सी ठंडक
मधुर सी मुस्कान
फूलों सा खिलने
की ललक
पानी अमृत नहीं
कुछ और है
अमृत से भी बढ़कर
जो देव व राक्षस
दोनों की तलाश है
चर-अचर की जरूरत
और खुद धरती की
आकांक्षा है उसे
माँ का दर्जा
बरकरार रखने के लिए
पानी मात्र
प्रकृति का उपहार
नहीं बल्कि
सृष्टि के सर्जक की
प्यास भी है।

मानव

ईश्वर की अप्रतिम सर्जना
मानव मोटा
मानव छोटा
मानव दुबला
पतला गोरा काला
और भला बुरा मानव
ऋण-धन से युक्त मानव
धन से युक्त
खेलता है प्रकृति की
सर्जनाओं से
हँसता है उसकी भावनाओं से
संघर्ष करता है
अनुकरण के लिए
अपनी चेष्टाओं से
खींचता है गहरी लकीर
समाज के ललाट पर
ताकि अमर हो जाए
उसकी धनात्मक सोच,
वहीं ऋण युक्त मानव
खेल बिगाड़
बन खड़ा होता है
बेडौल पत्थर सा
सृजन का बाधक
खुद कदम आगे करने
के बजाय
लिपट जाता है
समाज के पैरों से
और खींच देता है पीछे
तेज बढ़ती मानवता को
मानव अपने आप में
मानव बनने का संघर्ष है।

- सुश्री वी नंदिता
इंजीनियरिंग (प्रथम वर्ष)
विज्ञान इंजीनियरिंग कालेज, विशाखपट्टणम

प्यारी माँ

माँ तू है बहुत प्यारी सी
तू है बहुत न्यारी सी
तू है बहुत थोथी सी
तू है बहुत संतोषी सी।

कितना ख्याल रखती हो माँ
धूप में छाँव बनकर,
अंधेरों में उजाला बनकर,
सबका ख्याल रखती हो माँ

ओ! माँ तुम बड़ी प्यारी सी हो।
तुम नहीं होती तो क्या होता?
कौन हमारा ख्याल रखता?
कौन हमें प्यार करता?
कौन हमें डाँटता?
कौन हमें समझाता?

आपके बिना है जीवन अधूरा सा।
भूल हुई हो तो डाँट देना,
रूठ जाऊँ तो मना लेना।
पर माँ हमें छोड़ कर कहीं न जाना।

क्योंकि आपकी ममता में आपकी
आंचल में खेलती आ रही हूँ माँ
आपके प्यार के बिना जी न सकूँगी।
आपके सहारे के बिना आगे बढ़ न सकूँगी।
बस आप हो मेरे जीवन का सहारा...
हो माँ, हो माँ, हो माँ...।

- सुश्री जीनत पटेल
कक्षा - 11 'ए'
केंद्रीय विद्यालय, उक्कुनगरम
विशाखपट्टणम

शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति

- सुश्री आकांक्षा मिश्र -

शिक्षा का दूसरा नाम संस्कार है। शिक्षा के माध्यम से हम अपने आपको, अपने समाज को और अपने देश को समृद्ध करते हैं। शिक्षा हमारे आचार-विचार और व्यवहार को परिस्कृत एवं परिमार्जित करती है। शिक्षा के बल पर हम अपनी दिशा और दशा को सुधारने में कामयाब होते हैं। साथ ही शिक्षा हमारे जन्म से शुरू होकर जीवन के आखिरी पड़ाव तक चलती रहती है। परिवार संस्कार की पहली पाठशाला है और माँ पहली शिक्षिका। परिवार के अन्य सदस्यगण हमारा मार्ग प्रदर्शन करते हैं और हम उनका अनुकरण कर अपने जीवन में सफलता की सीढियों पर निरंतर बढते जाते हैं। किसी भी बच्चे का माँ से पवित्र रिश्ता होता है, क्योंकि हर माँ अपने बच्चे के लिए गुरू तो होती ही है साथ ही साथ वह ब्रह्म स्वरूपिणी भी है। माँ में ब्रह्मा, विष्णु, महेश जैसे त्रिदेवों का साक्षात् दर्शन भी हमें मिलता है। इसलिए तो हमारे ग्रंथों में कहा गया है;

'नमों विश्वसजे पूर्वम विश्वं तदनु विभ्रते।
अथ् विश्वं संहर्त त्रेता स्थितात्मने नम:।।'

अर्थात् जब माँ हमारा सृजन करती है, तो ब्रह्मा के रूप में होती है, जब हमारा भरण-पोषण करती है तो विष्णु सदृश होती है और जब हमारे बुरे संस्कारों का संहार करके हमारे भीतर सुसंस्कृत और सदाचारी बनने का भाव भरती है, तो साक्षात भगवान शिव (महेश) की प्रतिमूर्ति बन जाती है। यहाँ शिव का अर्थ कल्याणकारी है। माता-पिता के द्वारा दिया हुआ संस्कार बच्चे को आजीवन पुष्पित, पल्लवित और संवर्धित होने में सहायता करते हैं। यथा;

'प्रातकाल उठि के रघुनाथा।
मातु पिता गुरू नवावहिं माथा।।'

यही है हमारी सभ्यता और संस्कृति। आज पूरी दुनिया अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूलकर पश्चिमी सभ्यता की ओर अग्रसर हो रही है। जिसका खामियाजा हम भुगत रहे हैं और आनेवाली पीढ़ी भी उसे भुगतेगी। हमारा खान-पान, पोशाक और पहनावा, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, रिश्ते-नाते और दिनचर्या में होनेवाले हर काम-काज पर इसका असर देखने को मिल रहा है। यह पाश्चात्य (पश्चिमी) सभ्यता और संस्कृति एक दिन हमारे जनमानस को लूला, लंगड़ा और अपाहिज बनाकर छोड़ेगी क्योंकि

'न जाने क्यूँ आदमी अपनी सभ्यता,
संस्कृति से ऊब जाता है।
करो ना पश्चिम का अंधा अनुकरण,
पश्चिम में जाकर सूरज डूब जाता है।।'

हमारे ऋषि-मुनियों ने गुरूकुल की व्यवस्था शुरू की थी, जिसमें गुरू जी के घर अथवा आश्रम में बच्चे पढ़ा करते थे। उस समय न कॉपी होती थी न किताब, लेकिन गुरू के प्रति श्रद्धा और भक्ति बेहिसाब होती थी और शिक्षा की परिभाषा होती थी;

'गुरू सूश्रुषा: विद्या'

उस समय शिष्य गुरूजी की जितनी सेवा करता था अथवा उनकी आज्ञाओं का पालन करता था उसकी शिक्षा उतनी ही उम्दा और बेहतर होती थी। समाज बदला, व्यवस्था बदली और नए साम्राज्य कायम हुए। लेकिन बदलती परिस्थितियों ने गुरूकुल व्यवस्था को बदलकर शिष्यकुल व्यवस्था बना दिया। जिसका स्वरूप बिल्कुल गुरूकुल व्यवस्था के ठीक विपरीत हो गया और अब गुरू के घर शिष्य नहीं बल्कि शिष्य के घर गुरू जाकर ट्यूशन पढ़ाने लगे और इस व्यवस्था का नाम हुआ शिष्यकुल। समय बदला, व्यवस्था बदली, पुराने साम्राज्य का सूरज अस्त हुआ और अंग्रेजों के साम्राज्य का सूर्य उदय हुआ। उन्होंने बीच का रास्ता निकाला कि न कोई किसी के घर पढ़ने जाएगा, न कोई किसी के घर पढ़ाने जाएगा। एक निर्दिष्ठ स्थान होगा जिसे 'स्कूल' कहा गया, आज हम सभी 'स्कूल' के उत्पाद हैं और संस्कृति और समाज का स्वरूप आपके सामने है। अब हम इस समाज में अपनी सफलताओं की संभावनाएँ तालाश रहे हैं। संगणक (कंप्यूटर) की शिक्षा से चकाचौंध दुनिया तो दीख रही है, लेकिन इसकी शिक्षा ने हमारी बुनियादी ढ़ाँचे को जर्जर बना दिया है। अगर हम अपने पुराने वसूलों और संस्कारों से समझौता करेंगे तो निश्चित ही इसके दूरगामी परिणाम होंगे। विज्ञान ने अविष्कार तो किया लेकिन हमारे संस्कार हमसे छीन लिया। हमारी सभ्यता और संस्कृति नैतिक मूल्यों पर आधारित रही है। आज भी हमें उन जीवन मूल्यों को संजोये रखने की जरूरत है। जिसके बल पर हम अपने आप को अग्रसर कर पाएंगे।

निश्चित रूप से हमारे शिक्षा में हमारी सभ्यता और संस्कृति की अहम भूमिका होती है। यह मैं बल देकर कहना चाहती हूँ कि:-

'हमारी सभ्यता व संस्कृति की शाम न होगी।
भारत की आजादी कभी बदनाम न होगी।।
शिक्षा व संस्कार हमारे बल के संबल होंगे।
शान तिरंगे की शर्मशार कभी न होगी।।

- 10 वीं कक्षा
केंद्रीय विद्यालय
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9642024966

मेरी अविस्मरणीय पर्वतीय यात्रा

- सुश्री प्रिया गोगोई -

मैं अपने जीवन में पहली बार पर्वतों की रानी मसूरी की यात्रा की। दसवीं बोर्ड की परीक्षा के पश्चात छुट्टियों के दिन थे। दिल्ली तप कर अग्निकुंड होती जा रही थी। पिछले जून में मुझे अपने मित्रों के साथ मसूरी यात्रा का सुखद अवसर मिला। हम कुल मिलाकर दस लोग थे। सबसे पहले हमने दिल्ली से मसूरी के लिए बस पकड़ा। बस दिन में लगभग ग्यारह बजे मसूरी के लिए रवाना हुई। हम सभी मित्रों के पास बहुत ही संतुलित सामान था। हम लोगों ने सामान ढ़ोने की परेशानियों से बचने के लिए अपने बैग को हल्का ही रखा था। क्योंकि हम सभी के मन में आया कि जब होटल में ही ठहरना है, तो सिर्फ पहनने के कपड़े भर लेने से काम चल जाएगा। दिल्ली की गरमी को देखकर लगता था कि न जाने यात्रा कैसी होगी? किंतु देहरादून पहुँचने बाद जान में जान आई। मौसम खुशनुमा होने के कारण भूख लगने लगी नहीं तो पानी पीते-पीते बुरा हाल था। देहरादून में हल्का सा चाय नाश्ता लिया तो मन पूरी तरह स्वस्थ्य और ताजा हो गया। देहरादून से मसूरी का मार्ग घुमावदार तथा ऊँची नीची चढ़ाइयों और ढलानों से भरा था लेकिन था बहुत मनमोहक। मार्ग की रमणीयता और प्राकृतिक हरियाली ने मन को प्रफुल्लित कर दिया। हम तो इन्हीं मार्गो की रहस्यभरी यात्रा से प्रसन्न थे।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे थे हमें एक से बढ़कर एक मनोरम दृश्य दिखाई दे रहे थे। मन करता था अभी यहीं उतर कर कुछ देर इस सौन्दर्य को जी लिया जाए। लेकिन अगले पल की सुंदरता हमें आगे बढ़ते रहने के लिए अभिप्रेरित कर रही थी। मसूरी की पहाड़ियों पर जब बस चढ़ने लगी तो हल्की सी धूप अभी बाकी थी। शाम बहुत सुहानी हो चुकी थी। दूर पहाड़ों पर पड़ती धूप गुनगुनी एहसास दिला रही थी। लगभग सभी मित्रों के लिए इस तरह की यात्रा करना एक नए अनुभव जैसा था। हम अपने अविभावकों को तहे दिल से धन्यवाद भी दे रहे थे, कि उन्होंने हमें स्वच्छंद भाव से घूमने और मसूरी में फैली प्राकृतिक छटा को निहारने का मौका दिया।

मसूरी का सर्पाकार मार्ग मन को एकदम से झनझना रहा था। जब कभी नजर नीचे खाइयों पर पड़ती तो कलेजा एकदम धक्क से हो जाता। पहाड़ों से गिरते झरनों को देख मन करता जाकर भींग आएं, लेकिन रात बढ़ने का भय भी सता रहा था। कभी-कभी तो झरने इतने नजदीक होते थे कि लगता था हाथों से उनका जल छू ले। लेकिन हाथ बाहर करते ही कंडक्टर की लाल आँखे और भारी-भरकम आवाज 'बाहर हाथ कोई नहीं निकालेगा। सभी अपनी खिड़कियों को बंद लो।' सुनकर हम सहम जाते।

पहाड़ियों की उँचाइयों और दूरियों के मामले में हम हमेशा भ्रमित हो रहे थे। एक बहुत ही ऊँची चोटी हमें इतनी नजदीक लग रही थी कि लगता था कि हम उसपर आसानी से पहुँच जाएंगे लेकिन नजदीक आने पर लगता था कि वह बहुत दूर है। मसूरी शहर की रोशनी दीखने लगी थी लगता था अभी पाँच मिनट में पहुँच जाएंगे। लेकिन ज्योंही बस कुछ दूर चलती तो लगता था अभी बहुत दूर है। टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों का जाल, उनपर फर्राटे से भागती छोटी-बड़ी मोटरें इस बात का एहसास दिला रहीं थी, अब रात हो रही है जल्दी से कहीं अपना रैन बसेरा ढूँढ़ लेना चाहिए। जब हम मसूरी पहुँचे तो रात के आठ बज चुके थे। बस से उतरते ही होटलों के एजेंट और कुलियों ने हमें घेर लिया। हम सभी विद्यार्थी थे। हमारे पास बड़े आलिशान होटलों में ठहरने के लिए पैसा कहाँ था? इसीलिए एक सस्ते होटल में अपने लिए चार कमरे बुक करा लिया। होटल के एजेंट और कुलियों ने विद्यार्थी जानकर हमें तंग नहीं किया। हमने गनहिल के पास एक होटल में कमरा लिया था। होटल थोड़ी उँचाई पर था। वहाँ से मसूरी का बस स्टैंड साफ दिखाई दे रहा था। होटल की छत से बहुत दूर तक पर्वतों की श्रेणियाँ दीख रही थीं। उन पर बसे नगरों की बत्तियाँ बड़ी मनोरम लग रही थीं। हम सभी अपना सारा समान कमरों में फेंककर शीघ्र ही माल रोड पर घूमने निकल आए। जाने कितनी देर तक हम टहलते रहे। वापस आते-आते रात के ग्यारह बज गए। होटल का बैरा भी हमारी प्रतीक्षा कर रहा था।

अगले दिन हम लोग घोड़े पर सवार होकर लाल टिब्बा गए। मसूरी में लाल टिब्बा नामक एक प्रसिद्ध जगह है, जहाँ बहुत उच्चशक्ति की अत्याधुनिक दूरबीन लगी हुई है। उसकी सहायता से मीलों दूर तक फैली गंगोत्री की पर्वत श्रृंखला को हम स्पष्ट देख सकते हैं। बहुत से लोग वहाँ पैदल चले जा रहे थे। रास्ते में कहीं कहीं एकदम ऊँचाई मिल जा रही थी। वहाँ घोड़े बार बार फिसल रहे थे। जब वे फिसलते तब डर से हमारा हृदय धक-धक करने लगता था। लेकिन जब वह बेजुबान संभल जाता तब हमारा मन उसके प्रति कृतज्ञता से भर उठता।

मसूरी के एक झरने पर हमने खूब नहाया। मानों दिल्ली की सारी तपन को हम वहीं धूलकर खत्म कर देना चाहते हों। मन तो किया कि वही एक कुटी बना लें।

- 11 वीं कक्षा 'ए'
केंद्रीय विद्यालय
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9642024966

दु:ख

दु:ख जीवन की एकमात्र ऐसी संवेदना है, जिसे हम कतई नहीं चाहते हैं कि वह हमारे सामने कभी प्रकट हो। फिर भी विडंबना यह है कि आजीवन हम उससे ही बचने का प्रयास करते रहते हैं। लेकिन दु:ख का साम्राज्य इतना विशाल है कि वह किसी न किसी तरह से प्राणी को अपनी गिरफ्त में ले ही लेता है। मनुष्य का जीवन कभी भी दु:ख से मुक्त नहीं है या यूँ कहें कि दु:ख के बिना मानव के जीवन की कल्पना ही अनुचित है। शायद इसीलिए गौतम बुद्ध ने कहा कि संसार में केवल दु:ख ही है, 'सव्वं दुक्खं-सर्व दुक्खं।' इसीलिए इस लोक को दु:खलोक अथवा मृत्युलोक माना गया। जरा और मृत्यु को घोर दु:ख समझा गया। जन्म के साथ-साथ तृष्णा और इच्छा को भी दु:ख ही माना गया।

उपनिषदों ने दु:ख को शांत, अनित्य और नश्वर तथा अनंत, नित्य और अमर माना है। लेकिन बुद्ध ने किसी पदार्थ को अनंत, नित्य और अमर नहीं माना है। अर्थात सुख कुछ नहीं है, सब कुछ दु:ख ही है। ऐसा माना जाता है कि बुद्ध के दु:खवाद ने हिंदू धर्म के दर्शन को प्रभावित किया। क्योंकि सांख्य ने प्रकृति को ही त्रिगुणमयी बतलाकर सभी वस्तुओं को सत्व (सुख), रज (दु:ख) और तम (मोह) से निर्मित माना है। अर्थात शुद्ध सुख कहीं नहीं है। जो भी सुख दुनिया में वर्तमान है, वह दु:ख मिश्रित ही है।

दुनिया में दु:ख का त्रिविध मौजूद है - आध्यात्मिक (आधि-व्याधि), आधिमौलिक (जलना, गिरना, डूबना आदि) एवं आधिदैविक (प्रेत-पिशाच का दण्ड)। इनसे मुक्ति ही अपवर्ग या मोक्ष है। मध्यकाल के संत कवियों ने भी बुद्ध का समर्थन करते दीखते हैं। यथा, बुद्ध ने माया को दु:ख का कारण माना तो कबीर ने भी माया को अत्याज्य कह दिया, जैसे,

'माया तजू तजि नहीं जाइ, फिरि फिरि माया मोहिं लपटाइ।'

कबीर ने कहा है कि माया (दु:ख) आदर है, मान है, स्वाद है, यहाँ तक कि जप, तप, योग भी माया (दु:ख) ही है। इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने भी जनम-मरण दोनों को दु:खद बताया है। जैसे, 'जनमत-मरत दुसह दुख होई।' अर्थात यह जीवन-मरण ही दुख है।

जर्मनी के दार्शनिक शोपेनहार और हार्टमन के विचारों पर भी बुद्ध का प्रभाव अधिक दीखता है। आध्यात्मिक दृष्टि से दु:ख के दो प्रकार हैं, पहला नित्य दु:ख और दूसरा अनित्य दु:ख। नित्य दु:ख में दु:ख का शमन कभी भी नहीं होता और अनित्य दु:ख की स्थिति में मनुष्य मृत्यु अथवा निर्वाण के पश्चात ही दु:ख मुक्त होता है।

दु:ख का एक सामाजिक व भौतिक पक्ष भी है, जिसे सहज दु:ख के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। इसीलिए हम अक्सर कहते हैं, 'मेरे जीवन में सुख कहाँ है? ईश्वर ने हमें ही विषाद पूर्ण जीवन क्यों दिया है?' इसी क्रम में हम भौतिक सुख-सुविधाओं को सुख और असुविधाओं या व्यवधानों को दु:ख मान बैठते हैं। इसी संदर्भ में एक बार किसी ने नीत्से से पूछा कि 'हम इतने दुखी क्यों हैं?' नीत्से ने बड़े ही प्यार से उससे पूछा, 'क्या आपने कभी सुख की कामना की है? यदि हाँ तो मेरे दोस्त, यह जान लीजिए कि जिस पल आपने सुख की कामना की, उसी वक्त आप दु:ख के भी काम्य हो गए। क्योंकि संसार की सभी चीजें परस्पर एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। इसीलिए सुख के बिना दु:ख और दु:ख के बिना सुख हो ही नहीं सकता।'

प्राणी अपना पूरा जीवन दु:ख को हराने और सुख को तलाशने में लगा देता है। फिर भी अंतत: दु:ख उसे हरा देता है। एक और बात कहना जरूरी है कि दु:ख स्थाई नहीं है। यह मन से संपृक्त भाव है, जो सदैव परिवर्तनशील है। उदाहरण के लिए यदि किसी को चोट लगती है तो उसे शारीरिक दु:ख होगा और उसके प्रियजन को मानसिक, लेकिन यदि वही चोट उसके किसी दुश्मन को लग जाए तो हो सकता है वह आनंदित हो उठे। इसलिए बुद्ध ने कहा है कि 'संसार की असीमितता, उसका विस्तार संसार में नहीं, बल्कि मन में है। जीवन में यदि सुख दिखाई देता है तो वह मन के कारण और यदि दु:ख दिखाई देता है, तो उसका कारण भी मन ही है।

कुछ मनोवैज्ञानिक शोधकर्ताओं ने माना है कि 'दु:ख एक संक्रमण जैसा है और इस संक्रमण को फैलाने में हमारी आँखें और इंद्रियाँ मुख्य भूमिका निभाती हैं। इसीलिए अलग-अलग लोगों में एक ही घटना के दु:ख अलग-अलग स्तरों पर अनुभव किए जाते हैं।'

दु:ख की अनुभूति हमें परेशान जरूर करती है, लेकिन सुख की चाहत में जीवन-संघर्ष के लिए अभिप्रेरित भी करती है। दु:ख को परिभाषित करना बहुत कठिन है, क्योंकि यह व्यक्ति के जैविक गुण, सामाजिक परिवेश, आध्यात्मिक चिंतन, आर्थिक परिस्थिति, शारीरिक स्वास्थ्य आदि पर निर्भर करता है। प्रसिद्ध चिंतक मेस्लो के अनुसार 'एक आदर्श जीवन में आठ आवश्यकताओं की पूर्ति जरूरी है। इनमें भोजन व वस्त्र जैसी शारीरिक आवश्यकताओं के साथ-साथ मानसिक संतोष, प्रेम, संपन्नता, ज्ञान, रचनात्मकता, आत्मबोध और सम्मान एवं व्यक्तित्व विकास आदि हैं। अर्थात मनुष्य जिसे सुख कहता है, वह मात्र कुछ आवश्यकताओं के संतोष का नाम है।

अधूरी जिंदगी

- श्री हरि गोविंद सिंह -

तख्त पर अंकुरित चनों से भरा प्लेट और गिलास में दूध रखे पत्नी मुस्कुरा रही थी। उनकी मुस्कान का रहस्य समझ पाता, उससे पहले ही घर के अंदर से निकलते बच्चों का शोर गूँजा कानों में 'चलो, चलो जल्दी, भागो, चिल्लाने दो उसे।'

पीछे पोती पारिजात हाथ पैर पटकती 'मैं भी.... मैं भी....' जिद कर रही थी।' 'अच्छी बच्ची! मेरी रानी बच्ची! अपनी गुड़िया ले लो, लॉली पाप ले लो। अंकल, बुआ को बाय बाय करो...', बहू स्नेह से उसे पुचकारने में लगी थी। फिर भी पारिजात कुछ मानने को तैयार न थी। उसकी जुबान पर सिर्फ एक ही रट 'मैं भी ...'

'पापा! आप इसे नहर तक घुमा दीजिए, शायद चुप हो जाए', कहती बहू पारिजात को मेरी गोद में थमा दिया। आगे-आगे यश भोला, राज, रिया भागे जा रहे थे। पीछे से मैं परिजात को लिए 'अंकल को बाय करो, बुआ को.... अच्छी बच्ची मेरी प्यारी बच्ची', पुचकार रहा था।

नहर का बहता पानी, चरती हुई गाय, भैंसें, उनके इर्द-गिर्द मंडराते सफेद बगुलों को देख तनिक शांत होती हाथ में थमी गुड़िया को गले से चिपका लिया।

चारों ओर से उमड़-घुमड़ कर चलती हवा और काले बादलों से लग रहा था, अब बरसात हुई। बच्चे स्कूल गए। रास्ते में ही बरसात हुई तो... मन में उपजते संशय से पैर अपने आप ही मुड़े और पहुँचते ही सामने खड़ी पत्नी बोली, 'देखा अपनी नन्हीं परी की जिद।'

पारिजात को उनकी गोद में थमाकर प्लेट से मुट्ठी में चना उठाकर मुँह तक ले गया। अचानक दिशा की याद आई। दिशा... कल्पना की बेटी। पारिजात से भी जिद्दी, जिसकी चर्चा अक्सर किया करती है कल्पना।

ऐसे ही काले घने बादल डरा रहे थे। जब छुट्टियाँ बिताकर भागता पहुँचा था आफीस, 'गुड मार्निंग'।

'मार्निंग' शब्द के साथ रिसेप्शन पर ठहरी आँखें। दुबली-पतली काया, गोरा रंग, हल्के काले बाल, प्रिंटेड सूट - जो मुझे बिलकुल पसंद नहीं आया। हाँ! उसकी चमकती आँखें जरूर अच्छी लगीं।

'कब ज्वाइन किया आपने?' पूछा मैंने।

'दो दिन पहले'

'कैसा लग रहा है?'

'ठीक है।'

'रजिस्टर दीजिए।'

'कौन सा?'

'एस.पी. का'

'थैंक्स' कहती रजिस्टर थमाई।

हस्ताक्षर करके अपने टेबल की ओर बढ़ गया और लोग या तो अपने काम में लग चुके थे या बैठ रहे थे। इसलिए किसी से कुछ पूछना-जानना उचित न समझकर 'हाई-हैलो' करता बैठ गया अपनी सीट पर।

लंच टाइम, कानाफूसी चालू थी, जैसा कि अक्सर हर आफीस में नए आदमी के आने पर होता है। लेकिन इस बार एक नई बात सामने थी कि कल्पना तलाकशुदा होने के साथ 3 साल के बच्चे की माँ भी है।

उफ! इतनी गंभीर समस्या? आदतन मेरे मन में सवालों के बादल घुमड़ने लगे। दृष्टि खिड़की के पार हुई तो झमाझम बरसात हो रही थी। लेकिन खींचतान का कीड़ा जिस इंसान में घुस जाता है, उसे चैन कहाँ। लंच के बाद हाथ-मुँह धोकर सीधे रिसेप्शन की ओर बढ़ गया। की-बोर्ड पर फिसलती कल्पना की उंगलियों में गजब की गति थी। मेरी आहट से चेहरा उठाया।

'आपका नाम कल्पना है?' संवाद का सिलसिला बनाना चाहा।

'जी, आपका क्षितिज?'

'जी हाँ'

'हस्ताक्षर के समय देखा आपका नाम। बड़ा प्यारा है।' इस बार तनिक मुस्कान थिरकी उसके अधरों पर। उसी दिन से जिज्ञासा का कीड़ा घुसा मन में तो निकलने का नाम ही न लिया। जब भी मौका मिलता, मतलब-बेमतलब वाली बातें करता उससे। अब वह भी खुलने लगी थी धीरे-धीरे। उसकी सबसे अच्छी आदत थी, किसी की भलाई बुराई से दूरी। सिर्फ अपने काम से काम, अपनी मस्ती से मस्त रहना। उसके होंठों पर थिरकती मुस्कान, उसकी बातें बहुत प्यारी लगतीं मुझे।

शनिवार का दिन टिफिन न लाने की वजह से खाना बाहर खाकर लौटा था। कल्पना अपनी सीट पर बैठी बेफर कुतर रही थी। मुझे सामने देखते ही बोली, 'लीजिए'।

'नहीं यार, मैं तो पेट भरकर लौटा हूँ।'

कल्पना चुपचाप बेफर खाने में लगी रही। मुझ से रहा न गया। कभी सब कुछ जानते-समझते हुए भी अनजान बनने की एक्टिंग करनी पड़ती है। उसकी आँखें थम गई मेरे चेहरे पर। क्षण भर बाद बोली, 'खुशहाल जिंदगी में जहर घोलना जरूरी है?'

'जहर से दवा भी तो बनती है।'

अब उसके चेहरे पर चिंता और आश्चर्य की लकीरें बनने-बिगड़ने लगीं, जिन्हें पढ़ने की कोशिश में लग गया मैं। कुछ पल मौन ही गुजरा। वह शायद किसी झंझावत से जूझ रही थी।

'अधूरी पेंटिंग को सुंदर रंग में पूरी नहीं की जा सकती', उसका ध्यान मोड़ने का प्रयास किया मैं ने।

'लेकिन वह पेंटर...'

'सुख बाँटने से बढ़ता है। दु:ख बाँटने से घटता है। इसलिए मुस्कुराना-हँसना, बातें करना मुझे तो गुनाह नहीं लगता।'

'लेकिन...', सिर्फ इतना ही निकला उसके मुँह से। चेहरे पर लज्जा और संकोच के भाव उभरते चले गए, जो हमारे उसके बीच अपनेपन का रिश्ता जोड़ गए।

दूर तक फैले समंदर और आकाश के मिलन पर ठहरी हुई थी आँखें। तभी मोबाइल घनघना उठी। स्क्रीन पर नजर पड़ते ही लिखा मिला 'कल्पना'।

'कैसे हो?'

'आप जैसी।'

'मतलब...?'

'साफ है, तलाशने की कोशिश तो कीजिए।'

'कहाँ?'

'जहाँ कोई कैद होता है', पल-पल शरारत बढ़ती जा रही थी उसकी बातों में ।

'फिर भी...।'

'दूर तक समंदर को घूरने से बेहतर होगा ब्रिज से नीचे देखना', आँख ब्रिज से नीचे पहुँची तो हवा में हाथ हिलाती बोली, 'देखा।'

'बहुत करीब।'

'इतना कि...'

'सच', मेरे कदमों में इतनी गति आ गई कि पल भर में उसके सामने था।

'यहाँ और...', पास पहुँचते ही पूछ बैठा।

'आपका दीदार लिखा या शायद' मुस्कराते हुए क्षण भर रुक कर बोली।

'किंतु आप...'

'वक्त का हर से गुलाम होता है।'

'अच्छे शायर भी बन सकते हैं आप।'

'शायरी करीब हो तो...'

'सच!' धीरे से उसने बात मोड़नेवाले अंदाज में पूछा, 'आप कब आये?'

'शायद जब तुम आई, लेकिन तुम...'

'आप हमेशा कहते, ब्लैक ब्लू जीन्स की पैंट और ग्रीन आरेंज कलर की शर्ट, खूब जचेगी। तो सोचा ले ही लूँ, आपको अच्छी तो लगूँगी।'

'इतना ख्याल...'

'हूँ... तो...', तनिक तुनक सी गयी इस बार।

'आओ, उधर बैठते हैं', कहते हुए उसकी अंगुलियाँ पकड़कर खींचा अपनी ओर। पल भर सकुचायी फिर बैठती हुई कनखियों से देखा पकड़े हुए हाथ को।

पल-पल बढ़ती भीड़, जगह-जगह बैठते लोग। हँसी-ठिठोली भरा वातावरण, जिसमें मैं और कल्पना पहली बार एक साथ थे। संकोच दोनों के चेहरे पर, जिसे दूर करने की कोशिश करता पूछा, 'अकेली...?'

'हूँ...', शायद वह भी अंदर ही अंदर लड़ रही थी अपने आप से।

'कुछ बताया नहीं?'

'और आप?'

'मैं क्या', हतप्रभ पूछा मैंने।

'हाथ तो पकड़ लिया...', उलाहना भरे तेवर थे इस बार कल्पना के।

'हाँ..., लेकिन...'

'बच्चे नहीं हो...' उच्छ्वास भरती न जाने किस लोक में समाती चली गयी।

मैं उसके चेहरे पर आते-जाते भावों को देख भर रहा था, जो किसी रहस्य से कम नहीं थे। एकाएक उसकी आँखें ठहर गयी मेरे चहरे पर, 'क्षितिज दूर तक फैले दरिया का पानी और... और उससे मिलता आकाश...।'

'हाँ!'

'लेकिन यह तो भ्रम ही है न?'

'तुम भी यार! कहाँ-कहाँ भटकने लगती हो।' उसका अभिप्राय समझकर उसे भावनाओं के झंझावात से बाहर करने का प्रयास किया, जिसमें वह फँसती ही जा रही थी।

'भ्रम को जानते-समझते हुए भी हम वास्तविक समझने की नादानी करते हैं। एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा उसने, जो असह्य वेदना का एहसास दिला रहे थे पल-पल गुजरती जिंदगी का।

मैंने धीरे से उसके हाथों को अपने हाथों में लेते हुए बोला, 'प्लीज यार! तुम...', इस बार वह न तो कसमसायी और ना ही हाथों को खींचने का प्रयास ही किया।

'गरमा गरम भुट्टे गरमा-गरमा...', भुट्टे बेचने वाला लड़का ठेला धकेलता आवाज करता आ रहा था, 'ले लो, ले लो, अभी नहीं लोगे तो मर जाने पर पछताओगे।'

'भुट्टे लाता हूँ', कहता मैं ठेले की ओर बढ़ा तो कुछ दिन पहले लंच पर कल्पना से हुई बात मस्तिष्क में उभरने लगी -

'शादी से एक साल बाद तक सब कुछ ठीक-ठाक रहा हमारे और पति के बीच। फिर धीरे-धीरे उनकी शराब पीने की लत बढ़ने लगी। रात को अक्सर देर से आते। मुँह से शराब की भभकी और गालियाँ ही निकलती। दिन भर ऑफिस की माथापच्ची, रात को उनकी बदतमीजी। घर में कुछ है या नहीं सिर्फ मेरी जिम्मेदारी। हाँ, उन्हें मेरे जिस्म की भूख जरूर होती।'

'जिल्लत भरा जीवन, आखिर कब तक...। धीरे-धीरे मैं भी विरोध पर उतर आई। हद तो तब हो गयी, जब दिशा पेट में आयी। दो-चार दिन लापता ही रहते। आने पर पूछती तो बताते, 'मम्मी के पास था।' पल पल टूटती रही मैं। फिर एक दिन थक-हार कर तलाक का ही फैसला कर लिया।'

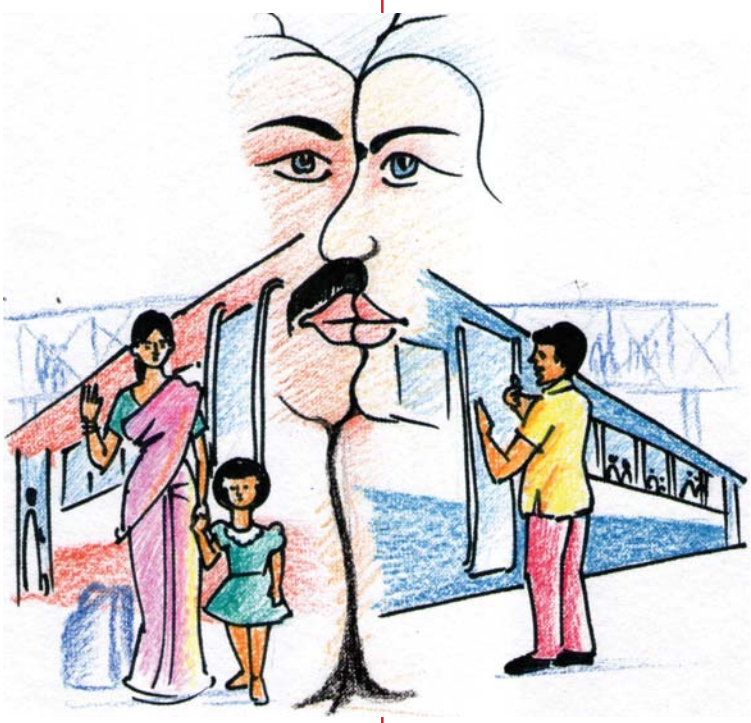

'तलाक के बाद जब मम्मी के साथ आयी तो पाँच-छ: महीने तक ठीक-ठाक रहा सब का व्यवहार। उसके बाद वहाँ भी कलह बढ़ने लगी। सच भी था उनका सोचना। लड़की की शादी करके माँ-बाप मुक्त होना चाहते हैं अपनी जिम्मेदारियों से, न कि फिर उनके पीछे मरते रहना। उसी बीच दिशा का जन्म हुआ। मेरी नौकरी भी छूटी। भाई-भाभी के ताने चले। फिर तो बचा केवल अपना साहस और मस्तिष्क। इसलिए मैंने अपना जीवन अलग ही जीने का फैसला कर लिया। नौकरी ढूँढ़ी। किराये पर घर लिया। सुबह ऑफिस जाते हुए दिशा को पालना घर में रखती, शाम को लौटते समय लेकर लौटती। ऐसे चल पड़ी एक नई राह।'

'दूरी न हो कोई, तुम इतना करीब आओ, मैं तुममें समा जाऊँ, तुम मुझमें समा जाओ।' पीछे से आती रेडियो की आवाज से मुड़ा। लगभग पैंसठ की उम्र, बढ़े हुए दाढ़ी-बाल। मटमैले पुराने कपड़े, गले में लटकता रेडियो। सभी नजरें उन्हीं की ओर घूमीं। लेकिन सबसे बेफिक्र महाशय चले जा रहे थे अपनी मस्ती में।

गीतकार की कलम कितनी सटीक चली है। यहाँ का परिवेश भी शत-प्रतिशत उसी लय में है। सोचता भुट्टे लेकर कल्पना के नजदीक पहुँचा तो वह भी उन्हीं को जाते देख रही थी।

'शायद उनकी माशूका...', मैंने कल्पना का ध्यान मोड़ने के अंदाज में कहा। 'बेवफा तो कोई भी हो सकता है।' कहती नजरें मेरे चेहरे पर जमाए क्षण भर रुककर सोचती सी बुदबुदाई,

'कोई बच्चा अपने बाप की गोद बैठता, मचलता, किसी चीज की जिद करता है, तो उसका बाप उसे चूमता, पुचकारता रंग-बिरंगे खिलौने और खाने-पीने की चीजें लाकर देता है और... मेरी दिशा...', अजब की टीस उभरी उसके एक-एक शब्द से। मुझ से न रहा गया तो मुँह से निकला, 'जब और बड़ी होगी तब...।'

'इसी उलझन में तो मैं भी उलझी रहती हूँ दिन-रात और जब कभी वह पूछती है - 'मम्मी, मुझे खिलौने लेकर कब लौटेंगे पापा? हमें लेकर घूमने तो चलेंगे न? तब... तब न जाने क्या-क्या झूठ पर झूठ बोलती समझाती हूँ उसे। वह तो किसी तरीके से सो जाती है, लेकिन मैं... मैं... बिस्तर पर पड़ी सारी रात अतीत के डंक से सिर्फ करवटें बदलती...।' उसकी आवाज सिसकियों में तब्दील हो जा रही थी, 'न जाने किस जन्म का पाप...।'

मैंने धीरे से उसके कंधे पर हाथ रखा तो उसने कंधे पर सिर टिका दिया। 'धीरज से काम लो, वक्त धीरे-धीरे सभी जख्मों को भर देता है', ढाढ़स बंधाता सहलाने लगा उसके माथे को।

'हमारे माथे पर उभरी दुर्भाग्य की लकीरें मिटाना चाहते हैं आप?'

'कोशिश तो कर...'

'कहाँ खो गए हो? अभी तक नाश्ता नहीं किया', पीछे से पत्नी की आवाज से टूटी मेरी तंद्रा।' चारों तरफ पानी ही पानी। 'हुँ..., हाँ..., हाँ...' मुँह से निकला। तब तक पत्नी सामने थी। 'मैं नहा-धोकर आ गई और अभी तक चना दूध जस का तस पड़ा है?'

'बस अभी...', मुट्ठी में चना उठाते हुए कहा।

'इतना पानी बरस गया और आप...', आश्चर्य पूरी तरह तैर रहा था उसकी आँखों में। 'हाँ..., इसी बरसात को तो देखता रहा। देखो, चारों ओर पानी ही पानी।' खुद को संयमित करता उसका ध्यान मोड़ने की कोशिश की।

'इसलिए बच्चों को सुबह स्कूल जाने से रोक रही थी। लेकिन मेरी किसी ने नहीं सुनी। अब कैसे आएँगे बच्चे? पता नहीं, कब तक चलती रहेगी जलवृष्टि?' वह अपनी धुन में बड़बड़ाई जा रही थी और मैं चना खतम करने पर तुला था।

पोती पारिजात चारों ओर भरे पानी को देखती खुशी से अंदर-बाहर आ-जा रही थी। पत्नी दुबारा अपने कामों में लग

चुकी थी। नाश्ता से निवटकर अकेला होते ही पुन: फँसता चला गया अतीत के अनसुलझे भँवर में। टैक्सी का बिल देते ही, 'ट्रेन लग गयी' का शोर गूँजने लगा कानों में। कल्पना दिशा की अंगुली थामे प्लेटफार्म की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगी। उसके चलने के अंदाज से ही लगा, वह बिल्कुल अकेली महसूस कर रही है खुद को। विधि का विधान... सहसा थमती सी लगीं मेरी साँसें। 'पिताजी बिस्तर पर न पड़े होते तो नौकरी छोड़कर घर आने की जिद न करती माँ।'

मेरे रिजाइन की खबर जब कल्पना तक पहुँची, तभी से उसकी हँसी-बोली न जाने कहाँ गुम होती चली गई। उसके होंठों से निकलते शब्द, 'कहाँ से आप और कहाँ से मैं? फिर भी इतने करीब हुए कि... और अब... फिर दगा दे दिया किस्मत ने।' मन स्वयं को धिक्कारने लगा उसके चेहरे से बुझती खुशी देखकर।

इंडिकेटर पर कोलकाता मेल लिखा हुआ था। मेरी आहट से पलटती बोली कल्पना, 'आपकी ट्रेन...।'

'हुँ...', निकला मुँह से और अंतर्मन भटकने लगा कल्पना के साथ बीते अंतरंग पलों पर। लोकल प्लेटफार्म पर डोंबिवली की ट्रेन आई। दिल 'धक्क' से कर उठा। बिछुड़ने की टीस पल-पल गहराती जा रही थी। फिर भी साहस जुटाकर बोला, 'तुम उसी ट्रेन से चली जाओ।'

'पहले आप अपने ट्रेन में बैठ जाइये। मेरे लिए तो यह न सही तो कोई और आएगी ही', मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा उसने और मैं सिर्फ देख भर रहा था उसकी आँखों में छलके आँसू, जो बाहर आने को उतावले थे। लेकिन उन्हें दबाने की पुरजोर कोशिश में थी कल्पना।

'नहीं, चलिए पहले आप को ट्रेन में बैठा दूँ फिर', मैंने स्पष्ट किया।

'अपनी बात पर अड़े रहना आपकी आदत बन गयी।'

'हमारी ट्रेन आधे घंटे बाद छूटेगी। तब तक...।'

'हुँ... मुझे डोंबिवली और आपको इलाहाबाद जाना है।' मेरे शब्दों को काटते हुए उलाहना दिया।

'तुम्हारे साथ नन्हीं सी जान है और मैं..., मैं अकेला..., बिल्कुल अकेला', कंपकंपाये रह गये मेरे होंठ।

क्षण भर के लिए थमी उसकी आँखें मेरे चहरे पर। सिर हिला, होंठ हिले। लेकिन थरथराकर रह गये। शब्द न निकले। 'चलो, चलो। आगे बढ़ो। गेट से हटो', का शोर गूँजने लगा। कल्पना का कदम उठा और दरवाजे में ही एक किनारे दिशा की अंगुली थामे रुकी। अब तक हाथ में लिये थैले को उसे थमाते हुए समझाया, 'दिशा के एक-दो कपड़े, कुछ साड़ियाँ, कंगन-चूड़ियाँ तुम्हारे लिए।'

'लेकिन...'

'कभी हमारी याद आये तो...'

'जाते-जाते बांधते...'

'पोंऽऽऽ... पोंऽऽऽ...', ट्रेन के हार्न से दबती चली गई कल्पना की आवाज। पल भर के लिए हरे हो चुके सिग्नल पर ठहरी आँखें और ट्रेन सरकी।

'क्षितिज...', निकला उसके रुँधे कंठ से। उसकी थरथराती अंगुलियाँ फिसलीं हमारी अंगुलियों के बीच से। एक तुड़ा-मुड़ा पुर्जा भर अटका, छूटते-छूटते न जाने कब की थमी आँसू की धार निकली आँखों से। और 'पोंऽऽऽ... पोंऽऽऽ' का शोर करती गति पकड़ती चली गई उसकी ट्रेन।

बेबस असहाय से मेरे कदम प्लेटफार्म सोलह की ओर बढ़ने लगे। गाड़ी प्लेटफार्म पर खड़ी ही थी। जल्दी चढ़ने की कोशिश में 'हटो जल्दी चढ़ो...' का शोर गूँज रहा था। सूटकेस, बैग घसीटता मैं भी पहुँचा एस-6 कोच तक। दायें-बायें करता अपनी सीट तक पहुँचा। सामान सीट के नीचे धकेल 'धम्म' से बैठा सीट पर।

'ट्रेन चल गई। गाड़ी छूट गई...' का शोर। घर जाने की खुशी हर चेहरे पर चमकने लगी। और मैं..., मैं... बुत-सा कभी हथेली में सिमटा पुर्जा तो कभी खिड़की से ओझल होती बस्ती को देखता। लेकिन कब तक? आखिर मन से मजबूर खोला तुड़े-मुड़े पुर्जे को तो आँखें ठहरी ही रहीं। 'आपकी यात्रा मंगलमय हो। घर पहुँचकर सपरिवार खुश रहें, यही मेरी कामना है। मेरा क्या? जैसे पहले वैसे ही अब। आपके करीब होते ही सुख की एक लकीर जरूर दिखी थी। वजह चाहे जो भी रही हो, लेकिन आप अपने हो गये थे। उसे मैं अपना क्षणिक सौभाग्य समझती हूँ। मेरा ही क्या दिशा को भी देखती तो मन खिल जाता। शायद आपमें वह अपने बाप को पा गयी थी। कभी-कभार इसे आपने भी महसूस किया होगा। मैंने कई बार आपके आने पर नोट किया। आपके लाये खिलौने, खाने-पीने की चीजें पाते ही चहकती-फुदकती। आपकी गोद में बैठती निहाल हो जाती थी दिशा। फिलहाल जो भी, जैसे भी हो एक रिश्ता तो बन ही गया था। भले बेनाम रहा। लेकिन विधाता को न सुहाया। हाँ, जाते-जाते जिस बंधन में बाँधा है आपने, उसे निभाने की कोशिश करूँगी। आपसे मिले प्यार, अपनत्व के सहारे अपनी 'अधूरी जिंदगी' पूरी पूरी जीने की कोशिश करूँगी। फिर कभी मुलाकात होगी या नहीं, नसीब पर है। हो सके तो अपनी कल्पना...।'

'बाबा...?' स्वर के साथ पीठ पर कोमल अंगुलियों का एहसास हुआ तो अतीत के भँवर से उभरा। नन्हीं परिजात आगे, पीछे पत्नी खड़ी थी।

- आवास: गौतमपुर
पत्रालय: बैनी (लंभुआ)
जनपद: सुलतानपुर-222302, उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 9967364592,
9867399376

महात्मा गांधी एवं आधी धोती का प्रण

- श्री पी के महापात्रा -

भारत में गौतम बुद्ध, महावीर जैन, शंकराचार्य , चैतन्य महाप्रभु जैसे कई महान् संत एवं सिद्ध पुरुष अवतरित हुए, जिन्होंने पूरे देश में पदयात्रा करके लोगों में आध्यात्मिक एवं सामाजिक आदर्शों का प्रचार-प्रसार किया। मोहनदास करमचंद गांधी भी ऐसे ही मनीषियों में से एक हैं। उन्होंने देश को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। देश के स्वतंत्रता संग्राम में उनके कड़े संघर्ष के बदौलत चर्चिल ने उन्हें 'Naked Fakir' और रवींद्रनाथ टैगोर ने 'महात्मा' (पुण्यात्मा) की उपाधि दी।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी ने कई बार पूरे भारत में पदयात्रा करके लोगों को संघर्ष हेतु प्रेरित किया। उनकी इस पदयात्रा से लोगों में देशप्रेम ही नहीं जगा, बल्कि अंग्रेजों के शासन के दौरान जनमानस में व्याप्त भय भी दूर हुआ। उन्हें एकता के सूत्र में पिरोया जा सका, जिससे लोगों में एक नया आत्मविश्वास पैदा हुआ।

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान गांधीजी ने **7** बार ओड़ीशा राज्य का भ्रमण किया तथा राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में पदयात्रा करके स्थानीय निवासियों में न सिर्फ अंग्रेजों के शासन के विरोध का अलख जगाया, बल्कि छुआछूत, नशीली दवाइयों का सेवन आदि जैसी सामाजिक कुरीतियों के प्रति उन्हें सचेत किया।

यद्यपि भारतीय राष्ट्रीय कांगेस की कार्यवाहियों में ओड़ीशा राज्य पहले से सक्रिय रूप से भाग ले रहा था, फिर भी **1920** से पूर्व कांग्रेस की कार्यसूची में ओड़ीशा राज्य की समस्याओं को प्राथमिकता नहीं दी गई। वर्ष **1885** से **1900** तक कांग्रेस के **6** सत्रों में ओड़ीशा से मात्र **14** प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इससे ओड़ीशा की जनता का कांग्रेस एवं राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति उदासीनता का भाव स्पष्ट होता है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जब ओड़ीशा राज्य की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर सका तो **1903** में मधुसूदन दास के नेतृत्व में उत्कल यूनियन कान्फरेंस का गठन किया गया। ओड़ीशा के महान रत्न गोपबंधु दास राज्य के प्रत्येक जिले में कांग्रेस समिति की बैठक आयोजित करने में सक्रियतापूर्वक कार्य कर रहे थे।

महात्मा गांधी जी के प्रस्तावित असहयोग आंदोलन का संदेश अखबार 'दि समाज' के माध्यम से प्रसारित किया गया। वैसे तो गोपबंधु दास के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन जोर पकड़ रहा था और परिणामस्वरूप राज्य में देशभक्ति की लहर ऐसे फूट पड़ी कि सरकार को सैकड़ों स्वतंत्रता सेनानियों को गिरफ्तार करना पड़ा। फिर भी गोपबंधु दास की इच्छा थी कि महात्मा गांधी जी ओड़ीशा राज्य में ब्रिटिश सरकार द्वारा उपेक्षित तटीय क्षेत्र का संदर्शन करें। उन्होंने कांग्रेस पार्टी के नागपुर में आयोजित सत्र के दौरान महात्मा गांधी जी से ओड़ीशा आने हेतु आग्रह किया। गांधीजी ने उन्हें आश्वासन दिया और अपने आश्वासन की पूर्ति हेतु वे **23.03.1921** को कटक आये। गांधी जी के सम्मान में कटक में एक जनसभा आयोजित की गई और इस सभा के माध्यम से गांधी जी का संदेश आम जनता तक पहुँचाया गया। कटक से पूरी जाते समय गांधी जी सत्यवादी के गूव स्कूल का संदर्शन भी किया। पूरी में गांधीजी महिलाओं की दयनीय स्थिति देख दु:खी हुए। वे पूरी से फिर मद्रास प्रेसिडेंसी के गंजाम जिले में स्थित बरहमपुर गये, जहाँ उड़िया भाषियों की संख्या बहुत थी।

गांधीजी ओड़ीशा राज्य की गरीबी एवं दयनीय स्थिति को देख विचलित हो उठे। फलस्वरूप उन्होंने बाद में भी कई बार ओड़ीशा का भ्रमण किया। **1925** में दूसरी बार जब ओड़ीशा में उनका आगमन हुआ, उन्होंने मधुबाबु द्वारा आयोजित उत्कल तानेरी का दौरा किया, जहाँ अस्पृश्य लोगों ने उनका स्वागत किया। **1927** में वे तीसरी बार ओड़ीशा आये और छुआछूत को समाप्त करने के लिए उन्होंने अस्पृश्य लोगों को मंदिरों में प्रवेश दिलाने हेतु संघर्ष किया तथा रघुनाथ मंदिर में उन्होंने अपने इस संघर्ष के समाधान में एक समझौता भी किया। तत्पश्चात **1934** में वे जब पाँचवीं बार ओड़ीशा आये तो उन्होंने हरिजन-उद्धार एवं छुआछूत के निर्मूलन को अपना प्रमुख उद्देश्य बनाया। हालाँकि यह आंदोलन पूरे देश में चलाया जा रहा था, लेकिन इस आंदोलन की शुरुआत ओड़ीशा की पवित्र भूमि पूरी से की गई। यह

> गांधीजी ओड़ीशा में गरीबी की स्थिति जानने के लिए आये थे। लेकिन बाद में वे अपने भाषण में ओड़ीशा को 'भारत में गरीबी का प्रतीक' के रूप में संबोधित किया। उन्होंने 'नवजीवन' समाचारपत्र में ओड़ीशा की पीड़ित महिलाओं के लिए उदारतापूर्वक तत्काल सहयोग की आवश्यकता पर लेख लिखा। गांधीजी से प्रेरित होकर ठाकर बापा ने **1920** में पूरी के बाढ़ग्रस्त इलाकों के राहत कार्य में सहयोग पहुँचाने हेतु गुजरात की जनता से **50,000/-** रुपये की राशि जुटाई। ओड़ीशा में राहत कार्य के संचालन हेतु दीनबंधु सी.एफ.एंड्रूज कुछ महीने वहीं रुक गये। जीवराणाजी कल्याणजी कोठारी ने ओड़ीशा के गरीबों की सेवा में अपना जीवन लगा दिया और उन्होंने भद्रक में एक आश्रम की स्थापना भी की।

आंदोलन दो उद्देश्यों को लेकर चला, पहला छुआछूत निर्मूलन एवं दूसरा हरिजन-उद्धार हेतु निधि का संग्रहण।

1930 में हुए द्वितीय गोल मेज कांफ्रेंस की असफलता एवं मैक डोनाल्ड को दिये गये कम्यूनल एवार्ड के विरोध में गांधी जी अनशन पर बैठ गये। यद्यपि पूरे भारत में सविनय अवज्ञा आंदोलन समाप्ति के कगार पर था, लेकिन ओड़ीशा में गांधीजी की पदयात्रा के कारण इस आंदोलन के चिह्न अभी भी शेष थे। मई, **1934** के दौरान गांधीजी की पदयात्रा पूरी-कटक मार्ग से आरंभ हुई। पदयात्रा में उनके साथ अमृतलाल ठाकुर, मीर बेह, सुशीला बहन, उमा बजाज, पद्मावती देवी, बालाजी गोविंदजी देसाई, दामोदर दास, काका केलकर, के बूटन, गोपबंधु चौधरी, रमादेवी, हरेकृष्ण, निलयनाथ दास, सुरेंद्र पटनायक और कई अन्य अनुभवी नेता शामिल थे। यह पदयात्रा भारत में एक नवीन प्रयोग ही नहीं, बल्कि गांधीजी के लिए भी एक अनोखा अनुभव था। गांधीजी अपने दौरे की अवधि में गोपबंधु सेवासदन के साथ हरिजन बोर्डिंग में रुके। उन्होंने पुरुषोत्तमपुर के ब्राह्मणों को संबोधित किया। सत्यभामापुर में पदयात्रियों के साथ भोजन के समय हरिजनों को भी आमंत्रित किया गया। बलियंता में गांधीजी ने सभी हिंदुओं एवं हरिजनों के लिए कुंजबिहारी मंदिर के द्वार खुलवा दिये।

तत्पश्चात पटना के अपने दौरे के बाद गांधीजी पुन: **21.05.1934** को ओड़ीशा लौटे और **7** जून, **1934** तक पदयात्रा की दूसरी पारी जारी रखी और इस बार उन्होंने भद्रक तक पदयात्रा की। गांधीजी का ओड़ीशा राज्य में आगमन और वहाँ उनकी पदयात्रा का ओड़ीशा राज्य के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। ओड़ीशा में गांधीजी के आगमन से राज्य के लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत हुई और वे देश के स्वतंत्रता संग्राम में पूरे जोश एवं उत्साह के साथ जुड़ गये। गांधीजी ओड़ीशा में गरीबी की स्थिति जानने के लिए आये थे। लेकिन बाद में वे अपने भाषण में ओड़ीशा को 'भारत में गरीबी का प्रतीक' के रूप में संबोधित किया। उन्होंने 'नवजीवन' समाचारपत्र में ओड़ीशा की पीड़ित महिलाओं के लिए उदारतापूर्वक तत्काल सहयोग की आवश्यकता पर लेख लिखा। गांधीजी से प्रेरित होकर ठाकर बापा ने **1920** में पूरी के बाढ़ग्रस्त इलाकों के राहत कार्य में सहयोग पहुँचाने हेतु गुजरात की जनता से **50,000/-** रुपये की राशि जुटाई। ओड़ीशा में राहत कार्य के संचालन हेतु दीनबंधु सी.एफ.एंड्रूज कुछ महीने वहीं रुक गये। जीवराणाजी कल्याणजी कोठारी ने ओड़ीशा के गरीबों की सेवा में अपना जीवन लगा दिया और उन्होंने भद्रक में एक आश्रम की स्थापना भी की। उनके कहने पर प्रसिद्ध अभियंता विश्वेश्वरैया भी ओड़ीशा आये और राज्य की इन समस्याओं के मूल कारणों को जानने हेतु ओड़ीशा के सभी क्षेत्रों का दौरा किया।

गांधीजी की पदयात्रा से ओड़ीशा के सामाजिक व राजनैतिक जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आया। कई खादी भंडारों की स्थापना हुई और ओड़ीशा को 'भारत के खादी भंडार' के रूप में जाना जाने लगा। ओड़ीशा के लोग भी गांधीजी के सिद्धांतों से अभिप्रेरित होकर आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास के पवित्र सिद्धांतों को समझ पाये। हरिजनों की स्थिति में सुधार आया। महिलाओं में जागरूकता आई। गांधीजी के मार्गदर्शन में रमादेवी, सरला देवी और मालती देवी ने ओड़ीशा की महिलाओं में जागरूकता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ओड़ीशा में गरीबी को देखकर गांधीजी बहुत दु:खी होकर यह शपथ लिया कि जब तक प्रत्येक ओड़ीशावासी को खाना और कपड़ा प्राप्त नहीं होता, तब तक वे पूरी धोती नहीं पहनेंगे।

ओड़ीशा में गांधीजी की पदयात्रा से पूरे राज्य के लोगों में जागरूकता आई और छुआछूत के निर्मूलन, हरिजन-उद्धार एवं महिलाओं की स्थिति में सुधार के साथ-साथ लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने में उनकी पदयात्रा का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो जीवन के महान सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में गांधीजी की पदयात्रा के योगदान को शब्दों में प्रकट करना संभव नहीं। ओड़ीशा राज्य आज भी महात्मा के प्रति कृतज्ञ और नतमस्तक है।

- महाप्रबंधक (विधि व प्रशासन)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9866150115

आओ भाषा सीखें

'आओ भाषा सीखें' शीर्षक के तहत 'स्वामी विवेकानंद' के जन्मदिन के संदर्भ में निम्नलिखित संवाद प्रस्तुत है। आशा है कि पाठक हमारे इस प्रयास से लाभान्वित होंगे।

अशोक : आदित्या! जानते हो, 12 जनवरी विशेष क्यों है?

అశోక్ : ఆదిత్యా! జాన్‌తే హెూ, 12 జనవరీ విశేష్ క్యోఁ హై?

అశోక్ : ఆదిత్యా! 12 జనవరి ప్రత్యేకత ఏమిటో తెలుసా?

అశోక : ఆదిత్యా! 12 జనవరి ప్రత్యేకత ఎమిటొ తెలుసా?

आदित्या : हाँ, जानता हूँ, उस दिन स्वामी विवेकानंद का जन्मदिन है।

ఆదిత్యా : హాఁ, జాన్‌తా హూఁ, ఉస్ దిన్ స్వామీ వివేకానంద్ కా జన్మదిన్ హై.

ఆదిత్య : ఆ.... తెలుసు, ఆ రోజు స్వామి వివేకానంద పుట్టినరోజు.

आदित्य : आ... तेलुसु, आ रोजु स्वामि विवेकानंद पुट्टिनरोजु।

अशोक : विवेकानंद का पूरा जीवन युवाओं के लिए प्रेरणास्पद है।

అశోక్ : వివేకానంద్ కా పూరా జీవన్ యువావోఁ కే లియే ప్రేరణాస్పద్ హై.

అశోక్ : వివేకానంద జీవితమంతా యువతకు స్ఫూర్తిదాయకం.

अशोक : विवेकानंद जीवितमंता युवतकु स्फूर्तिदायकम्।

आदित्या : हाँ, उनके आध्यात्मिक चिंतन के बारे में मैंने बहुत कुछ पढ़ा है।

ఆదిత్యా : హాఁ, ఉన్‌కే ఆధ్యాత్మిక్ చింతన్ కే బారే మేఁ మైఁనే బహుత్ కుఛ్ పఢా హై.

ఆదిత్య : అవును, ఆయన ఆధ్యాత్మిక చింతన గురించి నేను చాలా చదివాను.

आदित्य : अवुनु, आयन आध्यात्मिक चिंतन गुरिंचि नेनु चाला चदिवानु।

अशोक : वे मात्र दर्शन के ही सिद्धांत नहीं बताते थे, बल्कि लोगों का मनोरंजन भी करते थे।

అశోక్ : వే మాత్ర్ దర్శన్ కే హీ సిద్ధాంత్ నహీఁ బతాతే థే, బల్కి లోగోఁ కా మనోరంజన్ భీ కర్‌తే థే.

అశోక్ : ఆయన తత్వం బోధించడంతో బాటు ప్రజల మనస్సులను రంజింపజేసే వారు కూడా.

अशोक : आयन तत्वम् बोधिंचडम्तो बाटु प्रजल मनस्सुलनु रंजिंपजेसे वारु कूडा।

आदित्या : अच्छा, कोई घटना सुनाओ।

ఆదిత్యా : అచ్ఛా, కోయీ ఘటనా సునావో.

ఆదిత్య : అవునా, ఏదేని ఒక సంఘటన గురించి చెప్పు.

आदित्य : अवुना, एदेनि ओक संघटन गुरिंचि चेप्पु।

अशोक : एक बार वे जब विलायत से आये, तब अंग्रेजों जैसा भेष बनाकर आये।

అశోక్ : ఏక్ బార్ వే జబ్ విలాయత్ సే ఆయే, తబ్ అంగ్రేజోఁ జైసా భేష్ బనాకర్ ఆయే.

అశోక్ : ఒకసారి ఆయన విదేశాలనుండి వచ్చినప్పుడు ఇంగ్లీషువాళ్ళల్లా వేషం ధరించి వచ్చారు.

अशोक : ओकसारि आयन विदेशालनुंडि वच्चिनप्पुडु इंग्लीषुवाल्लल्ला वेषम् धरिंचि वच्चारु।

आदित्या : उसके बाद ...

ఆదిత్యా : ఉస్‌కే బాద్...

ఆదిత్య : ఆ తరువాత...

आदित्य : आ तरुवात ...

अशोक : और उन्होंने दीवार से कूदकर आश्रम में प्रवेश किया।

అశోక్ : ఔర్ ఉన్హోనే దీవార్ సే కూద్‌కర్ ఆశ్రమ్ మేఁ ప్రవేశ్ కియా.

అశోక్ : ఇంకా ఆయన గోడమీదనుంచి దూకి ఆశ్రమంలోకి ప్రవేశించారు.
अशोक : इंका आयन गोडमीदनुंचि दूकि आश्रमम्लोकि प्रवेशिंचारु।
आदित्या : तब क्या हुआ ...
ఆదిత్య : తబ్ క్యా హువా...
ఆదిత్య : అప్పుడేమైంది...
आदित्य : अप्पुडेमैंदि...
अशोक : पहले तो सब डर गये, लेकिन बाद में हिम्मत करके उन्हें घेर लिया।
అశోక్ : పహ్లే తో సబ్ డర్ గయే, లేకిన్ బాద్ మేఁ హిమ్మత్ కర్‌కే ఉన్హేఁ ఘేర్ లియా.
అశోక్ : మొదట అందరూ భయపడిపోయారు, కాని తరువాత ధైర్యం చేసి ఆయన్ని చుట్టుముట్టేసారు.
अशोक : मोदट अंदरू भयपडिपोयारु, कानि तरुवात धैर्यम् चेसि आयन्नि चुट्टुमुट्टेसारु।
आदित्या : अच्छा...
ఆదిత్య : అచ్ఛా...
ఆదిత్య : అవునా...
आदित्य : अवुना...
अशोक : जब उन्हें पता चला तो स्वामी जी से दीवार से कूदकर आने का कारण पूछा।
अशोक् : जब् उन्हेंఁ पता चला तो स्वामी जी से दीवार् से कूद्कर् आने का कारण् पूछा.
అశోక్ : విషయం తెలిసాక వాళ్ళు స్వామీజీని గోడ దూకి రావడం గురించి కారణమడిగారు.
अशोक : विषयम् तेलिसाक वाल्लु स्वामीजीनि गोड दूकि रावडम् गुरिंचि कारणमडिगारु।
आदित्या : तो स्वामी जी ने क्या कहा?
ఆదిత్య : తో స్వామీ జీ నే క్యా కహా?
ఆదిత్య : అయితే స్వామీజీ ఏమన్నారు?
आदित्य : अइते स्वामीजी एमन्नारु?
अशोक : उन्होंने कहा कि 'मुझे बहुत भूख लगी है। कहीं खाना खत्म न हो जाय, इसलिए दीवार से कूदकर आया।' इसपर सब लोग हँसने लगे।
अशोक् : उन्होंనే కహా కి 'ముఝే బహుత్ భూఖ్ లగీ హై. కహీఁ ఖానా ఖత్మ్ న హో జాయ్, ఇస్‌లియే దీవార్ సే కూద్‌కర్ ఆయా.' ఇస్‌పర్ సబ్ లోగ్ హఁస్‌నే లగే.
అశోక్ : ఆయన 'నాకు చాలా ఆకలిగా ఉంది. అన్నమైపోతుందేమోనని గోడదూకి వచ్చాను' అని అన్నారు. అది విని అందరూ నవ్వేసారు.
अशोक : आयन 'नाकु चाला आकलिगा उंदि। अन्नमैपोतुंदेमोननि गोडदूकि वच्चानु' अनि अन्नारु। अदि विनि अंदरू नव्वेसारु।
आदित्या : उन्होंने कहीं लिखा है कि 'लहरें मेरे आदर्श हैं। क्योंकि वे उठकर गिरती नहीं, बल्कि गिरकर फिर उठती हैं।'
ఆదిత్య : ఉన్హోంనే కహీఁ లిఖా హై కి 'లహరేఁ మేరే ఆదర్శ్ హైఁ. క్యోంకి వే ఉఠ్‌కర్ గిర్‌తీ నహీఁ, బల్కి గిర్‌కర్ ఫిర్ ఉఠ్‌తీ హైఁ.'
ఆదిత్య : ఆయన ఒకచోట 'కెరటం నాకు ఆదర్శం, లేచిపడుతున్నందుకు కాదు, పడి లేస్తున్నందుకు', అని రాసారు.
आदित्य : आयन ओकचोट 'केरटम् नाकु आदर्शम्, लेचिपडुतुन्नंदुकु कादु, पडि लेस्तुन्नंदुकु', अनि रासारु।
अशोक : मैंने कहीं पढ़ा है कि बचपन से वे सबसे एक ही सवाल किया करते थे कि 'भगवान को किसी ने देखा है क्या?'
अशोक् : मैंనే కహీఁ పఢా హై కి బచ్‌పన్ సే వే సబ్‌సే ఏక్ హీ సవాల్ కియా కర్‌తే థే కి 'భగ్‌వాన్ కో కిసీనే దేఖా హై క్యా?'
అశోక్ : నేను చిన్నప్పటినుంచి ఆయన అందరినీ 'భగవంతుని ఎవరైనా చూసారా' అని ప్రశ్నించేవారని, చదివాను.
अशोक : नेनु चिन्नप्पटिनुंचि आयन अंदरिनी 'भगवंतुनि एवरैना चूसारा' अनि प्रश्निंचेवारनि चदिवानु।
आदित्या : तो उनके सवाल का जवाब मिला?
ఆదిత్య : తో ఉన్‌కే సవాల్ కా జవాబ్ మిలా?

ఆదిత్య : అయితే ఆయన ప్రశ్నకి సమాధానం దొరికిందా?
आदित्य : अइते आयन प्रश्नकि समाधानम् दोरिकिंदा?
अशोक : हाँ... जब वे रामकृष्ण परमहंस जी से मिले, तो उनकी यह जिज्ञासा शांत हुई।
అశోక్ : హాఁ... జబ్ వే రామకృష్ణ పరమహంస్ జీ సే మిలే, తో ఉన్‌కీ యహ్ జిజ్ఞాసా శాంత్ హుయీ.
అశోక్ : ఆ.... ఆయన రామకృష్ణ పరమహంసని కలిసినప్పుడు ఆయన ఈ కోరిక తీరింది.
అశోక : ఆ... ఆయన రామకృష్ణ పరమహంసని కలిసినప్పుడు ఆయన ఈ కోరిక తీరింది।
आदित्या : रामकृष्ण परमहंस जी ने कहा 'हाँ जैसे तुम्हें देख रहा हूँ। वैसे ही भगवान को भी देख रहा हूँ।'
ఆదిత్యా : రామకృష్ణ పరమహంస్ జీ నే కహా, 'హాఁ జైసే తుమ్హేఁ దేఖ్ రహా హూఁ. వైసే హీ భగ్‌వాన్ కో భీ దేఖ్ రహా హూఁ.'
ఆదిత్య : రామకృష్ణ పరమహంస 'ఆ... చూసాను, నిన్ను చూస్తున్నట్టే భగవంతుని కూడా చూస్తున్నాను' అని అన్నారట.
आदित्य : रामकृष्ण परमहंस 'आ... चूसानु, निन्नु चूस्तुन्नट्टे भगवंतुनि कूडा चूस्तुन्नानु' अनि अन्नारट।
अशोक : और तब से स्वामी जी उनके शिष्य बन गये।
అశోక్ : ఔర్ తబ్ సే స్వామీ జీ ఉన్‌కే శిష్య్ బన్ గయే.
అశోక్ : ఇంక అప్పటినుంచి స్వామీజీ ఆయన శిష్యులైపోయారు.
अशोक : इंक अप्पटिनुंचि स्वामीजी आयन शिष्युलैपोयारु।
आदित्या : और अपने गुरु के दिखाये हुए मार्ग पर चलते हुए उन्होंने बहुत से युवाओं को जीवन का सही मार्ग दिखाया।
ఆదిత్యా : ఔర్ అప్‌నే గురూ కే దిఖాయే హుయే మార్గ్ పర్ చల్‌తే హుయే ఉన్హోఁనే బహుత్ సే యువావోఁ కో జీవన్ కా సహీ మార్గ్ దిఖాయా.
ఆదిత్య : ఇంకా తన గురువుగారు చూపించిన మార్గాన్ని అనుసరిస్తూ ఆయన చాలామంది యువకులకు మార్గదర్శకులయ్యారు.
आदित्य : इंका तन गुरुवुगारु चूपिंचिन मार्गान्नि अनुसरिस्तू आयन चालामंदि युवकुलकु मार्गदर्शकुलय्यारु।
अशोक : आज स्वामी जी के नाम पर बहुत से लोककल्याणकारी ट्रस्ट और संस्थाएँ हैं।
అశోక్ : ఆజ్ స్వామీ జీ కే నామ్ పర్ బహుత్ సే లోక్‌కళ్యాణ్‌కారీ ట్రస్ట్ ఔర్ సంస్థాయేఁ హైఁ.
అశోక్ : ఇప్పుడు స్వామీజీ పేరుమీద చాలా ప్రజాసంక్షేమ ట్రస్టులు మరియు సంస్థలు పనిచేస్తున్నాయి.
అశోక : ఇప్పుడు స్వామీజీ పేరుమీద చాలా లోకసంక్షేమ ట్రస్టులు మరియు సంస్థలు పనిచేస్తున్నాయి।
आदित्या : जो उनके जन्मदिन पर बहुत से कार्यक्रम आयोजित करते हैं।
ఆదిత్యా : జో ఉన్‌కే జన్మదిన్ పర్ బహుత్ సే కార్యక్రమ్ ఆయోజిత్ కరతే హైఁ.
ఆదిత్య : ఆ సంస్థలు ఆయన పుట్టినరోజు సందర్భంగా చాలా కార్యక్రమాలు నిర్వహిస్తాయి.
आदित्य : आ संस्थलु आयन पुट्टिनरोजु संदर्भंगा चाला कार्यक्रमालु निर्वहिस्तायि।
अशोक : अच्छा यह बताओ, हम लोग क्या करेंगे?
అశోక్ : అచ్ఛా యహ్ బతావో, హమ్ లోగ్ క్యా కరేంగే?
అశోక్ : సరే మనమేం చేద్దాం చెప్పు.
अशोक : सरे मनमेम् चेद्दाम् चेप्पु।
आदित्या : चलो हम भी अपने विद्यालय में विवेकानंद की जयंती मनायें और उनके आदर्शों को प्रसारित करें।
ఆదిత్యా : చలో హమ్ భీ అప్‌నే విద్యాలయ్ మేఁ వివేకానంద్ కీ జయంతీ మనాయేఁ ఔర్ ఉన్‌కే ఆదర్శోఁ కో ప్రసారిత్ కరేఁ.
ఆదిత్య : పద, మనం కూడా మన విద్యాలయంలో వివేకానంద జయంతి జరుపుకుందాం, ఇంకా వారి ఆదర్శాలను చాటి చెబ్దాం.
आदित्य : मनम् कूडा मन विद्यालयम्लो विवेकानंद जयंति जरुपुकुंदाम्, इंका वारि आदर्शालनु चाटि चेब्दाम्।
अशोक : तुम सही कह रहे हो। उस महान व्यक्तित्व के प्रति यही हमारा सम्मान होगा।
అశోక్ : తుమ్ సహీ కహ్ రహే హో. ఉస్ మహాన్ వ్యక్తిత్వ్ కే ప్రతి యహీ హమారా సమ్మాన్ హోగా.
అశోక్ : నిజమే. ఆ మహామనీషికి ఈవిధంగా నివాళులర్పిద్దాం.
अशोक : निजमे। आ महामनीषिकि ईविधंगा निवालुलर्पिद्दाम्।

- प्रबंधक (राजभाषा)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
मोबाइल: +91 9866321109

विशेष कार्य-कलाप

अपेक्षापूर्ण वर्ष 2016 - श्री पो मधुसूदन

1 जनवरी, 2016 को अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने उक्कुनगरम में संगठन के वरिष्ठ प्राधिकारियों व श्रमिक संघों के प्रतिनिधियों को संबोधित किया। 2015 में उन्होंने प्रचालन, परियोजना एवं आधुनिकीकरण क्षेत्रों की विभिन्न उपलब्धियों के लिए कर्मचारी समूह, स्टील एक्जेक्यूटिव असोसिएशन, विभिन्न श्रमिक संघों, विप्स के प्रतिनिधियों को बधाई दी।

गणतंत्र दिवस समारोह

26 जनवरी, 2016 को गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने ध्वजारोहण करके केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों, होमगार्डों, स्कूली बच्चों की सलामी गारद स्वीकार की। कार्यक्रम में सभी निदेशकगण, विस्टील महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती गौरी अन्नपूर्णा, सी आई एस एफ के वरिष्ठ कमांडेंट श्री जॉकब किस्पोटा, कार्यपालक निदेशकगण, महाप्रबंधकगण, स्टील एक्जेक्यूटिव असोसिएशन, श्रमिक संघ, अनुसूचित जाति व जनजाति संघ, विप्स के प्रतिनिधि तथा बड़ी संख्या में कर्मचारी उपस्थित थे।

आर आई एन एल गठन दिवस का आयोजन

18 फरवरी, 2016 को आर आई एन एल गठन दिवस के अवसर पर अध्यक्ष- सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने ध्वजारोहण करके 'बाइसाइकिल रैली' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर बृहद पौधरोपण, चिकित्सा शिविर एवं मैत्रीपूर्ण क्रिकेट मैच आदि का आयोजन किया गया। शाम को आयोजित समारोह में श्री पो मधुसूदन ने कर्मचारी समूह को संबोधित किया। कार्यक्रम में उत्कृष्ट निष्पादन हेतु 72 कर्मचारियों को जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वृद्धाश्रम में 'सूर्या'-सोलार परियोजना का उद्घाटन

संगठन की निगमित सामाजिक दायित्व गतिविधियों के अधीन अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने 15 मार्च, 2016 को विशाखपट्टणम के सेंट जोसफ वृद्धाश्रम में 'सूर्या परियोजना: सोलर लाइटिंग सिस्टम व रेनोवेशन वर्क' का उद्घाटन किया। निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद ने कहा कि संगठन की निगमित सामाजिक दायित्व गतिविधियों द्वारा गरीबों के जीवन-स्तर में सुधार लाने हेतु आगे भी ऐसे प्रयास जारी रखे जायेंगे।

इस्पात सचिव महोदया का आगमन

31 मार्च, 2016 को इस्पात सचिव महोदया सुश्री अरुणा सुंदरराजन ने संयंत्र में अपने भ्रमण के दौरान इस्पात गलन शाला-1 के आधुनिकीकृत कन्वर्टर-ए का उद्घाटन किया। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो मधुसूदन ने इस्पात सचिव महोदया को संयंत्र में स्थापित प्रौद्योगिकी विशेषताओं का विवरण दिया। कार्यक्रम में सभी निदेशकगण उपस्थित थे।

अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

इस्पात मंत्रालय के तत्वावधान में 16-17 मार्च, 2016 को 'मेक इन इंडिया अभियान में इस्पात उद्योगों की भूमिका' पर दो-दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई। निदेशक (कार्मिक) एवं मुख्य अतिथि डॉ जी वी एस प्रसाद ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए यह अपेक्षा की कि प्रतिभागियों द्वारा सार्थक चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से संगोष्ठी के विषय पर ठोस निष्कर्ष निकाले जायें, ताकि जिन्हें अमल में लाकर देश का संरचनात्मक विकास किया जा सके। उन्होंने प्रतिभागियों के आलेखों से संकलित संगोष्ठी विशेषांक 'निर्माण' का विमोचन भी किया। कार्यक्रम के विशेष अतिथि एवं इस्पात मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री शैलेश कुमार सिंह ने कहा कि 'इस कार्यक्रम से 'मेक इन इंडिया' विषय पर विचार-विमर्श तो होगा ही, साथ ही हिंदी कार्यान्वयन को भी बल मिलेगा। कार्यक्रम में उपस्थित कार्यपालक निदेशक (निगमित सेवा) श्री आर पी श्रीवास्तव ने संगोष्ठी में देश के विभिन्न संगठनों की प्रतिभागिता के प्रति हर्ष व्यक्त किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के अलावा इस्पात मंत्रालय, सेल, मॉयल, एन एम डी सी, एफ एस एन एल, आंध्रा बैंक के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया।

तत्पश्चात आयोजित विभिन्न सत्रों में प्रतिभागियों ने संगोष्ठी के विषय पर अपने-अपने प्रस्तुतीकरण दिये। कार्यपालक निदेशक (विपणन) श्री पी एस गुप्ता, महाप्रबंधक (वॉयर रॉड मिल) श्री के के घोष, महाप्रबंधक (धमनभट्ठी) श्री एस मोदी, उप महाप्रबंधक डॉ ए श्याम सुंदर एवं उप महाप्रबंधक (प्रचालन) श्री ए के सिंह ने सत्रों में प्रस्तुत विचारों की समीक्षा की। 17 मार्च, 2016 को सभी प्रतिभागियों के लिए '300 मिलियन टन इस्पात की भावी क्षमता की प्राप्ति की चुनौतियाँ एवं अवसर', 'मेक इन इंडिया अभियान से इस्पात उद्योग को प्रत्यक्ष व परोक्ष लाभ' एवं 'आयातित इस्पात पर निर्भरता को कम करने के उपाय' जैसे तीन उप-विषय दिये गये, जिनपर चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से ठोस निष्कर्ष निकाले गये। समापन समारोह के मुख्य अतिथि एवं कार्यपालक निदेशक (संकर्म) श्री पी के रथ ने इनकी समीक्षा करते हुए वी एस पी में विस्तारण के फलस्वरूप स्थापित तकनीक एवं भावी योजनाओं का विवरण दिया। तत्पश्चात संगोष्ठी विशेषांक 'निर्माण' में प्रकाशित आलेखों के लिए प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती जी रमादेवी के आभार निवेदन से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

जरा गौर करें

हिमाचल प्रदेश के एक गाँव में **27** अगस्त **1972** के दिन एक बच्चे ने जन्म लिया। माँ-बाप इस बालक का नाम बड़े ही प्यार से दलीप सिंह राणा रखा। पहले तो इस बच्चे के शरीर में बेतहाशा बढ़ोत्तरी होने लगी तो लोगों ने समझा कि वह अपने दादाजी की कदकाठी पा रहा था, क्योंकि उसके दादाजी भी विशालकाय कदकाठी के थे। बाद में पता चला कि यह बच्चा एग्रोमेगली नामक बीमारी से ग्रसित है। इस बीमारी के कारण दलीप सिंह राणा के चेहरे में भी कुछ परिवर्तन सा आ गया।

धीरे-धीरे दलीप सिंह राणा को असामान्य नवयुवक की तरह देखा जाने लगा। खुद दलीप सिंह राणा को भी अपने कदकाठी पर शर्म आने लगी। दलीप सिंह राणा को अब अपने जीविकोपार्जन की चिंता भी सताने लगी। लेकिन विशालकाय कदकाठी वाले इस युवक के पास न शिक्षा थी, न ही कोई और हुनर। इसलिए वह पहाड़ी क्षेत्र में आसानी से मिलने वाले पत्थर तोड़ने के काम में लग गया। वह खूब मन लगाकर पत्थर तोड़ता और अपने शरीर को मजबूत बनाए रखने की कोशिशें करता था।

बाद में दलीप सिंह राणा ने कुछ लोगों के सुझाव पर कुश्ती लड़ने का निश्चय किया। फिर क्या था? दलीप सिंह राणा की लाटरी खुल गई। कुछेक के लिए **63** इंच का उनका सीना आश्चर्य है, तो कुछ के लिए उनका शाकाहारी होना ताज्जुब की बात है। कोई उनकी **7** फुट **1** इंच की लंबाई से दंग है तो कोई **157** किलोग्राम के उनके वजन से अचंभित है। पहलवानी के माध्यम से वे पंजाब पुलिस में गए। फिर वहाँ से निकल कर वे अंतर्राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. में भाग लेने लगे। डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. में उन्होंने ऐसा कारनामा दिखाया कि दुनिया दंग रह गई और ताकत की दुनिया में उनका कोई सानी नहीं रहा। उन्होंने हॉलीवुड की फिल्मों में भी काम किया है।

दलीप सिंह राणा कोई और नहीं बल्कि 'दि ग्रेट खली' हैं, जो भारत में खली के नाम से मशहूर हैं।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
RASHTRIYA ISPAT NIGAM LIMITED
VIZAG STEEL
Pride of Steel